प्रस्तावना

श्रीयुत गणेशनारायणजी सोमानी उन सज्जनों में से हैं जो देशी रियासतों में रहते हुए भी बाहरी दुनियां की चहल पहल में दिलचस्पी लेते रहते हैं। आपका उत्साह अदम्य है। आपने यूरुप की यात्रा उन लोगों की तरह नहीं की जो केवल सैर सपाटे के लिये जाते हैं। जहां आप गये आप आंखें खोलकर चले। प्रत्येक वस्तु का तत्वतः निरीक्षण किया उसही निरीक्षण का फलस्वरूप यह पुस्तक है।

जो लोग यूरुप नहीं गये, उनको इस पुस्तक में काफी मसाला मिलेगा। पुस्तक में मारवाड़ी महाविरों एवं शब्दों का काफी प्रयोग किया गया है, इसलिये मारवाड़ी पाठकों को पुस्तक विशेष रुचिकर होगी। सोमानीजी को हार्दिक बधाई है।

घनश्यामदास विड़ला

मेरी यूरुप की यात्रा

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

प्रस्थान

द्वितीय अध्याय

जहाज़

तृतीय अध्याय

यूरुप का प्रथम दर्शन

चतुर्थ अध्याय

लन्दन पहुंचना

पंचम अध्याय

ग्रेट ब्रिटेन की सैर

छठवां अध्याय

लन्दन परिचय

सप्तम अध्याय

मध्यम यूरुप

प्राक्कथन

हजारों भारतवासी यूरुप की यात्रा करते हैं वैसे ही मैंने भी की, इसमें कोई नई बात नहीं। और सैकड़ों ने ही उस पर पुस्तकें भी लिखी हैं, परन्तु राजपूताने का रहने वाला और इस अनुभव व अवस्था का माहेश्वरीय जाति का वैश्य प्रथम मैं ही हूं जो केवल यात्रा करने के ही अभिप्राय से गया। अतः जो मेरे अनुभव हैं वह अपने ढंग के निराले ही हैं। सब से विचित्र बात तो यह है कि मैं जैसा यहां अपनी प्रिय जन्मभूमि में रहन, सहन, पहनाव, खान, पान रखता हूं ठीक वैसे ही सब जगह मैंने यात्रा में आद्योपान्त रक्खा। मेरी यात्रा का वर्णन पुस्तक-रूप में लिखने का अभिप्राय यह है कि खान, पान, रहन, सहन की रुकावट यात्रा एवं देशाटन करने में कल्पना मात्र है। सच्चे भारतवासियों की तरह यात्रा करने में अनुभव भी अधिक होता है तथा जिन विदेशों में यात्रा की जावे वहां के निवासी आदर और मानकी दृष्टि से भी देखते हैं। खाद्या-खाद्य वस्तु का विचार रखने से न केवल व्यय ही कम होता है किन्तु आरोग्यता भी रहती है। सब ही यूरुप वाले भारत-वासियों से प्रेम विशेष तो अवश्य रखते हैं, परन्तु क्योंकि उनके यूरोपियन फ़ैशन में भारतवासियों के समान रंग-रूप वाले और भी देशों के मनुष्य यात्रा में होते हैं इसलिये वे चलाकर भारतवासियों से परिचय निकालने की चेष्टा नहीं करते।

दूसरा लक्ष्य मेरा यह था कि सब श्रेणी के मनुष्यों में प्रवेश पाकर उनका व उनके राष्ट्र व राज्य के सत्व का अनुमान कर सकूं:—

मैंने जो प्राथनापत्र यात्रार्थ छुट्टी के लिये दिया था इसमें भी यही निवेदन किया था कि To get more experience of the world and thus equip myself with increased knowledge for better service to the Darbar, I wish to make tour in the foreign countries. कि मुझको संसार का अधिक अनुभव हो, मेरे ज्ञान की वृद्धि हो कि जिससे मैं दरबार की सेवा और भी अच्छे प्रकार कर सकूं, मैं भारतवर्ष के बाहर इतर देशों में दौरा करना चाहता हूं।

पूज्य श्रद्धेय सिद्धनीतिज्ञ सर प्रभाशंकरजी पत्तनी, प्रेसीडेन्ट भावानगर कौंसिल व पूर्व मेम्बर भारत-सचिव की कौंसिल व मेम्बर राउन्डटेबिल कान्फ्रेन्सेज़ व इस साल जिनके भारतवर्ष की ओर से लीग आफ नेशन्स में प्रधान रूप से प्रतिनिधि होकर जाने की संभावना है, को जब मैंने पत्र यूरुप जाने के आशय का लिखा तो उन्होंने इस प्रकार उत्तर दिया:—

"I am glad you are going to Europe to see the foreign countries and to profit, as you say, by what you see there. There is much to see, but whether you will receive satisfaction or not is another matter..............People in those countries are so busy with their things that while they receive you with joy, they have hardly time to go about and show you—the real life of the people and the machinery of their Government—"

मुझको यह जानकर हर्ष है कि आप यूरुप की विलायतों को देखने और जो देखा उससे लाभ उठाने जाते हो और वहां देखने की बहुत कुछ बातें हैं, परन्तु आपको कहांतक संतोष होगा मैं नहीं कह सकता.........उन देशों के मनुष्य अपने २ कार्यों में इतने व्यग्र रहते हैं कि यद्यपि वे आपका स्वागत तो सहर्ष करेंगे परन्तु उनके पास इतना समय नहीं है कि वे आपके साथ जाकर, जैसा आप चाहते हो, अपने २ देश के मनुष्यों के जीवन को अथवा अपने गवर्नमेन्ट की मेशीनरी (शासनप्रणाली) को बतलावें।

मिस्टर ई. एफ. हैरिस भूतपूर्व प्रिंसिपल गवर्नमेन्ट कालेज अजमेर, जिनका मैं शिष्य हूं उन्होंने जब मैं यूरुप का कुछ भाग देख चुका था और ग्रेटब्रिटेन में घूम रहा था तो अपने पत्र तारीख ८ अगस्त सन् १९३२ के एक पैरे में यों लिखा है:—

"I am very glad that you have enjoyed your travel and intercourse with people in these islands so thoroughly. Having moved about, as evidently you have done, with an observant eye, an open mind and above all a generous heart, you will take back impressions and experiences that will be of abiding interest and pleasure to you. Your tour on the continent will be no less profitable and pleasant and hope you will enjoy it even more."

मुझको बड़ा हर्ष है कि आपने इन द्वीपों के मनुष्यों के साथ सहवास और समागम का लाभ उठा कर पूर्णरूप से आनन्द पाया है। निश्चय ही आपने जो दौरा किया है वह वास्तविक में एक निरीक्षक की दृष्टि, खुले मन और उदारहृदय से किया है। इस

दौरे से आप ऐसे प्रभावों और अनुभवों से वापिस जावेंगे कि जो आपको सदैव के लिये हितकारी और सुखकारी होंगे। मध्य यूरुप में भी आपका दौरा कुछ कम लाभकारी न होगा, मुझे आशा है वहां के दौरे से आप और भी अधिक हर्षित होंगे।

श्रद्धेय पूज्यपाद पुरोहित सर गोपीनाथजी एम. ए.; नाइट., सी. आई. ई., भूतपूर्व सीनियर मेम्बर कौंसिल आफ स्टेट जयपुर, जिनका वात्सल्य मेरे ऊपर मेरी बाल्यावस्था ही से है, कृपाकर प्रकाशन से पहिले ही इस पुस्तक की लिपि को पढ़ कर लिखते हैं कि "पुस्तक आद्योपान्त पढ़कर धन्यवादपूर्वक वापिस भेजी जाती है। पुस्तक मनोहर और उपयोगी है"।

भारतमाता के सच्चे रत्न व व्यापारिकमण्डलों के पूर्वाध्यक्ष व्यापारकेसरी, मित्रवर श्रीमान् सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला मुख्यतः जिनके परिचय देनेवाले पत्रों के द्वारा मैंने यूरुप भ्रमण सुविधा से किया और जिनके लिये मैं उनका आभारी हूं अथवा जिन्होंने ही कृपा करके पुस्तक की लिपि को प्रकाशन से पहिले पढ़कर इसकी प्रस्तावना लिखी है, उसमें मेरे प्रति लिखा है कि "जहां मैं गया आंख खोलकर चला और प्रत्येक वस्तु का तत्वतः निरीक्षण किया। उसी निरीक्षण का फलस्वरूप यह पुस्तक है।"

बस इन भारत के नररत्नों की ऐसी समालोचनाओं के सामने और कुछ अपनी लेखनी से लिखना मियां मिट्ठू बनना है। पाठकगण मेरे यात्रा करने के अभिप्राय व लक्ष्य को समझ गये होंगे और मैं इसमें कितना कृतकार्य हूं पाठक अपने आप इस पुस्तक को पढ़ने से जान लेवेंगे। संक्षिप्तरूप से मेरा यह अनुभव इस प्रकार है कि वर्तमान का यूरुप, जिसका क्षेत्रफल चालीस लाख वर्गमील है और जिसकी जनसंख्या चालीस

करोड़ मनुष्यों की है, वर्तमान भारतवर्ष के क्षेत्रफल से लगभग दुगना और जनसंख्या में सवाया है और यदि देश रूस को टाल दिया जावे तो भारतवर्ष से हर तरह छोटा होता है फिर भी वह कंटीनेन्ट महाद्वीप कहलाता है और भारतवर्ष एशिया का एक भाग ही है। यद्यपि यूरुप के नाम से कोई महासागर नहीं है और भारतवर्ष के नाम से हिन्द-महासागर बहुत प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध है।

यह महाद्वीप दो दरजन राज्यों से अधिक राज्यों में विभक्त है। इनमें से आधों से अधिक के मुख्य नगरों में मैं गया। यों तो हर देश में कुछ न कुछ भेद होता ही है परन्तु खान, पान, पहनाव और रहन सहन के ढंग में यूरुप के सब राज्यों में समानता देखी। ग्रेट ब्रिटेन में बाज़ारों और सड़कों के किनारे काफेज और रेस्टूरेंट्स एवं विश्रान्ति गृहों में तीसरे पहर के बाद बैठकर नरनारी अपना दिखावा नहीं करते; परन्तु मध्य यूरुप में, जिसको वहां की भाषा में कांटिनेन्ट ही कहते हैं, यह मेरी दृष्टि में एक बड़ी कुप्रथा है। यद्यपि बोली राज्यों की भिन्न २ है तथापि अंग्रेज़ी जानने वाले यूरुप के प्रधान नगरों में जहां तहां मिल जाते हैं और कोई अड़चन नहीं होती। सब राज्यों का सिक्का अलग २ है परन्तु सीमा प्रांत के स्टेशनों पर और नगरों के मुख्य बाज़ारों में सराफों की कुछ दुकानें हैं जहां ब्रिटिश सिक्का उसी वक़्त भुनाया जा सकता है। और बहुधा होटल वाले भी ब्रिटिश सिक्के, पाउंड, शिलिंग, पेंस को अपने राज्यों के सिक्कों में उस दिन के बाज़ार भाव से परिवर्तन कर देते हैं, परन्तु भारतवर्ष का सिक्का अदन तक ही चलता है। इजिप्ट में भी ऐसे एक दो बैंक हैं जो कसर देकर बदला कर लेते हैं। इन यूरूपियन देशों में यद्यपि भाषा भिन्न २ है

तथापि एक बात की बड़ी सुविधा देखी कि लिपि याने वर्णावली सबकी एक है और नाम विशेष और साइन बोर्ड्स सब जगह एक ही वर्णावली में लिखे हैं। हर चौराहे पर पुलिस मौजूद है, किसी पते पर जाना होवे तो अपने साथ शुद्ध लिखा रखने से और पुलिस को दिखा देने से कोई कठिनाई नहीं होती। पुलिस के नियम सवारी व राहगीरी के सब जगह क़रीब क़रीब एक से हैं। सब शहरों में ६ खंड अथवा ६ खंड से भी अधिक की सुन्दर इमारतें हैं। बाज़ार चौड़े और चौराहों पर पार्क और स्मारक हैं। रोशनी सब जगह बिजली की और उसके ज़रिये रात्रि को हर बात की इश्तहारबाज़ी खूब होती है। यूरुप निवासी भारतवासी यात्रियों को बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं और यह ज्ञात होने पर कि अमुक अमुक भारतवासी हैं बड़े प्रेम से स्वागत करते हैं। जनता साधारणतः सब भारत-वासियों को गांधी इंडिया के नाम से सम्बोधन करती है। यदि यात्रा में इंगलिश मैन यूरुप में जहां कहीं मिल जावे तो उसका वर्ताव वहां पर तो भारतवासी के साथ चचेरे भाई का सा होता है। प्राकृतिक दृश्य सब जगह का सुंदर, रम्य और चित्ताह्ला-दक है। पर्वत बहुधा वृक्षाच्छादित और नदी नाले वर्ष पर्यन्त बहने वाले पाये। खेती का हाल सब जगह एकसा नहीं। इटैली देश में और २ देशों की अपेक्षा खेती अधिक होती है। बेलज़ियम, जर्मनी, आस्ट्रिया, जैकोस्लोवेकिया आदि देशों में कल कार-खानों की बाहुल्यता है। फ्रांस, इटैली, स्वीज़रलैंड की सीमाओं पर कुछ ऐसे भी नगर हैं जो केवल भोगविलास के जीवन के लिये ही निर्देशित से हैं और जहां पर यूरुप के सब भागों के मनुष्य विशेषकर ग्रीष्म ऋतु में जमा हो जाया करते हैं। मनुष्य हृष्ट पुष्ट और प्रसन्नचित्त पाये, एक कारण इनके प्रसन्नचित्त

होने का यह भी पाया कि हरएक के चित्त में लगाये यह विचार देखे कि जिस राज्य में हम रहते हैं वह हमारा है और जो हम चाहें अपने राज्य में कर सकते हैं। यद्यपि यूरुप के एक दो देश में डिक्टेटरशिप है परन्तु डिक्टेटर अपने आपको प्रजा का सब से अधिक सेवा करने वाला समझता है और प्रजा की नाड़ी और विचारों के प्रभाव से हर समय चौकन्ना और सावधान रहता है।

यूरोपियन देशों में जनसंख्या बढ़ रही है जिसके कारण दरिद्रता भी बढ़ रही है और प्रत्येक देश और राष्ट्र यह चाहता है कि अपने देश से बाहर दूसरे देश पर व्यापार द्वारा अथवा और किसी प्रकार से आक्रमण करके अपने आदमियों को वहां बसा दे या अपने व्यापार को वहां फैला कर अपना अधिकार जमादे। इस कारण सब देशों और राष्ट्रों में आपस में मनोमालिन्य है और शांति बनाये रखने की ग़रज़ से जो लीग आफ़ नेशन्स (League of Nations) की संस्था है वह मुझ अल्पज्ञ की दृष्टि में केवल ढकोसला मात्र है कदाचित् नाति दूर काल में इसका खण्डन मण्डन हो जावे। यह बात निश्चयात्मक है कि भारतवासियों को इन सब देशों में जाकर कुछ न कुछ सीखना चाहिये। सब ही देश पदार्थविद्या में भारतवर्ष से अधिक बढ़े चढ़े हैं और जो जिसमें विशेषता रखता है उससे वही सीख लेना, भारतवासियों के स्वावलम्बी व स्वतन्त्र होने का एक मुख्य साधन है।

तीसरा मेरा अभीष्ट यह भी था कि मैं स्वयं लंदन में पहुंच कर यह भी जान सकूं कि भारतवर्ष और ग्रेट ब्रिटेन के सम्बन्ध में किस प्रकार का परिवर्तन होना सम्भव है और भारतवर्ष के देशी राज्यों और उनकी प्रजा के लिये स्वत्वों को सुरक्षित रखने का सरल मार्ग क्या है?

सबसे पहिले मैंने इंग्लैंड की सर्वसाधारण जनता के भावों को जानना चाहा, साधारण जनता तो भारतवर्ष और भारतवासियों से कोई प्रकार का विरोधभाव नहीं रखती, किन्तु भारतवासियों की वर्तमान दशा से और वर्तमान शासनप्रणाली से अनभिज्ञ सी है। वहां की जनता यही समझ रही है कि भारतवर्ष में भी लेजिस्लेटिव असेम्बली को कुछ ऐसी ही शक्ति है जैसे उनके देश में पार्लियामेंट को। और देशी राज्यों की प्रजा की स्थिति से तो उनको कुछ भी जानकारी नहीं। यह उनके समझ में आही नहीं सकता कि देशी राज्यों की प्रजा का कुछ भी अधिकार अपने देश के शासन में नहीं है और कि देशी राज्यों के नरेन्द्र अथवा प्रबन्धक कान्स्टिट्यूशनेल नहीं हैं यह उनके दिमाग में समा ही नहीं सकता। न उनके कर्णगोचर यह बात भी हुई है कि देशी राज्यों का प्रबन्ध भी गवर्नमेंट के पोलिटिकल डिपार्टमेंट के हाथ में है। उनके यह जची हुई सी बात है कि यहां के राजे महाराजे बड़े ही सम्पत्तिशाली हैं और द्रव्य तो उनके पास असंख्य है। सर लीजले स्कॉट को जब से अनुदाहरणीय असीम फ़ीस मिली है तब से तो उनके ये विचार और भी दृढ़ होगये हैं।

फिर मैंने राजराजेश्वर के मंत्रीगण, विशेष कर भारतसचिव और भारतसचिव की कौन्सिल के सदस्यों, के विचार जानने चाहे और कई महानुभाव सदस्यों से घंटों महत्वपूर्ण विषयों पर स्वतंत्रतापूर्वक बातें हुईं, तो पाया कि जिस बात को उनको सुझाया उसी पर अपना यथाशक्ति ध्यान देने की उन्होंने प्रतिज्ञा की। लेकिन मैं उनके हृदय के भाव अच्छी तरह समझ गया कि यह प्रतिज्ञाएं नीतिपूर्ण, दुःसाध्य व दुष्कर हैं। मेरी समझ में तो एक जचा हुआ प्रोग्राम दश वर्ष आगे तक का बना रक्खा है

उसी पर चलना उनका ख़ास ध्येय है। उस प्रोग्राम का आशय आत्म बुद्धि में यह आया कि भारतवर्ष ए व्यापारादि द्वारा अपने देश की आर्थिक दशा सुधारने के लिये यथेष्ट लाभ उठाने की चेष्टा करें। और देशी राज्यों के राजे महाराजे तथा उनकी प्रजा हर समय हर प्रकार से शब्द पैरेमा-उन्टसी का पूर्ण रूप से यथावत चरितार्थ करते रहें। और जो नीति स्थिर की जावे उसका पालन भारत सरकार के पोलिटिकल डिपार्टमेंट के द्वारा होता रहे। तथा कल्याण भी राजे महाराजे अपना इस ही में समझें कि अपने वाहर के नैतिक सम्बन्ध में इस विभाग की मन्त्रणा के अनुसार ही चलें। मन्त्रि-मण्डल के सदस्यों का यह भी कथन है कि भारतवर्ष के देशी राज्यों के लिये फीडेरेशन में शामिल होना उपयुक्त ही है। क्योंकि उन्नति का प्रारम्भ यहाँ से होता है। और ये विषय ऐसी जटिल समस्याओं से व्याप्त हैं कि इनके साधन में दीर्घ समय लगेगा। भारतसचिव की कौन्सिल के मेम्बरों में दो एक मेम्बर ऐसे होते हैं जो भारतवर्ष में पोलिटिकल डिपार्टमेंट में किसी बड़े पद पर रह चुके हों। देशी राज्यों के सम्बंध में इनहीं की राय पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

मैं पारलियामेंट के अपोजिशन पार्टी (विरोधी दल), जो इस समय लेबर पार्टी है, के नेताओं से भी मिला। उनकी बातें तो बड़ी मीठी थीं और उनका कथन था कि यदि अबके फिर हमारी पार्टी चुनाव में आजावेगी तो भारतवासियों के और विशेष कर देशी राज्यों की प्रजा के इन सब दुःखों का मोचन हो जावेगा। निःश्वास के साथ यह भी यह लोग कहते थे कि हमारा शिरोमणि ही अपने दल का विरोधी होकर कनजर-

वेटिव पार्टी का सेवक होगया और नेशनल गवर्नमेंट बनाली। कोई कोई उसमें से यह कहने का साहस करते थे कि मुख्य-मंत्री होने के लालच ने यह सब झगड़ा पैदा करा दिया। वरना मुख्य मंत्री महोदय भारतवर्ष और देशी राज्यों की सब बातों से पूर्ण भिज्ञ हैं। लेवरपार्टी लीडर्स जितना भारतवर्ष के हितैषी बनते हैं उतना तो मैंने उनको नहीं पाया किन्तु यदि इनकी गवर-मेंट बन जावेगी तो भारतवर्ष के साथ सहानुभूति अवश्य रक्खेंगे।

एक और पार्टी है जो हमेशा भारतवर्ष को पद-दलित ही रखना चाहती है। उस पार्टी के भी एक दो नेता से, जो भारतवर्ष में गवरनर के पद पर रह चुके हैं, कुछ बातचीत हुई। उनको इस बात का बड़ा आश्चर्य है कि जब वे भारतवर्ष में उच्च पदाधिकारी थे तब तो भारतवासी कुछ आन्दोलन करते ही न थे, अब क्यों ऐसी बेहूदा हरकतें करते हैं और क्यों नहीं पहले की तरह भारत सरकार को अथवा प्रत्येक गौराङ्गवर्णी को अपना मा बाप समझते, ऐसे बहुत से व्यक्ति, जो गवरनर जन-रल व गवरनर आदि के पद को भारतवर्ष में विभूषित कर चुके हैं, ईस्ट इन्डिया असोसियेशन नाम की संस्था के मेम्बर हैं और क्योंकि मैं भी उसका मेम्बर होगया हूं इसलिये उनके साथ परामर्ष होने के कई मौक़े मिले, मैंने उनको विनय-पूर्वक कहा कि भारतवासी भी सांसारिक मनुष्य हैं, संसार की प्रगति के साथ में ही चल सकते हैं, परन्तु उनके तो हृदय में यही बात जची हुई है कि जिन भारतवासियों के पास ऐसी हवा पहुंचती है वे नीच और दुष्ट हैं और ताड़ना तथा तिर-स्कार के पात्र हैं।

साधारण जनता में से कुछ ऐसे सज्जनों की पार्टी भी देखी जो भारतवासियों से हार्दिक प्रेम रखते हैं और समय आने

पर भारतवासियों का साथ देवेंगे, परन्तु यह पार्टी बहुत निर्बल और संकीर्ण है। यदि यह दल कदाचित बढ़ जावे तो ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ और भी दृढ़ हो जावे।

पाठकों के सामने सब प्रकार के दलों के नेताओं के विचार रख दिये, अपना मार्ग अपने आप सोच लें। मेरे खुद के यह विचार हैं कि भारतवासी जबतक पदार्थ विद्या में निपुण न होंगे, जबतक प्रत्येक वस्तु के बरतने से जो उनकी बनाई हुई नहीं है परित्याग न करेंगे, जबतक स्वदेशाभिमान उनमें न होगा, जबतक अपने पगों पर खड़ा होना नहीं सीखेंगे, जबतक एकता के भाव का उनमें समावेश न होगा, जबतक सम्प्रदायों की संकुचता और अंधापन उनमें से दूर नहीं हो जावेगा, जबतक धनी निर्धनों के सहायक बन उनको औद्योगिक धंधे न सिखलावेंगे, जबतक पाश्चिमात्यों के बाहिरी वेष भाषा का अनुकरण करना नहीं छोड़ेंगे, जबतक ऊँच नीच छूत अछूत के विचार को छोड़ कर वर्णाश्रम को न सुधारेंगे और जबतक पूर्ण सद्गृहस्थी न बनेंगे स्वतन्त्र नहीं हो सकते। जब सब प्रकार स्वालम्बी होंगे तब ही स्वराज पाने के भागी होंगे।

इस पुस्तक के बनाने में मुझको अधिक परिश्रम नहीं पड़ा। कारण मैंने जो कुछ बात देखी, जिस मनुष्य से मैं मिला और जिस सोसाइटी में मैं गया वह सब दिन भर का वृत्तान्त रात्रि को जब मैं सोने के लिये अपने स्थान पर पहुंचता शयन करने से पहिले अपनी प्रिय पुत्री के नाम पत्र रूप से लिख लेता और प्रतिदिन का हाल एयर मेल से डाल देता। मैंने अपनी चिरंजीविनी को समझा दिया था कि सब पत्रों को तारीख-वार संग्रह करके चौकस रखदे, उसने ऐसा ही किया; और जब मैं वापिस आया तब सब पत्र ज्यों के त्यों सँभला

दिये, क्योंकि यह पत्र मेरी पुत्री के नाम थे जिसकी आयु केवल १० वर्ष की ही है अतः मैंने ये पत्र साधारण बोल चाल की भाषा में लिखे हैं न कि इससे पूर्व रचित मेरी पुस्तकों की स्टाइल में। उन्हीं पत्रों की प्रति उतरवा कर पुस्तक रूप से पाठकों के सामने भेट है, क्योंकि प्रतिदिन के हाल प्रतिदिन ही लिख लेता था इसलिये जो अनुभव हुए हैं उनमें जो भाव उस समय उत्पन्न हुये वैसे के वैसे अङ्कित हैं। पाठकों को पढ़ते समय ऐसा ज्ञात होगा कि मानो वे स्वयं सब बातों का यथा-स्थान अनुभव कर रहे हों।

मैंने इस पुस्तक का प्रकाशन किसी आर्थिक दृष्टि से नहीं किया, मेरा इस पुस्तक के लिखने और प्रकाशन करने में एक-मात्र आशय यही है कि मेरा सन्देश घर घर में पहुँचे और भारतवर्ष की स्त्रीजाति तथा बाल-समूह पश्चिमी देशों की सभ्यता और वहां की व्यवस्थाओं से सुपरिचित होकर आगे के लिये अपने आपको सँभाल लेवें। जितना अधिक इसका प्रचार होगा मैं उतना ही लाभ इसमें अपने आपका और अपने देश का सम-झूंगा। यद्यपि मैंने हज़ारों 'चित्रों' का संग्रह किया है तथापि इस में चुने हुये १५, २० चित्र दिये हैं कि पुस्तक की सुन्दरता बनी रहे, क़ीमत बढ़ न जावे और सर्वसाधारण को पुस्तक के खरीदने में कठिनाई न होवे। चेष्टा ऐसी की गई है कि पुस्तक में कागज और छपाई की जो लागत लगी है उसके अनुमान से पुस्तक का मूल्य रक्खा है। मेरी यात्रा करने में जिन मित्रों ने सुविधा की है, विशेष कर श्रीमान् सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला, सर प्रभाशंकरजी पट्टनी, सरदार किबे साहब डिपुटी मिनिष्टर राज्य इन्दौर, सेठ केशवदेवजी मालिक फर्म ताराचंद, घनश्याम-दास व सेठ विश्वम्भरलालजी सोमानी बंबई, उन सबका मैं

बड़ा कृतज्ञ हूं। मैं रावराजाजी श्री कल्याणसिंहजी बहादुर सीकर नरेश का भी, जिन्होंने आबू से विदा होते समय मुझको उत्साहवर्धक शब्द कहे, आभारी हूं।

मैं अपने इङ्गलैंड के उन अंग्रेज मित्रों को भी, जिन्होंने मेरा वहां हार्दिक स्वागत किया विशेष कर सर राबर्ट होलेंड, भूतपूर्व मेम्बर इण्डिया कौंसिल, सर रेजिनाल्ड ग्लांसी, मुख्य ऐडवाइजर भारतसचिव, करनल ऐस. बी. पिटरसन, पोलिटिकल सेक्रेटरी भारतसचिव, मैसर्स सी० स्केलटन व सी० ई० स्टोथर्ड भूतपूर्व सुपरिंटेंडिंग इञ्जीनियर जयपुर व जोधपुर राज्य व मेजर जनरल वेगस्टाफ महाशय प्रिंसिपल ह्वूलविच अकाडेमी आदि महानुभावों का भी बड़ा उपकृत हूं। और रायबहादुर आनरेबिल सर शादीलालजी, जो विदेशों का परिचय दिलाने में मेरे अभिन्न प्रवर्तक थे उनका भी बहुत उपकार मानता हूं। मैं अपने देशस्थ मित्रों को, स्नेहियों को भी अन्तः-करण से धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकता कि जिन्होंने पीछे से मेरे घर व बाल बच्चों के संभालने की कृपा की है।

जयपुर
ता० १०-६-३२ } गणेशनारायण सोमानी.

* ओ३म् *

मेरी यूरुप की यात्रा

प्रथम अध्याय

प्रस्थान

विदेश-यात्रा की प्रबल इच्छा—मेरा जन्म मेरे पिता और पितामह की भाँति राजपूताने के प्रधान नगर इस जयपुर में हुआ। बाल्यावस्था से ही देशाटन करने में रुचि रही और भारतवर्ष के भिन्न २ प्रान्तों और प्रसिद्ध नगरों में कई बार जाने का अवकाश हुआ। सब स्थानों के ग्रामीण-जीवन और नागरिक-जीवन का अनुभव हुआ। मेरी यह भी प्रबल इच्छा रही कि भारतवर्ष के बाहर की दुनियां को भी देखूं, लेकिन हमेशा ही ऐसे ज़िम्मेवारी के कार्यों में नियुक्ति रही कि प्रबल इच्छा होते हुए भी मैं बाहर न जा सका। सन् १९३२ की ग्रीष्म-ऋतु में माननीय महोदय लार्ड गवर्नर जनरल के एजेन्ट साहब ने १ जून से आबू आने के लिये लिखा इसलिये अवकाश पाकर तीन मास की प्रीविलेज़ छुट्टी ली और पासपोर्ट लेकर जाने का निश्चय किया।

पासपोर्ट—भारतवर्ष स्वाधीन देश न होने से और देशी-राज्य भारत सरकार के आधीन होने से प्रत्येक भारत के बाहर

जाने वाले यात्री को पासपोर्ट लेना पड़ता है। म देशीराज्य की प्रजा हूं इसलिये मुझको पासपोर्ट लेने के लिये अपने राज्य के द्वारा पासपोर्ट लेने की प्रार्थना करनी पड़ी। यद्यपि वृटिश भारत निवासियों को कलेक्टर, मजिस्ट्रेट से ही पासपोर्ट मिल जाता है, लेकिन देशी राज्यों की प्रजा को अपने राज्य के द्वारा वृटिश राज्य से मिलता है। यद्यपि नियम तो यही है कि साहब रेज़िडेन्ट रियासत को ही पत्र दे देना चाहिये, परन्तु वास्तव में पासपोर्ट साहब एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल के यहां ही से दिया जाता है और इसके मिलने में कुछ दिन लग जाते हैं, परन्तु भारतवर्ष से बाहर जाने का विचार करने के पहिले पासपोर्ट को प्राप्त करना नितान्त आवश्यक है।

पासपोर्ट—एक आज्ञापत्र एवं इजाज़ती चिट्ठी है कि जिसके द्वारा उसमें लिखे हुये राज्यों में स्वतन्त्रतापूर्वक जा सकते हैं। उसमें जाने वाले का नाम, पेशा, जन्मदिन, देश, ऊंचाई, आँख का रङ्ग, बालों का रङ्ग और कोई ख़ास चिह्न, यदि होते हैं तो, अङ्कित कर दिये जाते हैं और एक फोटो भी लगा दिया जाता है तथा गवर्नमेन्ट की सील पासपोर्ट की पुस्तक के प्रत्येक पत्र पर लगा दी जाती है और देने वाले अफ़सर के दस्तखत व मोहर होती है। जिस राज्य में होकर जाना होता है उस राज्य को पासपोर्ट दिखाने का नियम है और पासपोर्ट के जांच करने वाले अफ़सर उसको प्रत्येक राज्य की सीमा पर जांच कर अपनी सील लगा कर फिर उस राज्य में घुसने देते हैं। पासपोर्ट के प्रार्थना पत्र के साथ एक फार्म (नक़्शा) भरना पड़ता है। और उसमें यात्री की स्थिति का हाल भी स्थानीय मजिस्ट्रेट को दिखाना पड़ता है कि जिससे ज्ञात हो

जावे कि यात्री के पास विदेशयात्रा में जाने के लिये पुष्कल धन है और धनाभाव से वह किसी कष्ट में न पड़ेगा तथा यात्रा के समय उसकी व्यवस्था ठीक होगी। पासपोर्ट यात्रा के समय एक अनिवार्य वस्तु है जिसको हमेशा अपने पास रखना चाहिये।

साथी की तलाश—मेरे मित्र मुंशी साधोनारायणजी सकसेना वकील चीफ़कोर्ट ने भी यह सुनकर कि मैं दुनियां भर का भ्रमण करना चाहता हूँ मेरे पास आग्रहपूर्वक आकर कहा कि मैं भी आपके साथ अवश्य चलूंगा, अतः उनके लिये भी पासपोर्ट लेने का प्रयत्न किया और मेरे साथ २ उसको प्राप्त भी कर लिया, परन्तु खेद है कि अपने भ्राता, माता व पत्नी आदि के विरोध करने पर वे नहीं जा सके।

मैं भी प्रथम वार ही समुद्र की यात्रा करने के लिये उद्यत हुआ था, इस प्रकार साथी को फिसलता हुआ देखकर मन में कुछ संकुचित हुआ और अपने साथ एक सेवक एवं साथी को ले जाने की इच्छा की, साथी के लिये भी सब तय्यारी हो गई, परन्तु मित्रों ने समझाया कि यूरोप के देशों में साथी, सेवक ले जाने की आवश्यकता नहीं है, किन्तु एक बड़ा भारी भार होगा और सुख की अपेक्षा दुःख व बन्धन में पड़ना होगा। मैंने उनकी वात मान अकेले ही जयपुर से ता० ६ जून सन् १९३२ ई० ज्येष्ठ शुक्ला ६ वृहस्पतिवार को प्रातःकाल ईश्वरपूजा वन्दना शास्त्रोक्त हवन आदि करके प्रस्थान किया। मैंने वहुत कुछ चाहा कि मास मई के शुरू में मैं प्रस्थान करूं, परन्तु साथी की गड़-बड़ी और घर में रुग्णावस्था के कारण तथा पासपोर्ट उचित समय पर न मिलने के कारण इससे पहले रवाना न हो सका।

अपने को अकेला न समझें, अपन सब घर के हैं और जहाज़ में व यात्रा में साथ रहेंगे। बम्बई में ही सेठ ताराचन्द घनश्यामदास के मुनीम गोविन्दरामजी ने कहा कि राजा गोविन्दलालजी पित्ती सेठ केशवदेवजी के जवांई व उनका पुत्र वहां पैरिस में ही हैं और उनको मेरे प्रस्थान का तार भी दे दिया गया है। मेसर्स टामस कुक एण्ड सन के द्वारा जहाज़ का टिकट लिया और एक मित्र के प्रभाव से बम्बई ब्रांच के मैनेजर ने एक जनरल पत्र एजेन्टों के नाम लिख दिया कि मिस्टर सोमानी पहिली वार ही समुद्र की यात्रा करते हैं इसलिये जहां कहीं भी जावें उनको जो आवश्यकता हो उसमें सहायता दी जावे।

टामस कुक के दफ़्तर से उतर रहा था कि एक परिचित मित्र सी० स्केलटन साहब, जो भूतपूर्व सुपरिन्टेंडिंग इंजीनियर मारवाड़ रियासत के थे, सामने आते हुए मिले। हिन्दुस्तानी में रामा श्यामा करने के बाद और हिन्दुस्तानी मित्र की तरह मिलने के पश्चात् उन्होंने कहा कि मैं भी इस ही जहाज़ से जाऊंगा और मेरा एक आदमी मारवाड़ रियासत का आरकीटेक्ट है वह आपकी सब तरह की सेवा करेगा, आपको एक क्षण के लिये भी अकेलापन नहीं मालूम होगा। बस मित्रमण्डली से इस प्रकार सुसज्जित हो प्रस्थान का दृढ़ संकल्प किया और पहिले दिन ही जाकर विक्टोरिया नामक जहाज़ में अपनी सीट देख आया।

देशी स्टाइल में रहने का संकल्प—इस जहाज़ से जानेवाले कई यात्री बम्बई में मिले, यह सब अधिकतर गुजरात प्रांत के थे। मैं बंबई में विश्वम्भरलालजी (सोमानी) माहेश्वरी के यहां ठहरा हुआ था, उन्होंने मेरा खूब स्वागत सत्कार किया। मारवाड़ियों में

ये अग्रगण्य रुई के दलाल व व्यापारी समझे जाते हैं और यह भी सोमानी हैं। जयपुर राज्य में वग्गड़ (शेखावाटी) के हैं, मेरे भतीजे चि० गोविन्दनारायण सोमानी ने इनसे जयपुर में मिलाया था, मेरी बाहर वाली कोठी पर मेरे किरायेदार पं० कैलाशप्रसादजी किचलू एम० ए०, आई० ई० एस० से मिलने आये थे, कारण यह भी विद्या-प्रेमी हैं और इन्होंने भी अपने ग्राम में एक हाई-स्कूल व अन्य संस्थाएं खोल रक्खी हैं, उस सम्बन्ध में उनसे कुछ बात चीत करनी थी। चि० गोविन्द ने उनके ऊपर चिट्ठी लिखी थी। कई शेखावाटी व मारवाड़ के सज्जन व बिड़ला-ब्रदर्स के मुनीम वगैरह स्टेशन पर लेने आये थे, मैंने इनके यहां ही ठहरना मुनासिब समझा, इन्होंने मेरे साथ अपने सेक्रेटरी नियत कर दिये, यह सेक्रेटरी मुझको ऐसी दुकानों पर ले गये जहां विलायतों में जाने वाले कपड़े आदि से सुसज्जित होते हैं। बहुत से यात्री यहाँ भी मिले, दुकानदारों ने मुझको अङ्गरेज़ी मोडर्न स्टाइल के सूट दो तीन जोड़ी बनवाने के लिये कहा और कई तरह का सामान खरीदने के लिये कहा। मैंने भी स्वदेशी-भंडार से एक ठण्ढा सूट बनवाया, दो तीन कालर और पारसी इन्स्टीट्यूट से मौजे वगैरह लिये और एक गाउन गरम बहुत अच्छा लिया, क्योंकि मुझको इन यात्रियों व दूकानदारों ने कहा कि आप गाउन पहिने बिना अपनी केबिन के बाहर नहीं निकल सकते और न यूरोप के होटल के किसी कमरे के बाहर। मुझको दबा कर कहा कि तीन चार गरम सूट अवश्य लेना चाहिये, लेकिन मैंने देशी स्टाइल में ही रहना अच्छा समझा।

बम्बई से प्रस्थान—मेसर्स टामस कुक ने टिकट खरीदने के बाद कह दिया था कि आप ता० १३ के १२ बजे पहिले पहिले

इन्डियन स्टेट्स मोटर वर्क्स के नाम से कारखाना खोल रक्खा है। थोड़ी देर में अन्दर लिये गये। एक एक करके डाक्टर के पास ले जाये गये। सर शादीलालजी व उनके दोनों पुत्र वहाँ मिल गये। बाद डाक्टरी मुआयने के जहाज़ पर पहुँचाये गये, जहाज़ पर मैं अपने कामदार पुरोहित जुगलकिशोरजी व सेठ विश्वम्भरलालजी माहेश्वरी के एक सेक्रेटरी को साथ लेकर गया। जहाज़ पर साथ जाने के लिये ३) रु० फ़ी आदमी का टिकट लगता है। विश्वम्भरलालजी भी वहां अपने मित्रों के साथ आये और बड़े प्रेम से मिले, इस वक्त १ बज गया था और बहुत भीड़ हो गई थी और मिलने वाले बहुत अधिक थे।

द्वितीय अध्याय

जहाज़

जहाज़ की रवानगी—जहाज़ ने अपनी सीढ़ियों और रस्सों को समेटना शुरू किया और २ बजे के क़रीब रवाना होने की तैयारी करने लगा, डॉक से धीरे २ कुछ हरकत होने लगा और इधर जी उमड़ने लगा। पं० युगलकिशोरजी फूट २ कर ज़ार २ से अश्रुपात नीचे खड़े करने लगे। हज़ारों आदमी रूमाल व हाथों का ईशारा कर रहे थे। मेरे भी हृदय में विचित्र घटनायें उत्पन्न हो रहीं थीं। भारतमाता से जुदा होने का यह पहिला ही अवसर था, हर समय हर क्षण भगवान् याद आते थे, अनोखे भाव उत्पन्न हो रहे थे। लेखनी उनको प्रकट नहीं कर सकती है। धीरे धीरे किनारे से जुदा हुए, एक मील के पश्चात् कुछ नहीं दिखा। थोड़ी देर वाद चारों ओर समुद्र ही समुद्र दृष्टि आया।

जिस जहाज़ से यात्रा करनी थी वह विकटोरिया नामक जहाज़ था, यह जहाज़ इटैली देश की एक कम्पनी Lyod Triestino (लाइड ट्रेस्टीनो) का है। इस कम्पनी के कितने ही जहाज़ हैं। इटैली देश में जिनोआ नगर में इसका दफ़्तर देखा जो वहुत वड़ा दफ़्तर है और सव ही प्रधान नगरों में, जैसे—लन्दन, वम्बई आदि में, इसके दफ़्तर हैं। यदि टामस कुक आदि के द्वारा प्रवन्ध न करके सीधे इससे भी प्रवन्ध किया जावे तो सीट भी सस्ती मिलती है और अच्छी मिलती है।

हमारे मारवाड़ियों में वड़े २ सम्पत्तिशाली सेठ हैं, परन्तु भारत के वाहर और भारतवर्ष में भी वे न किसी रेलवे कम्पनी

के स्वामी हैं और न उनका कोई जहाज़ समुद्र में कहीं चलता है। यह विक्टारिया जहाज़ बड़ा सुन्दर है। जब यात्रा से जयपुर वापिस आकर जयपुर के रेज़िडेन्ट मैकेनजी साहब से मिला तो उन्होंने कहा कि आपने बड़े उम्दा जहाज़ से यात्रा की। इस जहाज़ के सात खण्ड हैं। पहिले २ खण्ड पानी में रहते हैं और इनमें सामान खानगी, तिजारती व यात्रियों के बड़े २ बक्स वगैरह रहते हैं। दूसरे दो खण्डों में इकानामिक सेकिंड क्लास के यात्री वा कुछ कर्मचारीगण रहते हैं। फिर १॥ खण्ड सेकिण्ड क्लास के यात्रियों के लिये है और ऊपर के दो खण्डों में फर्स्ट क्लास के यात्रियों के लिये प्रबन्ध है। लगभग १००० यात्री व कर्मचारियों के लिये इसमें जगह है।

फर्स्ट क्लास—के यात्रियों को एक २ कैबिन मिलता है जिसके साथ बहुधा स्नान आदि का प्रबन्ध होता है। स्नानागार में टप बाथ या शावर बाथ फव्वारे से ठण्ढे या गर्म या थोड़े गर्म जल से स्नान किया जा सकता है। साबुन आइना आदि का सुप्रबन्ध होता है और कैबिन हवादार होता है। खिड़की काफ़ी बड़ी होती हैं। अलमारी, टेबिल और ३ कुर्सियाँ होती हैं। जल केवल ठण्ढे व गर्म के न कुञा, गिलास, सुराई होते हैं। तौलिये, पलंग बिस्तर, कम्बल आदि अच्छे स्वच्छ और फ़र्श सुन्दर होता है। आइने लगे होते हैं। दो मित्र आकर देर तक बैठ सकें, बातचीत कर सकें, कमरा इतना बड़ा होता है और रोशनी हर समय काफ़ी होती है। इसका डाइनिङ्ग रूम बहुत बड़ा होता है और विशेषता यह है कि इसमें टेम्परेचर समयानुकूल रक्खा जाता है। यह मौसम गर्मी का था, टेम्परेचर इसका इस समय ऐसा ही था मानो फाल्गुन मास या कार्तिक

मास के प्रभात के समय का हो। यह सुभीता दूसरे दर्जों में नहीं होता। इसका बैठक का कमरा (Drawing Hall) बहुत बड़ा, एकछता, ऊंचाई तो कम मगर मेज़, कुर्सियां, तिपाइयां, ग़लीचे वग़ैरह से खूब सजा हुआ है। इसमें कई मीटिङ्ग हुई और क़रीब सब क्लासों के आदमी आ सकते हैं इतना बड़ा है। इसके साथ ही एक दूसरा और हॉल है जिसमें अक्सर गाना बजाना हुआ करता है और यह स्मोकिङ्ग रूम का भी काम देता है, इसमें भी २५० कुर्सियां आ जावें इतनी जगह होती है। डाइनिङ्ग हाल, ड्राइङ्ग हाल और स्मोकिंग हाल के साथ लगे हुए बरांडे हैं। बड़े लम्बे दोनों तरफ़ और यही फ़र्स्ट क्लास डेक हैं। फ़र्स्ट क्लास के यात्री इन्हीं में अपनी आरामकुर्सियों पर आकर बैठते हैं और समुद्र की सैर करते हैं। प्रत्येक कुर्सी का किराया, जिस पर यात्री का नम्बर लगा रहता है, ३ शिलिंग के लगभग होता है। इन कमरों के ऊपर कुछ हिस्से में जिम-नेशियम (अखाड़ा) बना हुआ है वहां यात्री आकर हर तरह की क़सरत कर सकते हैं। काष्ठ के ज़ीन आदि से सजे हुए ऐसे घोड़े रक्खे हुए होते हैं और बिजली का ऐसा कनेक्शन होता है कि बटन दबाया और घोड़ा टूट करने लगा। इस ही तरह डुबकी लगाने की मेशीन व साइकिल की क़सरत व मिट्टी के पिजन शूटिङ्ग आपरेटस व अनेक क़सरतों की मेशीन होती हैं। ऊपर टैनिस की तरह कुछ खेल सकें इतनी जगह होती है और होद जिसमें तैर सकें उसमें भी काफ़ी जगह होती है। बड़े २ तख़्ते नाप और मेल के जहाज़ वालों के पास रक्खे रहते हैं कि पन्द्रह बीस मिनट में जोड़कर उस पर तिरपाल लगाकर, बड़ा बम्बा खोल देते हैं, एक दो घण्टे में होद बन जाता है जिसमें यात्री एक साथ दस बारह तक स्नान

कर सकते हैं। इस फ़र्स्ट क्लास से लगा हुआ ही तारघर है जिसमें रेडियो कनेक्शन है। जहां और जब चाहो तार दो, बातचीत करो, जितनी दूरी से बातचीत करनी हो उतनी फ़ीस एक शब्द पर लगती है, यात्री को घर की खबर मिनटों में मिल सकती है, चाहिये द्रव्य ख़र्च करने को।

इस ही फ़र्स्ट क्लास से लगा हुआ परसर खजाञ्ची का आफ़िस होता है। यह जहाज़ की बड़ी उपयोगी संस्था है, बड़ी भारी अलमारी, जिसमें सैकड़ों ड्राअर्स होते हैं, बनी हुई है। किसी क्लास का कोई यात्री आकर अपना मूल्यवान् ज़ेवर, कागज़ रुपया रख सकता है, बन्द करके चाबी उसको दे दी जाती है। चाहे जितनी दफ़ा खोलो और बन्द करो। बड़ी सच्चाई और ईमानदारी का काम है। यहां परसर के दफ़्तर से हर तरह की खबर मिल सकती है व प्रबन्ध हो सकता है। कागज़, लिफ़ाफ़े, स्याही वग़ैरह बिला क़ीमत मिलती है और कुछ अलमारियों में बिसायतखाने का सामान वग़ैरह रक्खा हुआ होता है। कुछ ज़ेवर वग़ैरह भी होते हैं, जिसका जी चाहे खरीदो। यहां ही जहाज़ पर डाक आती है और यहां ही से डाक यात्रियों के लिये तक़सीम होती है। जहाज़ का ख़ास दफ़्तर यहीं होता है, शफ़ाखाना व डाक्टर भी होता है, आवश्यकता पड़ने पर परसर या स्टुवर्ड को कहने से फ़ौरन आ जाता है।

सैकिन्ड क्लास—में यात्रियों के लिये ये सब सुभीते होते हैं, कैबिन छोटी और कभी २ एक कैबिन जिसमें दो तीन सीट तक होती हैं। कोई कैबिन एक सीट वाला भी होता है और कोई कैबिन फर्स्टक्लास का सा भी मिल जाता है। यह सब यात्री के भाग्य और सावधानी पर है। इसका डाइनिंग रूम भी काफ़ी

बड़ा होता है और इससे लगा हुआ ही बावरचीखाना होता है जिससे यात्रियों को कभी ठण्डे भोजन की शिकायत नहीं होती। कुर्सियाँ बड़े आराम की और मेज़ों पर काफ़ी जगह होती है। ड्राइङ्गरूम में दोसौ के क़रीब कुर्सियाँ आ सकती हैं और सिनेमा अक्सर इस ही रूम में दिखाया जाता है। पियानो बाजा भी रक्खा हुआ रहता है और कोचेज़ टेबिल्स रक्खी रहती हैं, रोशनी काफ़ी होती है लेकिन गर्मी के मौसम में हवा का पूरा बन्दोबस्त नहीं होता। इसके साथ लगा हुआ एक बार रूम होता है याने एक जहाज़ की तरफ़ की दुकान होती है जिसमें हर किसम की पीने की चीज़ें बिकती हैं व स्टेश्नरी का सामान व कुछ यात्रासम्बन्धी पुस्तकें होती हैं और कुछ बिसायत-खाने का सामान भी मिलता है। पब्लिक नोटिस वग़ैरह भी यहां ही टांके जाते हैं और दुतरफ़ा जहाज़ से यात्रा में जो स्टेशन आवें वहां पर उतरने का यहां ही प्रबन्ध है। एक तरफ़ राइटिंग-रूम होता है वहां सब लिखने पढ़ने का सामान होता है जिस पर बैठ कर यात्री घन्टों तक लिखा करते हैं।

इन दोनों कमरों से लगा हुआ एक बड़ा कमरा है यह सेकिन्डक्लास का स्मोकिङ्ग रूम है, इसमें १०० सीट के क़रीब प्रबन्ध हो जाता है और यात्री यहां ही बैठ कर बहुधा ताश, शतरंज आदि अनेक इनडोर गेम्स खेला करते हैं। ताश में ब्रिज खेल तो जहाज़ का और विशेष कर इस कमरे का खेल होता है जो बहुधा यात्रियों का एक विनोद है। इन कमरों के दोनों तरफ़ बरांडे होते हैं, जहां यात्री कुर्सियाँ लगा कर बैठते हैं और समुद्र की सैर करते हैं। और यही सेकिंड क्लास का डेक, इन कमरों के आगे जहाज़ के अन्तिम पिछले सिरे तक खाली

जगह है जहां यात्री दिन में बहुधा खेल कूद करते हैं, रात्रि में बहुधा महिला और पुरुषों का जोड़ा बना कर नाचते हैं और जहाज़ का बैन्ड सुरीला बाजा बजाता रहता है।

इकोनोमिक सैकिन्डक्लास याने थर्ड क्लास—तीसरे दरजे में भी यह सब प्रबन्ध होते हैं, लेकिन बहुत छोटे पैमाने पर और कैबिन छोटी होती है जिनमें छः सीट होती हैं। यात्री समानता को लिये हुये होते हैं और मेल जोल अच्छा होता है। यूरोपियन्स, इन्डियन्स सब ही होते हैं और बड़े २ आदमी भी कभी कभी होते हैं। बहुधा जिनका ध्यान फिज़ूलखर्ची पर नहीं होता वे तो इससे ही यात्रा करते हैं। पलङ्ग साफ़ सुथरे, नल ठण्ढे व गरम जल के व बैठक, खेल, वग़ैरह के कमरे सब ही इसमें होते हैं। सिर्फ कालीन और दिखावटी चमक भड़क नहीं होती। समझदार यात्रियों को इससे ही यात्रा करनी चाहिये। पहले खबर नहीं थी नहीं तो मैं भी ऊंची क्लास का रिटर्न टिकिट न लेकर इससे ही यात्रा करता तो रुपया बचता।

इस जहाज़ का एक काफ़ी भाग ऐन्जिन से घिरा हुआ है और ऐन्जिन क्या है जहाज़ और यात्रियों का प्राण है। इस ही ऐन्जिन से जहाज़ चलता है और औसत वेग १ घन्टे में २३ मील की है। इसही से रोशनी, इसही से चूल्हे सिगड़ी की अग्नि, इसही से ठण्ढे और गरम जल के नल, कैबिन कमरों में स्नानागारों में और इसही के ज़रिये से समुद्र का खार पानी भाफ में रूपान्तर किया जाकर मीठा व ठण्ढा किया जाता है। जहाज़ में सवार हुआ और यात्रा की तो खयाल था कि मीठा पानी भर लेते होंगे, लेकिन जब वापिस आते हुए इस जहाज़ से एक दुगुने बड़े जहाज़ को देखा तो मालूम हुआ कि उसमें बड़े २ बम्बे कितने ही

निरन्तर पानी फेंक रहे हैं। तलाश करने से पता चला कि समुद्र से पानी लिया जाकर वाष्प के ज़रिये से ठण्ढा व मीठा किया जाकर जो शेष होता है वह और जो यात्रियों के बरतने के बाद बचता है उसको ये बम्बे बाहर फेंकते हैं। जहाज़ के इसही ऐञ्जिन से सब जगह करैण्ट पैदा होकर जहाज़ में पहुंचती और जिमनेशियम् वा रेडियो में यही करैण्ट काम करती है। यहां तक कि बुहारी भी जो प्रति दिन फ़र्श पर दो बार लगती है वह इस ही करैंट से लगती है।

जहाज़ में कारखाने—जहाज़ में छापाख़ाना, धोबीख़ाना, सिलाई वग़ैरह जितने काम व कारख़ाने होते हैं सब जहाज़ के ऐञ्जिन से पैदा हुई करैण्ट से चलते हैं। इस जहाज़ में अनुमान से २५० या ३०० कर्मचारी हैं और मुख्य अफ़सर दो तीन हैं, सब में प्रधान सो जहाज़ का कमान्डर इस समय कप्तान बेन जोनियो (Cáp. Benejonio) है। फिर चीफ़ स्टुअर्ड, फिर परसर। चीफ़ स्टुअर्ड के नीचे कितने ही स्टुअर्ड होते हैं जो अलग २ क्लासों में भिन्न २ काम करते हैं और कैबिन वग़ैरह सब बटी होती हैं और पृथक् २ विभाग बटे हुए होते हैं। कितने ही कारीगर, बढ़ई, रंगाई वग़ैरह का काम करने वाले होते हैं, कितने ही रात दिन की सफ़ाई व संभाल किया करते हैं। कितने ही मल्लाही का काम करते हैं। कितने ही मिस्त्री और कितने ही क़ुली होते हैं। लेकिन पाकशाला और भोजनशाला में अच्छी तनख़्वाह और अच्छी तबियत के सज्जन कर्मचारी ही रक्खे जाते हैं, जो सेवाधर्म को खूब समझे हुए होते [illegible] अपने कार्य्य में प्रवीण होते हैं, कमरे को दो बार साफ़ करते हैं और ईमानदार ऐसे होते हैं कि कोई चीज़ गुमने की शंका नहीं है।

पाकशालाः—यूरोप में सर्वत्र और जहाज़ में विशेषकर सर्दी के खयाल से ज़मीन पर बैठकर कोई काम नहीं करता, पुरुष, स्त्री सब ही खड़े खड़े काम करते हैं, चुनाचे पाकशाला में जो भी चूल्हा बना होता है बिजली या गैस के सब राइटिंग टेबिल की ऊंचाई तक की टेबिल पर बने होते हैं और पाकशाला में अनेक कर्मचारी भिन्न २ तैयारियां बनाने वाले होते हैं। भोजन के समय का क्रम कुछ ऐसा रक्खा गया है कि विश्राम लेकर भोजन के समय कर्मचारी अपना २ व्यञ्जन तैयार करलें। यह कर्मचारी अपने २ चूल्हों पर अलग २ नियत समय पर भिन्न २ निर्देशित पदार्थ तैयार करते हैं।

भोजनशालाः—भोजनालय के स्थान का तो हाल ऊपर है ही, भोजनालय में हर टेबिल पर पानी की झारी, काच की मधुर शीतल जल की ग्लास और कपड़ों के बचाव के लिये अंगोछे व ओछाड़ मेज़ पर पहिले से ही होते हैं। भोजन के बर्तन कांटे, चाकू, चमचे यह भी रक्खे हुए होते हैं। तैयारियों की तश्तरियां व प्याले परोसने के समय परोसगारे, जिनको भी स्टुअर्ड कहते हैं, लाते हैं। ये स्टुअर्ड बड़ी और छोटी तनख़्वाह के सब के सब भोजनालय में सब जगह से इकट्ठे होकर आ जाते हैं और बड़े ही सभ्य, पटु और मधुरभाषी होते हैं।

भोजन करने की टेबिल पर बैठने के पहिले यात्री आपस में मिलकर यह तय कर लिया करते हैं कि आपस में कौन किसके साथ एक टेबिल पर बैठे, एक प्रकृति और सुभाव के जीमने वाले एक मेज़ पर बैठ सकें कि जिसमें जीमने व परोसने वालों को सुभीता होवे, क्योंकि मैं कट्टर शाकाहारी था इसलिये मुझको कोई साथी नहीं मिला और मैं अपनी मेज़ पर अकेला ही बैठता

था। मेज़ पर एक पत्र छपा हुआ रक्खा होता है जिसमें उस समय जो २ भोजन के पदार्थ बनाये जाते हैं लिखे होते हैं, स्टुअर्ड आकर पूछता है कि पहिले क्या लाया जावे, क्रमशः जो २ पदार्थ मँगाने होते हैं वे २ ही एक २ करके लाये व परोसे जाते हैं। इन परोसने वालों को मैंने पहिले ही समझा दिया था कि मैं कट्टर फलाहारी व शाकाहारी हूं मेरे पास व सामने कोई चीज़ अखाद्य न आवे, चुनाचे उन्होंने वैसा ही किया और आते व जाते दोनों समय एक खास स्टुअर्ड नियत कर दिया जो उन्हीं पदार्थों को लाता जिनके लिये मैंने समझा दिया था। जहाज़ के कर्मचारीगण बहुत अच्छे थे, कुछ यात्री मुझसे भी अधिक कट्टर थे वे कच्ची रसद लेते और उनके साथ ब्राह्मण रसोईदार था उससे अलग चूल्हे पर फुलके बनवाते व अपने साथ मँगौड़ी, पापड़, वेसन, सूखे शाक, जो जैनी होने के कारण ले गये थे, बनवाते थे। ये जौहरी जैन व वैष्णव थे इनसे जान पहचान हो गई थी इससे मैं भी दोपहर के समय भोजन करते समय कभी कभी कोई वस्तु मंगवा लेता था। कभी तिहरी चावल, गोभी, आलू, मटर को अपने आप मक्खन डालकर बना लेता, वरना जहाज़ से मक्खन, मलाई, दूधमलाई की वर्फ, कोर्नफ्लेक सब्ज़ मेवे जो लगभग सब प्रकार के होते हैं और टोकरी भर भरकर रक्खे जाते थे खाकर संतुष्ट होता था। व सूखे मेवे बादाम, अखरोट, छुवारे, खजूर, खुरमानी, मुनक्का व तले हुए आलू, अदरख वगैरह व अचार मुरब्बे चटनियें इतनी और ऐसी मिलती थीं कि घर का सा पूरा आनन्द था। इसके उपरान्त एक घण्टे पहिले स्टुअर्ड को कहने से हरप्रकार का प्रबन्ध भोजन का कर लिया जा सकता था। गर्मी की ऋतु थी पांच सात तरह की मलाई की वर्फ बनाते थे, जल बड़ा ही ठंढा मधुर मिलता था, कभी कोई बात की न्यूनता न थी।

बेचारे जहाज़ वाले शाकाहारियों की तरफ़ ध्यान भी अधिक देते थे, कारण शाकाहारी का भोजन उत्तम मेवे रसाल व मलाई मक्खन मिश्री होने पर भी केवल ५) रोज़ से ज्यादे खर्चे का न था और मांसाहारियों के भोजन अनेक थे उनकी क़ीमत सुनने में आया १०) रुपये प्रतिदिन से कम न थी।

भोजन के पांच समय थे—प्रथम सवेरे विस्तरों ही में कोई, विशेष कर पाश्चिमात्य, चाह पिया करते थे, दूसरा ब्रेक फास्ट (Break fast) कलेवा, इसका समय ७॥ बजे से ६ बजे तक का था। इसमें सब ही को सूक्ष्म भोजन निरामिषी करना पड़ता है।

तीसरा मुख्य भोजन लंच:—इसमें हर प्रकार के दस या पन्द्रह तरह की तैयारियां बनती हैं और समय १२॥ बजे से १॥ बजे तक का है।

चौथा तीसरे पहर की चाय:—इसका समय पांच से साढ़े पांच तक का होता है और चाय के सिवाय काफ़ी वग़ैरह भी बना देते हैं।

पांचवां रात्रि का भोजन-व्यालु:—इसमें भी सब तैयारियां होती हैं और ८ से ६ बजे तक का समय होता है, इन समयों के उपरान्त यदि कोई कुछ लेना चाहे तो क़ीमत से मिलता है, किन्तु उपरोक्त समयों के अन्दर कोई भी चीज़ ली जावे तो सब किराये में शामिल होती है।

किराया दर्जों के अनुसार बम्बई से जिनोवा तक ६५०) रु० से लेकर १३००) रु० तक आने जाने का इस जहाज़ का है और किराये ही में मार्ग का भोजन व्यय भी शामिल होता है।

विदेश-यात्रा के लिये जहाज़ का जीवन एक प्रवेशिका की परीक्षा है। ऊपर के हाल से यह तो मालूम हो ही गया कि सुख और सम्भोग के सब ही साधन उसमें उपस्थित हैं और क्योंकि क़रीब १५ दिन एक जगह एक साथ सब यात्रियों को रहना पड़ता है, इसलिये सब यात्री एक कुनबे की तरह हो जाते हैं। जो जिस प्रकृति का होता है उसका उससे ही मिलान हो जाता है और १५ दिन का गाढ़ परिचय एक घनिष्ठ मैत्री में परिवर्तित हो जाता है। यात्री दूर दूर देश के, भिन्न २ जाति के और भिन्न २ श्रेणी के होते हैं। कई तो बड़े विद्वान् होते हैं और कई विद्या विशेष या कारीगरी के धुरन्धर पण्डित होते हैं, कई सिविलि-यन्स, कई इन्जीनियर्स और कई डाक्टर होते हैं। कई शिल्प-शास्त्र के वेत्ता और नामी विख्यात विद्वान् होते हैं। कई उच्च-कोटि के व्यापारी होते हैं, जो विदेश का अनुभव प्राप्त करने जाते हैं। ये यात्री तो सर्वदा इस चेष्टा में रहते हैं कि आपस में एक दूसरे से मिलें, उनके देश का हाल जानें और पारस्परिक अनुभव से लाभ उठावें।

विद्यार्थियों की संख्या इस जहाज़ में अधिक होती है। जो विद्यार्थी केवल विद्यानुराग के लिये जाते हैं उनके लिये जहाज़ का जीवन बड़ा ही लाभदायक होता है और वे विद्यार्थी जिनका यह विचार होता है कि विद्या तो अमुक नगर में और अमुक कालेज व संस्था में जाकर सीखेंगे, जहाज़ में तो ज़रा आराम करें, अपने आपको माता पिताओं के बन्धन से मुक्त हुआ मानकर रात दिन खाने, पीने, खेलने, कूदने में ऐसे लगते हैं कि यूरोपियन जीवन का पूरा रंग उन पर चढ़ जाता है और विद्या प्राप्त करने के पहिले अपने भारतीय खाने, पीने, रहन, सहन, पहनाव

का ढंग छोड़ पूरे यूरोपियनाइज्ड हो जाते हैं और कई विद्यार्थी अपनी नववधुओं को भी साथ लेजाते हैं जिनकी रक्षा तो केवल परमात्मा पर ही निर्भर है; लेकिन उम्र पाये हुए यात्रियों को आपस के व्यवहार से अनेक लाभ पहुँचते हैं।

जाते वक्त मुझसे भी कई पुराने मित्र डाक्टर मुंजे आदि से भेट हुई और कितने ही नये यात्रियों से जान पहचान व मित्रता हुई जिनका यथास्थान वर्णन होगा। रोमन कैथोलिक लोग बहुधा इस जहाज़ में अधिक होते हैं, क्योंकि इटैली देश का प्रधान धर्म रोमन कैथोलिक है। इसलिये इसके पादरी सेकिंड क्लास के लिखने के कमरे में प्रातःकाल और विशेषकर रविवार के दिन इस कमरे को गिर्जा का रूप देकर अपने धर्म कृत्य में लवलीन होते और सब श्रेणी के यात्री इस धर्म को माननेवाले इसमें इकट्ठे हो जाते हैं।

जहाज़ में हिन्दुस्तानी अधिक देखकर मैंने भी डाक्टर मुंजे से कहा कि अपन हिन्दू भी काफ़ी संख्या में हैं, अपन भी शाम को इकट्ठे हों और प्रभु-भजन कीर्तन में लगें। मेरी बात को मानकर डाक्टर मुंजे ने चीफ़ स्टुअर्ड से पूछकर फ़र्स्ट क्लास कैबिन में इकट्ठे होने के लिये नोटिस निकाल दिया। इस पर कमाण्डर ने कुछ ऐतराज़ किया और हिन्दू, जो स्वभाव से ही भीरु होते हैं, इकट्ठे होकर बिखर गये, लेकिन वापिस आते समय कई नोटिस निकले, कई सभाएं हुई और एक आखिरी सभा पोलिटिकल व सोशियल विषय को लिये हुए हुई। विषय था कि भारतवर्ष में सेवा करने के अब क्या क्या मौके हैं (Opportunities to serve India) इसमें मैं भी मुख्य बोलनेवालों में से था। लार्ड सिंहा प्रधान थे, डाक्टर कटियाल,

भारतवर्ष के असोसियेटेड प्रेस एडीटर मिस्टर आयंगर, अतिया बेगम साहिबा, डाक्टर डी० एल० मैत्रा कलकत्ता के व कई अच्छे २ वक्ता थे व दोसौ प्रसिद्ध यात्री थे।

सीसिकनेस—जहाज़ के रवाना होने के थोड़ी देर याने तीन घन्टे बाद चक्कर आने लगा और वमन ऐसी ज़ोर की हुई कि जो आगे तीन नकली दांत थे वमन के साथ गिर गये और बेचैनी इतनी हुई कि सवेरे पता चला कि नकली दांत गायब हैं, गर्मी भी बहुत ज़ोर की थी मेरे मित्र स्केल्टन साहब ने मेरी कुर्सी डेक पर एक अच्छी जगह बिछवाई और मुझको हर वक्त सम्हालते रहे। मैंने दो रात एक दिन तक कुछ न खाया और गर्मी के कारण डेक के ऊपर कुर्सी पर ही सोता रहा। मेरा ही यह हाल न था लेकिन सबका कमो बेशी यही हाल था। तीसरे दिन तबियत बिलकुल साफ हुई और भूख भी खूब लगी। स्टुअर्ड का भी वर्ताव खूब अच्छा रहा, हर समय आकर पानी वगैरह की संभाल कर लेते थे। साढ़े तीन दिन समुद्र में चलने के बाद ज़मीन दिखलाई दी और यह ज़मीन एडन की थी। ता० १६ की रात को ४ बजे के क़रीब एडन पहुंचे, उस समय अंधेरा सा था, उजाला होते ही किश्तियों में चन्द व्यापारी सिगरेट, जूते, विलायतखाने का सामान लेकर आवाज़ लगाने लगे और क्योंकि मेरे स्लीपिंग शूज़ का टांका निकल गया था मैंने एक नया स्लीपिंग शूज का जोड़ा १॥) रु० में लिया और कुछ एडन की तस्वीरें लीं और एक राज़ी खुशी का तार घर को दिया। दो तीन क़िश्तियों में रुपया बदलने वाले सराफ़ भी बैठे थे, जिन्होंने बम्बई से अच्छे भाव पर रुपया बदला। कई साथी यात्रियों ने रुपया हिन्दुस्तान का देकर पौंड शिलिंग कराये। जहाज़ यहां

अधिक न ठहरा केवल तीन चार घण्टे ही ठहरा और फिर चल दिया इसलिये जाते वक़्त जहाज़ में बैठे हुए ही अदन को देख सके। यह अदन अंग्रेज़ों का बन्दरगाह है और पहले बम्बई अहाते के नीचे था अब भारत सरकार के नीचे है। अदन से कई मुसलमान लोग आये और दो चार सवारी साथ यात्रा में हुईं। क़िश्तियों में जो व्यापारी आये थे वे मुसलमान थे। ये व्यापारी लोग अपनी क़िश्ती में से रस्सी फेंकते और चटाई के बटवे में बांधकर चीज़ पसंद कराने को रखते, रस्सी खींचने से चीज़ ऊपर आ जाती और ख़रीदने वाला चीज़ रख लेता और रुपया उसी चटाई के बटवे में डालकर उतार देता। अदन के पहाड़ बिलकुल गंजे थे और गर्मी बड़ी तेज़ थी।

स्थान विक्टोरिया जहाज़
ता० १८-६-३२

चिरंजीविनि कमला! आशीर्वाद,

आपकी प्रिय माता को शुभ संवाद। मैं अत्यानन्द में हूं। आपको कल मैंने जो तार दिया था उसमें यह लिखा था:—

कमला खोसाली, आकूजी वाला जयपुर, राजपूताना "आनन्द से जहाज़ में बैठकर आगे बढ़ रहे हैं।" इस वक़्त पढ़ रही होगी और मा बेटी आनन्द में मग्न होंगी। ये पत्र अच्छी तरह से रखना, सब सीते जाना, नत्थी करना, जुगलकिशोरजी को पढ़ा देना। जो पढ़े उसको पढ़ा देना, फाड़ना मत, यही वृत्तान्त एक पुस्तक के रूप में हो जावेगा। इजिप्ट जाने के लिये अभी साथी नहीं

मिला है, कारण कल रात को १२ बजे स्वेज कैनाल में जहाज़ पहुंचेगा, उसही वक्त जहाज़ में से उतर कर सोनेवाली मोटर में बैठना होगा। बयावान में होकर मोटर चार घण्टों में शहर क़ैरो में पहुंचेगी सब इजिप्ट देश देखने में आवेगा। यहां दुनियाँ की दिलवाड़ा (आबू) के मन्दिरों के समान कई अजीब चीज़े हैं। सोमवार को कुछ कम देखने को मिलेगा। [क़रीब १००) रु० खर्च २४ घण्टे में होंगे, मैं अवश्य जाऊंगा। कदाचित् दो चार मोटरें हो जावेंगी, सब बन्दोबस्त जहाज़ वालों का होगा, सब आनन्द की बात है स्वेज से जहाज़ तो रवाने एक घण्टे बाद होगा और १५ घण्टे में पोर्ट सैयद पहुंचेगा और हम रेलगाड़ी से इजिप्ट की सैर करते हुए रात के १० बजे सोमवार को जहाज़ में आ मिलेंगे और फिर यूरोप इटैली को रवाना हो जावेंगे। यहां पर ही सब फालतू सामान जहाज़ वालों के सुपुर्द कर दिया कि लन्दन में टामस कुक के ज़रिये हमको मिल जाय।

हमने ६ पौं० १० शि० में मिश्र देश देखने का टिकट खरीद लिया है, २४ घण्टे इजिप्ट की यात्रा में लगेंगे। खाना खुराक और सवारी राहदारी की चुङ्गी वगैरह सब इसमें शामिल है, रात्रि को सोनेवाली मोटरकार में सोते हुये जावेंगे, साथ में क़रीब १० साथी हैं। आज तो सरदी मालूम पड़ती है कल तो बहुत गर्मी थी अब रैडसी (लालसागर) पार करने वाले हैं मध्य-सागर मैडिट रेनियन सागर आवेगा यहां से यूरोप शुरू हो जावेगा, ठंढ ही रहेगी।

स्थान क़ैरोनगर (मिश्र) इजिप्ट देश, सेवाय होटल
ता० १९–६–३२, समय बारह बजे दिन के

चिरंजीविनि कमला ! आशीः,

मैं इस समय इजिप्ट की राजधानी क़ैरोनगर में राजप्रासाद के पास सेवाय होटल में बैठा हूं। सवेरे ६॥ बजे से १२ बजे तक मोटर व ऊंट पर बैठकर खूब सैर की, अब फिर तीन बजे से ६ बजे तक सैर के लिये जावेंगे। रात को १०॥ बजे जहाज़ में वापिस जाकर बैठ जावेंगे। रात भर मोटर में रहे, बाक़ी यहां की सैर करने के बाद में यहां का हाल लिखेंगे। अभी तो पीरेमिड्स और क़ैरो शहर ही देखा है। यहां सब औरतें काला कपड़ा पहनती हैं, सिर्फ आंख खुली रखती हैं, नाक पर भी पर्दा डालती हैं। हैं तो खूबसूरत पर लम्बे काले कपड़े से चुड़ैल सी दीखती हैं। मर्दों में २ स्टाइल हैं एक कोट पतलून, टर्की टोपी नये अंग्रेज़ी पढ़ों का और दूसरे पुराने फैशन के एड़ी तक कुर्ते वालों का।

नाइल नदी के, जो दुनियां में गहराई के हिसाब से सब से बड़ी कही जाती है, उत्तर के किनारे पर यह शहर है। ५००० वर्ष का पुराना है, इसके दो हिस्से हैं। एक अंग्रेज़ी तर्ज़ का, दूसरा पुराने तर्ज़ का। पुलिस यहां खूब सजी रहती है और इमारतें बड़ी आलीशान हैं। नाइल नदी के किनारों को छोड़ १०००० हज़ार मील तक बयावान है, जहां देखने को पत्ता भी नहीं। मवोरे और खरबूज़े इतने हैं और ऐसे हैं कि कहीं पहिले ऐसे नहीं देखे। गाड़ियों और गदहों पर हज़ारों की तादात में लदे आते हैं।

ईजिप्ट मिश्र देश की स्त्री, पर्दा और पहनाव
पृष्ठ २६, २८

स्थान विक्टोरिया जहाज़
ता० २०-६-३२

चिरंजीविनि ! आनन्द में रहो,

क़ैरो नगर (इजिप्ट)—कल इजिप्ट से आते ही एक पोस्टकार्ड तुमको डाल चुका हूँ । तार तुम्हारा मिला, तार तो जयपुर से १२ घन्टे में ही आगया था, लेकिन मैं इजिप्ट चला गया था, इसलिये १ दिन देरी से मिला, तार मिलते ही बड़ा आनन्द हुआ । शायद यह मेरे तार के जवाब में था । वहां इजिप्ट क़ैरों में तुमको पत्र लिखकर फिर ज़रा नींद आगई, फिर खाना खाया । फिर बाज़ार के वरांडे में बैठा तो दर्जनों विसायती तस्वीर बेचने वाले वग़ैरह आगये, कुछ रुपये हमने भी खर्च किये और कुछ तस्वीरें लीं, फिर मोटर में सवार होकर गये ।

पहले एक मसज़िद देखी जिसमें चार दालान बड़े ऊंचे थे, १८५ फ़ीट की ऊंचाई पर महरावें लगी थीं उसके अन्दर एक मकवरा बड़ा ऊंचा था । नैपोलियन बोनापार्ट ने इस मक़बरे पर गोले बरसाये थे जिनके निशान मौजूद हैं । फिर जहां अंग्रेज़ी फौज रहती है वहां गये देखा तो पाया कि अंग्रेज़ों का पांच वर्ष पहिले पूरा प्रभाव ही नहीं बल्कि यहां के राजा थे । फिर एक मक़बरे में गये जो क़रीब २०० फीट ज़मीन से छत तक था । सोने के काम के बहुत अच्छे लदाव से बना हुआ था । क़रीब ४००० (चार हज़ार) या ५००० (पांच हज़ार) आदमी अच्छी तरह बैठ सकते हैं । मैंने इससे विशाल और कोई भवन पहले कभी नहीं देखा और अब देखूंगा जो लिखूंगा । फिर इस मक़बरे की छत पर से शहर क़ैरो देखा, वास्तव में मकान सुन्दर व ऊंचे बने हैं और विशेष कर जो मकान अब नये बनाये जारहे हैं या अंग्रेज़ी क्वार्टर्स में बने

हैं बड़े विशाल व अच्छे हैं। आदमी ज्यादातर मुसलमान हैं। पुराने शहर क़ैरो को देखा, बाज़ार तंग है। स्त्रियां वहां कैसे रहती हैं सो तुमको लिख दिया। तस्वीर तुम्हारे पास भेजता हूं लेकिन अब घूंघट उठ रहा है, करीब १० वर्ष में शहर से घूंघट जाता रहेगा ऐसा मेरा अनुमान है।

इस नगर का एक भाग कबरिस्तान में लगा हुआ है। जहां फिरकों व खानदानों की कबरें हैं, अहाते खिंचे हुए हैं और ठहरने के लिये कुछ मकानात बने हुए हैं जहां उस खानदान व फिरके के आदमी वार त्यौहार पर जाते हैं और इस भाग में ऐसे अवसरों पर मेला सा प्रतीत होने लगता है। गोठ घूघरी होती है और उत्सव होते हैं।

इजिप्ट का प्राकृतिक वर्णन व ग्रामीण-जीवन—जहाज़ से उतर कर क़ैरो इजिप्ट को जाते वक्त एक भी गांव न पड़ा और न एक वृक्ष ही मिला, न वृक्ष का पत्ता या पानी दिखा। बड़ी ठंढ। हवा चली और इरंडी, चद्दर ओढ़ी, खूब भिड़ कर बैठ गये। यहां इजिप्ट में नाइल नदी ही प्राण है अगर नाइल नदी न हो तो सब मर जावें।

मिट्टी चिकनी नहीं किन्तु बजरी के मुआफ़िक है और नीचे पत्थर मालूम होते हैं। नाइल नदी से नहरें निकली हैं जिससे खेती होती है और खेती में अधिकतर रुई देखी। यहां की रुई मुलायम व सब से ज्यादा क़ीमती होती है। यहां इस समय अनाज काटा जाकर खेतों में पड़ा था। गाय, बैल अधिकतर लाल रंग के देखे। गदहों व खच्चरों से खूब काम लिया जाता है। फलों में अंजीर, खुरमानी देखी। खूबसूरत कलसों में शरबत व पानी बिकता है। एक रुपये में ६ प्यार नाम के सिक्के चलते हैं। प्यार
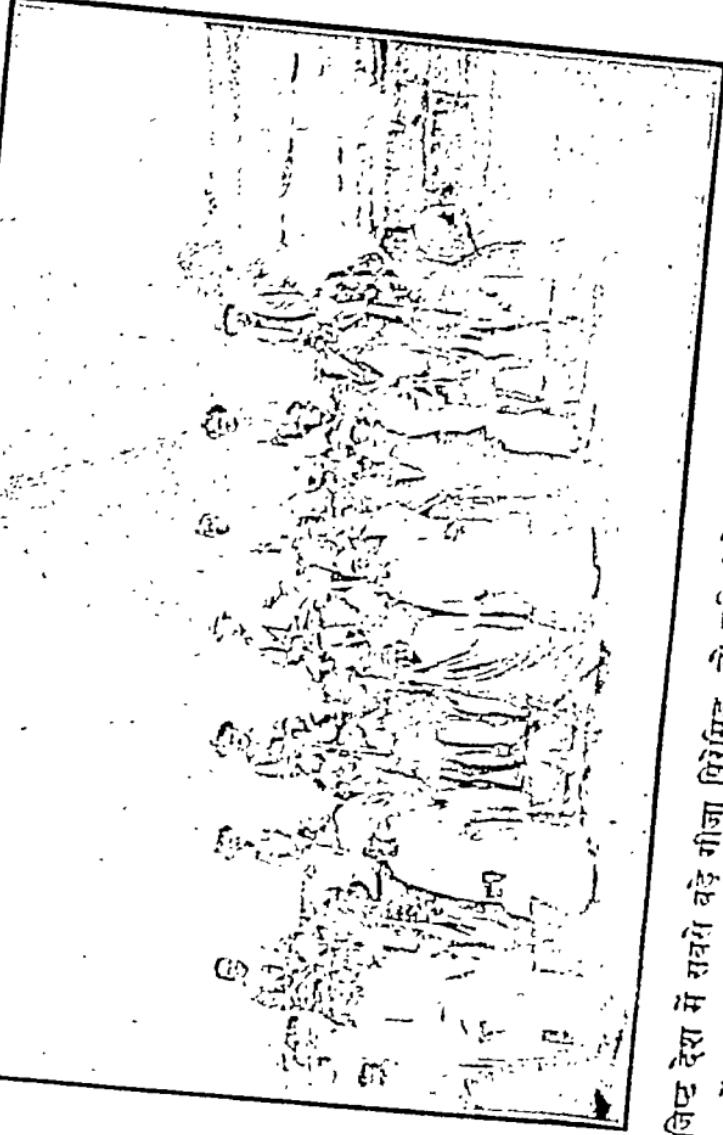
ईजिप्ट देश में सबसे बड़े गीजा पिरेमिड, जो दुनियां के सात अद्भुत चीजों में से एक है, उसकी जड़ों पर ऊंट पर सवार ग्रंथकार श्रीयुत सेठ गणेशनारायणजी सोमानी का ग्रूप फोटो, पास में ईजिप्ट के सिंफक्स पत्थर की विशाल आदमी का चहरा और सिंह के धड़ की मूर्ति भी है

पृष्ठ २६

में बीच में छेद होता है। इससे नीचा सिक्का हमको तो नहीं दिया, ज़रूर होता होगा। नदी से अच्छी रौनक़ है। पेड़ ज्यादा बड़े नहीं लेकिन सुन्दर हैं। ग्रामीण मनुष्य छः कलिया कुरता पहिनते हैं और स्टेशनों पर व शहर के अन्दर ४० फी सैकड़ा आदमी टूटी फूटी अंग्रेज़ी में समझते हैं व बोलते हैं।

"स्त्रीचरित्रं पुरुषस्य भाग्यं न जानाति देवो कुतो मनुष्यः" यह नीतिवाक्य बिलकुल ठीक है। १८०० ई० में एक अरबी मुसलमान का लड़का यहाँ आकर नौकर हुआ था और फिर राजा बन गया, यहां अभीतक उसही के खानदान के राज्य करते हैं।

यहां ग़ल्ला सब तरह का होता है, बोली अरबी है और काला नीले रंग का ज्यादा पहनावा है। बाज़ार चौड़े और साफ़ हैं। सिलावट और चित्रकार ज्यादा हैं। मोटर, ट्राम्बे और घोड़ागाड़ी हैं। घोड़े भी अच्छे हैं। चिरंजीविनि! यहां पिरेमिड देखे। २० वर्ष तक १००००० (एक लाख) आदमियों ने काम किया। २५००००० (पच्चीस लाख) लगे हैं और कोई भी पत्थर १०० मन वज़न से कम का नहीं है किन्तु कोई २ तो ५०० मन का भी है। लागत ३,५०००० (तीन लाख पचास हज़ार) पौंड है। इस गीज़ा पिरेमिड की ऊंचाई ४८१ फ़ीट, लम्बाई ७५० फ़ीट है। नदी पार करके पत्थर कैसे लाये। सड़क यहां तक बनाने में १० वर्ष लगे। पिरेमिड कुल ६ हैं, उनमें दो तो बड़े और बाक़ी छोटे। ऐसे ही एक सिंह का शरीर और आदमी के चेहरे वाली मूर्ति (Sphinx) बड़ी लम्बी चौड़ी है। मेरे फोटो की तस्वीर में पिरेमिड का यह पूरा दृश्य आ गया है। मैं इस गीज़ा पिरेमिड के अन्दर गया, एक छोटी सी नाली देखी जिसमें सीढ़ी लगी है, वहां जाकर देखा कि जिस बादशाह ने इसको बनवाया

उसकी क़बर है। शव कोई दूसरा बादशाह निकाल कर लेगया। यह पिरेमिड दुनियां की सात अजायबातों में से एक है, परन्तु मुझको इसकी उपयोगिता समझ में नहीं आई। इतनी लागत, इतनी मेहनत से पत्थर, चूना इकट्ठा कर देना क्या मतलब रखता है? यदि दुनियां में ऐसी चीज़ बनाता जो सर्वोपयोगी होती तो यादगार सच्ची थी। मैं तो अपने महाराज रामसिंहजी को सच्चा राजा समझता हूं कि जिन्होंने अमीर ग़रीब सबके लिये बाग़ रामनिवास बनाया जिसके मुक़ाबले का अबतक कोई बाग़ नहीं है, रामनिवास बाग़ और बढ़ाया जावे यहाँ तक कि महल (Albert Hall) बीच में आजावे तो यह सर्वोत्कृष्ट बाग़ होजावे।

स्थान विक्टोरिया जहाज़
ता० २१-६-३२

कल १५ दिन तुमसे बिछड़े होंगे जिसमें ५) रु० के खर्च से एक तार कुशल समाचारों का आया। चिरंजीविनि! तुम्हारी माता आनन्द में होंगी अब तो जयपुर में ही आने से सच्चा हाल मालूम होगा। आज यहां ठंढ है अब मैं भी दो रात से अपने कमरे में सोता हूं और आनन्द में हूं। कल से इस मैडिटरेनियन सी. यूरोप का मध्यसागर का कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा है कि खूब दिन रात नींद आती है और कुछ कुछ जी भी मिचलाता है। सब मुसाफिरों का, विशेष कर हिन्दुस्तानियों का। अब केवल ४० घन्टे और जहाज़ में चलना है फिर नैपिल्स में उतर जावेंगे वहां से तार या चिट्ठी देवेंगे और सब आनन्द है।

स्थान विक्टोरिया जहाज़
ता० २२-६-३२

चिरंजीविनि कमले !

अब सिर्फ अठारह बीस घण्टे जहाज़ से उतरने के हैं और कल सवेरे नैपिल्स में उतरेंगे। सर शादीलालजी का साथ इटैली में एक हफ़्ते तक रहेगा। नैपिल्स में ता० २४ तक ठहरेंगे, रोम ता० २५ व २६ और २७ तक ठहरेंगे ता० २८ के दिन फ्लोरेंस ठहरेंगे। फिर मिलान में ठहरेंगे। फिर मैं पेरिस होता हुआ इंगलैंड चला जाऊंगा और पैरिस या लंदन से भी तार आवेगा और आज उस ब्राह्मण का तला पापड़ भी खाया। प्रतिदिन ३ सेव, ४ नारंगी, ३ केले, अखरोट, बादाम, खजूर, छुवारे, चावल, दाल यह खाना है और कल से क्या मिलता है लिखूंगा।

इटैली बहुत पुराना देश है इसमें रोम और नैपिल्स साढ़ आठ लाख आदमियों की बस्ती के पुराने शहर हैं। एक शहर पोम्पियाई ज्वालामुखी पर्वत से गड़ गया था फिर खुदा के दो हज़ार वर्ष पीछे निकला था वे सब कल देखेंगे। विसुवियस ज्वालामुखी पर्वत भी कल देखेंगे। आनन्द में रहना।

तृतीय अध्याय

यूरुप का प्रथम दर्शन

स्थान होटल मैट्रोपोल, नैपल्स (इटैली)
ता० २३-६-३२, रात के ग्यारह बजे

चिरंजीविनि कमले ! आशीः,

पोर्ट सैयद से नैपिल्स का कोस्ट—अपनी माता के साथ आनन्द में रहो, आज सवेरे ७ बजे यहां जहाज़ पहुँचा, परन्तु कल रात को समुद्र की शोभा अपार थी। दो तरफ़ पहाड़ और सजल हरियाली के पहाड़, उन पर बिजली की रोशनी और उनकी समुद्र में दमक देखे बन आती थी और हम समुद्र के बीच में थे। एक दो दफ़ा ऐसा भी हुआ कि रात्रि में कोई जहाज़ पास होकर निकला है। दूर से यह दूसरा जहाज़ बिजली की रोशनी वाला ऐसा दीखता था मानो छोटा टापू बसा हुआ है।

विसूवियस पर्वत का मार्ग—सात से नौ बजे तक दो घंटे तो जहाज़ का हिसाब निपटाने और इनाम देने तथा सर शादी-लालजी को साथ लेने में लग गये। जहाज़ से उतर कर हमारे पंडे टामस कुक के आदमी को लिया जो जहाज़ पर ही आगया था। राहदारी पहुंचे, सम्हाला दिया, फिर पण्डे की मोटर में बैठकर पण्डे के दफ़्तर में गये। वहां से उसके दफ़्तर से लगे हुये ही इस होटल में आये। सामान रख कर, कार में बैठकर ज्वालामुखी

नगर नेपिल्स का वृहत् दृश्य, नीचे समुद्र का किनारा और ऊपर संसार का सबसे बड़ा ज्वालामुखी पर्वत विसूवियस व पाइन वृक्षों की अनुपम सुन्दरता

पृष्ठ ३३, ३६
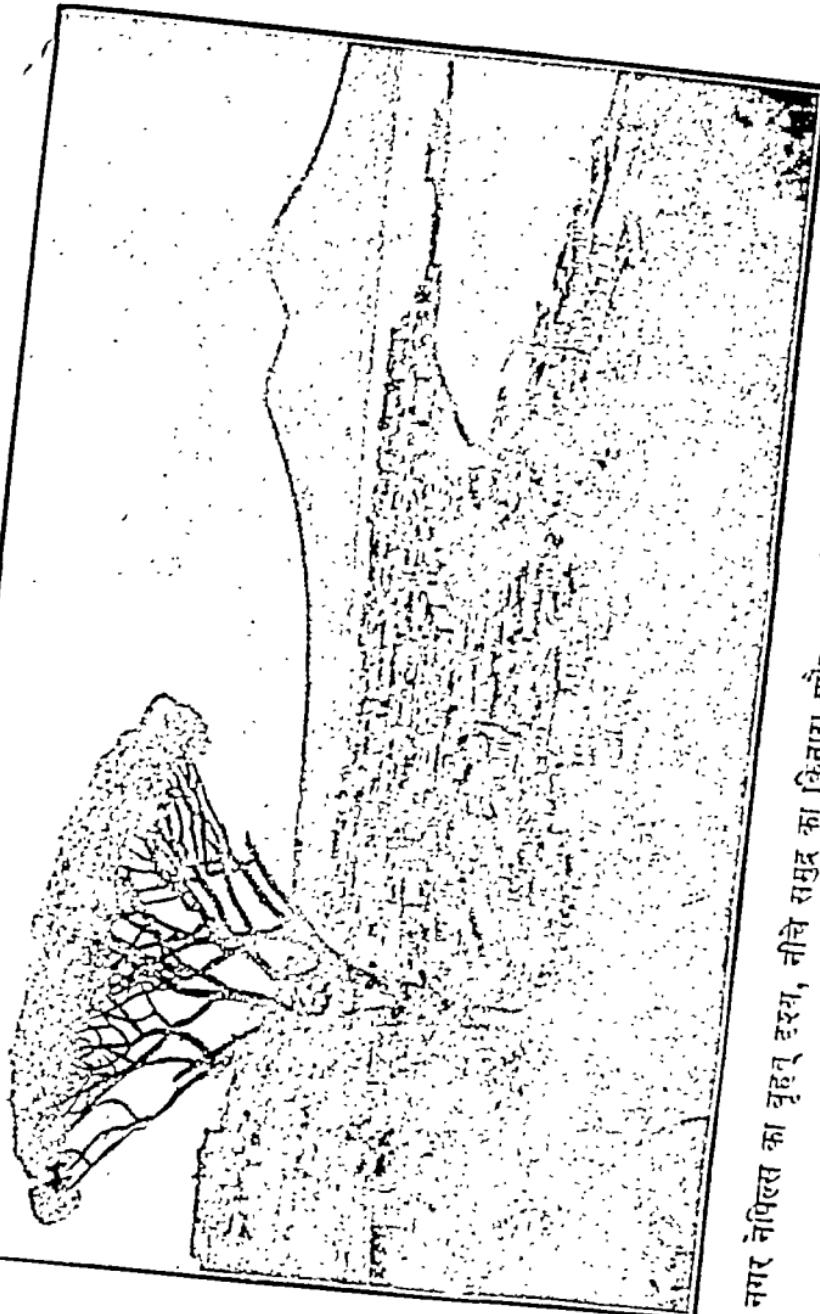
पर्वत, विसूवियस की तरफ़ चले। रास्ते में कुए से सींचे जाने वाले खेत देखे जो शायद महीने दो महीने में सींचे जाते हैं और पहाड़ की चढ़ाई तक खेत से खेत भिड़े पाये। अंगूर, खुरमानी, आलूबुखारे, सेब, आड़ू वग़ैरह के बड़े पेड़ व बेल के नीचे टमेटर, सेम और धोरों में मक्का सैकड़ों कोसों में बोई हुई थी। हरएक कृषक व कृषिका हँसते, मुझको सलाम करते और राजा समझते थे। कोई फूल, कोई फल, कोई कुछ देता, मैंने ऐसी फलों की खेती पहिले कभी नहीं देखी। फिर टॉमस कुक की रेल में, जो बिजली से चलती है, बैठे। ऊपर ज्यों ज्यों चढ़े ठंढ के मारे कांपने लगे। चढ़ाई में ४० फीट ढलाव तक तो जैसे बना वैसे काम चला, जब ६० फीट ढलाव पर आगे बढ़े तो ढलाव बहुत कम प्रतीत होने लगा और दूसरी रेल को हमने चढ़ते हुए देखा तो ऐसा मालूम होता था कि अभी गिरी। अब हम वहां पहुंचे तो गाड़ी बदली और एक २ कोट हमको ओढ़ने को दिया गया। ठंढ से तो बचे। एक गाड़ी उतरते देखी तो पता चला कि नीचे बिजली का तार ऊपर की तरफ़ उस गाड़ी को खींचता है और ऊपर का तार ढकेलता है।

विसूवियस की शिखर—ज्वालामुखी पर पहुँचे तो पत्थर, धातु इत्यादि के पिघले हुए के समुद्र से थे जिनके बहाव से नीचे के गांव, क़स्बे व शहर बुर गये थे, उनमें से एक बड़ा नगर पोम्पीयाई २ हज़ार वर्ष पहिले बुरकर औसत दर्जे २५ फीट पिघले पत्थर के थर से ढक गया था, इसका हाल नीचे लिखेंगे। ठेट चोटी पर पहुँचे जहां से आग व धुआं निकलता है, अद्भुत दृश्य था। नीचे तो अथाह समुद्र, बीच में फलों के खेत और बस्ती और ऊपर ज्वालामुखी। प्रभु की लीला वर्णन नहीं की

आसकती। फिर वहां से उतर कर पंडे के यहां १॥ बजे भोजन किया, कलेवा जहाज़ में किया था।

वहां से चलकर पोम्पियाई नगर में पहुँचे। ब्यावर राजपूताना के शहर से कुछ बड़ा है और कहीं ४० फ़ीट के क़रीब पिघले पत्थरों लावा की गहरी थर से क़रीब २००० वर्ष पहिले बुर गया था। किसी को पता नहीं की नीचे क्या है। हम जब लड़के थे यानी क़रीब ४० वर्ष पहिले की बात है, तब हमने पढ़ा था कि किसान खेती करते थे और कुए खोदते थे, खोदते २ कुछ बर्तन निकले और नीचे खोदा तो मकान निकले और अधिक खोदा तो आदमियों की लाशें निकलीं, ज्यों २ खोदते गये त्यों २ सारा शहर जैसा का तैसा निकल आया। वह शहर आज हमने देखा, मकानों की आरायश तो जयपुर जैसी थी। ३००० वर्ष पहिले की दुनियां में पहुँच गये। सड़कें, मकान, न्यायालय, मन्दिर, राजभवन, नाटकघर, घुड़साल, बाज़ार और शराबखाने सब ही देखे। अम्पोथियेटर बहुत ही बड़ा, बीच का अखाड़ा बैजाकार और उसके चारों तरफ़ उतार चढ़ाव की गैलेरियां हैं जिनमें क़रीब २०००० हज़ार आदमी बैठ सकते हैं। घुसते ही एक म्यूज़ियम व प्रदर्शिनी खुली हुई थी जिसमें गड़े हुए सामान के कुल नमूने दिखलाये गये हैं, उन नमूनों में एक पलङ्ग पर लेटा हुआ जो मनुष्य निकला है वह भी है। हर तरह के बर्तन, सोने चांदी के ज़ेवर, बोतलें, कांसी, पीतल, लोहे के रसोई बनाने के बर्तन व फरनीचर था, कुछ सिक्के भी थे। मेरा ध्यान कुछ मिट्टी के बर्तनों पर ज्यादा दौड़ा, क्योंकि बहुत बड़े लाल रंग के और कई शकल के थे और ऐसे दीखते थे मानो अभी बने हैं। बाज़ारों की सड़कें गुनिया में थीं और चौराहे भी गुनिया में थे। रोमन और ग्रीक दोनों स्टाइलों की
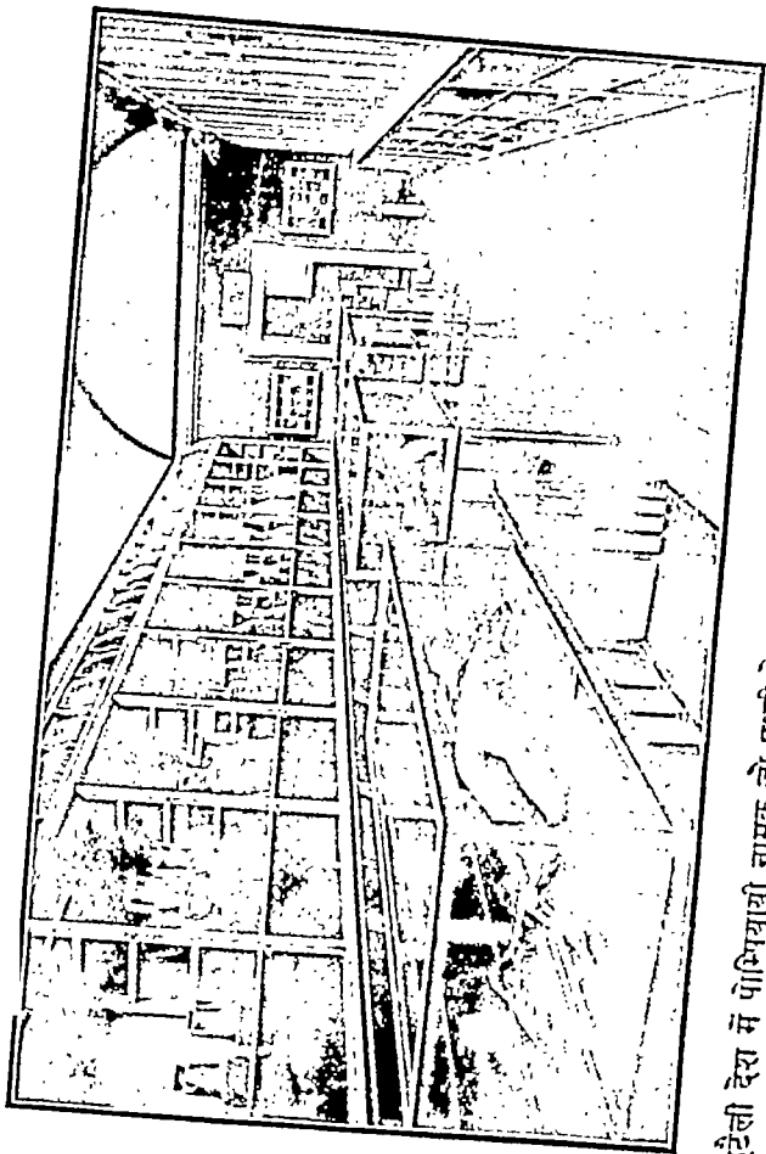
इटैली देश में पोम्पियायी नामक जो पृथ्वी के अन्दर २००० वर्ष पूर्व गड़ा हुआ नगर निकला उसके द्वार पर गड़े हुए सामान की प्रदर्शिनी का म्यूज़ियम

पृष्ठ ३४ व ३५

इमारतें थीं, रोमन स्टाइल के ऊँचे थम्बे थे जिनके सिरों पर कुराई ऐसी मालूम होती थी मानो अभी हुई हो। मकानों के दरवाज़े बड़े ही ऊंचे और तरह २ के थे। रोमन और ग्रीक देवताओं के मन्दिर भी कई थे, जैसे—ज्यूपिटर, मारस, अपोला आदि।

कई जगह फंवारे और कई जगह खूबसूरत मूर्तियें ज्यों की त्यों खड़ी निकलीं, छतों का रंग और उनका चित्राम बड़ी कारीगरी का था और फर्श भी कई तरह का मोज़यिक स्टाइल का निकला। मकानों की चुनाई छोटी ईंटों की भी थी और सुडौल गढ़े हुए पत्थरों की भी। कई दरवाज़ों के तोरण बहुत ही बारीक़ कोरणी संगमरमर व तरह २ के पत्थर के थे। यह सब देखने से पाया जाता था कि २५०० या ३००० हज़ार वर्ष पूर्व की रोमन और ग्रीक्स की सभ्यता इस समय की सभ्यता से कुछ कम न थी। जो परिश्रम इस समय के इटैली के मनुष्यों ने इस बुरे हुए शहर को खोद कर निकालने में किया है वह प्रशंसनीय है। बड़े ही साहस और व्यय का काम है। इतना बड़ा शहर खोद-कर और किसी देश व जाति ने नहीं निकाला कि जिससे पुरानी सभ्यता का पूरा हाल जाना जाता हो।

और भी कई क़स्बे, जो हाल में ही बुरे हुए बतलाये गये हैं और जिनकी जगह दूसरे और बसे बतलाये गये यह दृश्य देख कर परिणाम निकलता है कि मनुष्यों को अपनी जन्म-भूमि बड़ी प्यारी लगती है कि सर्वस्व नष्ट होने पर भी अपनी मातृ-भूमि में रहने की इच्छा बनी रहती है।

वहां से फिर वापिस आये तो मूंगा, शंख, सीपों के सौदा-गरों की दूकान व कारखानों में गये। वहां देखा कि हाथ से

बड़ा बारीक काम हर क़िस्म का होता है, जैसा कि जयपुर में हाथीदांत पर होता है। क़ीमत ज्यादे थी वरना कुछ लेते। फिर तुमको तार देने की जल्दी थी तारघर में आये और तार दिया कि आनन्द से ज़मीन पर आ धमके हैं सो तुमको यह तार कल १०॥ वजे दिन को मिलेगा, ६) रु० लगे हैं। फिर पण्डों के दफ़्तर में गये और शहर का चक्कर काटा, ७ मंजिले मकान हैं बीच २ में अपनी जैसी चौपड़ हैं, वड़े विशाल बाज़ार हैं जिनमें राजभवन भी हैं।

नेपल्स—यूरोप का यह पहिला ही नगर था जो मैंने देखा, सड़कें साफ़ सुथरी चौड़ी हैं और आदमियों के चलने के लिये पक्की पत्थर की सड़क दुतरफ़ा है। वड़ा सुन्दर शहर है, बड़े चौराहों पर मूर्तियां भी हैं, कहीं घोड़े पर चढ़े हुए और कहीं अकेली, एक चौराहे पर विजयादेवी की मूर्ति को वड़े ऊंचे थम्भे पर बैठा रक्खा है। मकान वड़े सुन्दर और अक्सर ६ खंड के हैं। टाउनहाल, म्यूज़ियम का दृश्य शहर का वड़ा ही मनोहर है, समुद्र के ऊपर ऊंचाई पर और साथ ही साथ विसूवियस का दृश्य भी धुवां देते हुये एक अलग ही छटा को बतलाता था। ट्राम्वे और मोटरों की भरमार थी, जनसंख्या ६-७ लाख के बीच में है, सब गोरे ही गोरे हैं। अंग्रेज़ी बोलने वाले कहीं २ मिलते थे, सब का पहनाव एकसा था। पाइन के वृक्षों की वड़ी शोभा थी, कहीं कहीं तो वृक्षों का कटाव ऐसा था मानो एक लम्बी डंडीदार छतरी का हो। मँहगाई यहां ही से शुरू हुई। दांत जो आगे के तीन गिर गये थे उनको बनवाने की फिकर पड़ी इसलिये टामस कुक का गाइड दांत वाले के पास लेगया, यह एक बहुत वृद्ध पुरुष था, पर था भला मनुष्य। कहने लगा कि धन्धा

चलता नहीं फिर भी अगले तीन दांत ३ पौंड से कम में उसने नहीं बनाना चाहा। इसही तरह होटल मैट्रोपोल, जिसमें ठहरे थे, के आदमी को, जो वहां का मामूली कुली था, कुछ दर्द होने के कारण मालिश करने को बुलाया—सिर्फ पांच मिनट मालिश करने में ३) रु० देने पड़े। इस मँहगाई से आगे को सचेत हुए।

बाज़ार के सब से नीचे के खंड में सड़कों के किनारे २ बड़े २ आइने लगा कर हर दूकानदार अपनी २ नुमायश (Show Room) रखता था और प्रत्येक नुमायशी चीज़ पर क़ीमत का टिकट था।

स्थान मिनरवा होटल, रोमनगर।
ता० २६-६-३२ ई०

चिरंजीविनि ! आनन्दमस्तु,

कल शामको ८॥ बजे यहाँ आये और कल दोपहर को नेपिल्स में जल, जन्तु, ग्रह (Aquarium) देखा। कई बड़े २ सांप थे और जल के चिमगादड़ तथा केंकड़ा भी देखे, वह बहुत ही बड़ा था और कई अद्‌भुत जानवर देखे जिनको कभी नहीं सुना था। परमात्मा की लीला अपरम्पार है अनेकानेक जाति के जलजन्तु थे, कैसी रचना है जो सिवाय प्रभु के और किसी के समझ में नहीं आ सकती। यहां का अजायबघर भी देखा। कल रेल में नेपिल्स से रोम को आते हुए खेती का हाल देखा गेहूं चार फीट तक ऊँचे थे और आज रोज़बेरी नाम का फल खाया जो गुलगुले के मुआफ़िक बिना गुठली का मेवा होता है तथा खुरमानी मोटे आड़ू के मुआफ़िक खाई और आड़ू भी खाया जो

आबू के आड़ से दुगुना था। मकान सब ही सुन्दर और आदमी सब अंग्रेज़ी पहनाव वाले थे।

यह रोमनगर इटैली की राजधानी है और बड़ा प्राचीन शहर है। टामस कुक के मार्फ़त नेपिल्स ही में सर शादीलालजी साहब ने यहाँ ठहरने, खाने, पीने आदि का प्रबन्ध कर लिया था। इसलिये टामस कुक का आदमी स्टेशन पर ही मिल गया और मोटर तैयार थी, सर शादीलालजी वा उनके दोनों लड़के राजेन्द्रलाल और नरेन्द्रलाल व मैं चारों मोटर में बैठ कर सीधे मिनरवा होटल में गये और रात को भोजन आदि से निपट कर वहीं सोये। सवेरे कलेवा वग़ैरह करके टामस कुक के दफ़्तर में गये। नेपिल्स में अलग कार लेने में खर्चा बहुत पड़ा था, इसलिये यह निश्चय किया कि टामस कुक के दफ़्तर से जो शरावेंका नामी मोटरबस चलती हैं और जिसमें अंग्रेज़ी जानने वाले यात्री जाते हैं तथा जिसमें अंग्रेज़ी जानने वाला गाइड भी होता है उसमें ही बैठ कर सैर करेंगे। यह शरावेंका ६॥ बजे सवेरे रवाना होती है और १ बजे वापिस आती है, एक घण्टा विश्राम करके फिर २ बजे रवाने होती है और ६ बजे फिर वापिस आती है। चुनाचे शरावेंका से सैर करना शुरू किया। राजभवन के पास होकर बाज़ारों में होते हुये वेटीकेन (Vatican) में गये।

यह वेटीकेन (Vatican) पोप महाशय के लिये निर्देशित स्थान है। पहिले एक बड़ा भारी चौक ३५० गज़×२४७ गज़ का पड़ा, बीच में २६ गज़ ऊंचा एक स्तम्भ था, जिस पर प्रभु यीशु की क्रास थी जो प्रभु के असली सामान से बनी हुई बताई जाती है। बड़े सुन्दर लालटेनों के स्तम्भ गोलाकार में थे, सामने सेन्ट-

सेन्ट पिटर्स चर्च रोम (इटैली), संसार का सबसे बड़ा और सुंदर गिरजा

पृष्ठ ३९
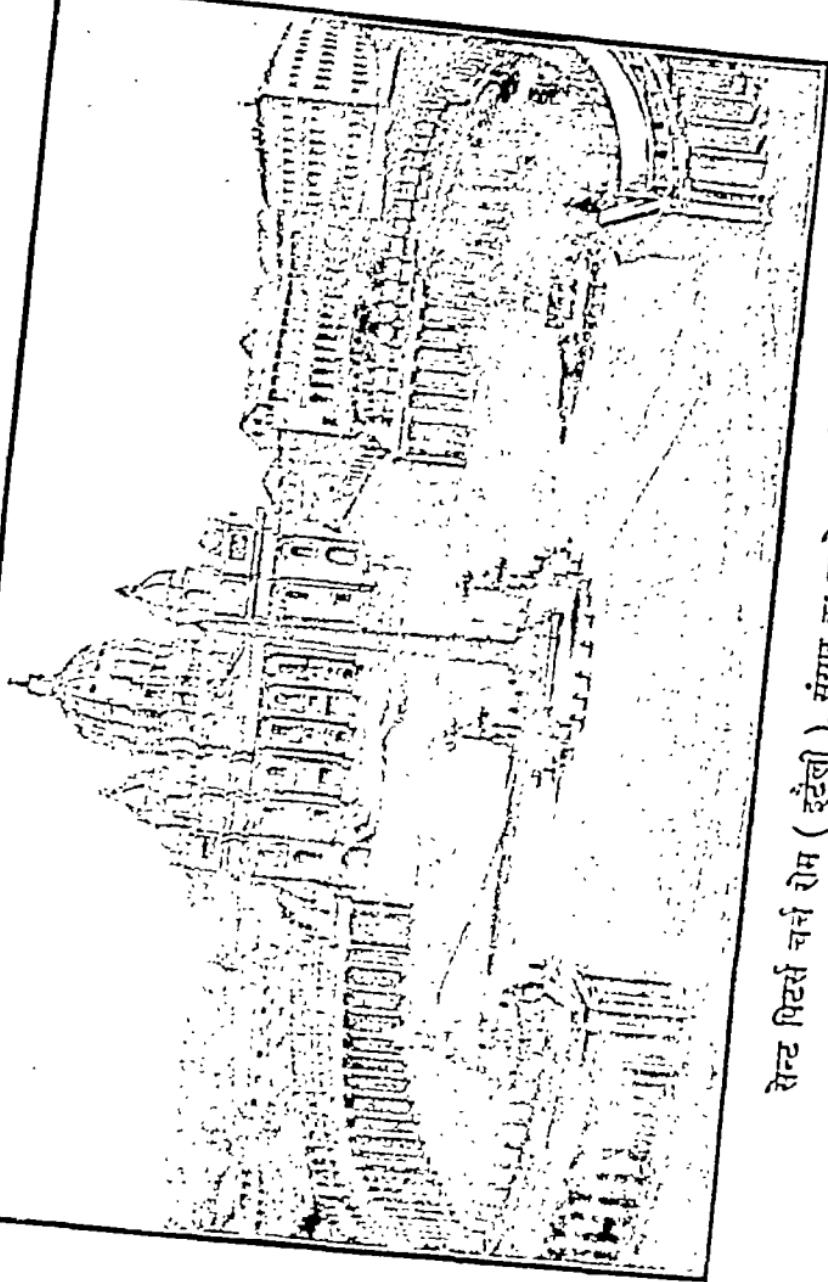
पीटर्स का चर्च था और वग़ल में दोनों तरफ़ २८४ विशाल भवन थे। इन वग़ल के भवनों पर सन्तों की १६२ मूर्तियां थीं।

सेन्ट पीटर्स चर्च—के अन्दर गये जो बड़ा भारी गिरजा है, लम्बाई, चौड़ाई व ऊंचाई का इतना बड़ा देव-भवन पहिले कभी नहीं देखा। अन्दर सोने के काम, आरायश व तरह २ के पत्थरों से सुसज्जित था। स्तम्भ इतने ऊंचे थे कि पहिले नहीं देखे। एक-छता मकान है, बीच में लम्बा हाल और दो वग़ल की गैलेरी हैं, सब खम्भे और तानों (महरावों) से ठहरा हुआ है। तानें बहुत ही खूबसूरत और ऊंची हैं तथा तानों की ही एक छत है। निज स्थान के ऊपर क़रीब २ बीच में ऊंची गुम्बज बनी है जो कई कोस से दीखती है। कहते हैं कि इसकी तुलना का गिर्जा अभी तक दूसरा नहीं है, क्यों न हो। क्रिश्चियन धर्म के आधिपत्य का स्थान है बादशाह कोनस्टैनटाइन ने इसकी नींव डाली और पोप अनेकलीटस ने जहां सन्त पितर शव रक्खा गया था वहां भाषण दिया। लम्बी चौड़ी कई सीढ़ियें गिरजे के दरवाज़े के पहिले आती हैं जिनके दोनों तरफ़ आमने सामने सन्तपाल व पितर की मूर्तियां थीं और सजावट सब ही बहुमूल्य है।

बांई तरफ़ होकर दरवाज़े में गये, बड़ा अच्छा ताम्र-मिश्रित धातु का दरवाज़ा था। यहां रंगबिरंगी वर्दी पहिने स्वीज़रलैण्ड के सन्तरी बन्दूकें लिये पहरा लगा रहे थे, यही वेटीकेन का दरवाज़ा है। पहिले एक ऊंचे टीले पर बाग़ और महल, जिसमें पोप महाशय रहते हैं, दिखलाया गया। फिर एक म्यूज़ियम में प्रवेश हुआ बड़े लम्बे बरामदे थे। एक बरामदे में संगमरमर और अनेक प्रकार के पत्थर व कोरनी की हुई मूर्तियां थीं, एक बहुत बड़े बरामदे में दोनों तरफ़ वे बहुमूल्य वस्तुएं थीं कि जो समय २

पर पोप महाशय को उनके अधीनस्थ यूरुप के राजाओं ने भेंट की हैं। कोई २ वस्तु करोड़ों और लाखों रुपये की थी उनमें जवाहरात और रत्नादि के आभूषण व बर्तन थे व फ़रनीचर का सामान था। फिर ऊपर गये, बड़े २ विशाल-भवन थे तथा अनेक प्रकार की चित्रकारी होरही थी, कहीं २ दीवारों पर गलीचे थे जिन पर बारीक़ कसीदे, तरह २ की क्रिश्चियन धर्म की कथाओं और गाथाओं के कढ़े हुये थे। बस क्या वर्णन किया जावे जैसा पोप का पुराना आधिपत्य है वैसी ही बहुमूल्य सामग्री की सजावट थी। प्रभु यीशु और माता मरियम के चित्र सब जगह अनेक अवस्था और अनेक लीला के ऐसे ही मौजूद थे जैसे कृष्ण-लीला के कृष्ण-भक्त सम्प्रदायों के मंदिरों में भारतवर्ष में होते हैं। इसही तरह एक बड़ा भारी पुस्तकालय भी इसके साथ लगा हुआ है जिसमें ४००००० (चार लाख) के क़रीब पुस्तकें हैं और कई तो बहुत प्राचीन व अलभ्य हैं।

ता० २६-६-३२ ई०

कोलसियम—आज रोम में दूसरा दिन है, कल तीसरे पहर २००० वर्ष पुराना सन् ७६ ई० का बना हुआ वह अखाड़ा देखा जिसमें उस समय के बादशाह पहलवानों से और जंगली जानवरों से कुश्ती लड़ाते थे व नये उठते हुये क्रिश्चियन-धर्म के आदमियों का घात एवं वध किया जाता था। इतना बड़ा अखाड़ा था कि ५०००० आदमी बैठ सकते थे, इसका नाम कोलसियम है। ऐसे ही एम्पी थियेटर भी उस वक्त के देखे। इस ही तरह कैरिकुल्ला के गुसलख़ाने देखे जो दो हज़ार वर्ष पहिले के थे और जिनमें

इटेली देश रोमनगर का कोलसियम (Colseum) नाम का अखाड़ा, जहां सिंहादि हिंसक जन्तुओं और ग्लेडियेटर नामी पहलवानों से युद्ध होता था और रोम राज्य के छत्रपति राजाओं के समक्ष लाखों दर्शकगण होते थे।

पृष्ठ ५०

ठंडे व गर्म जल का प्रबन्ध था। नहरें और ६० फीट नीची कबरें देखीं, जिनको कैलिक्सटस की कटाकोम्बस कहते हैं। यह क़बरिस्तान १६ मील तक ६० फीट नीचाई में चला गया बताते हैं। और भी कई प्राचीन स्थान रोमन समय की महिमा के देखे।

एक सड़क पर वृक्षों को काट छांट कर ऐसा बना रक्खा था मानो कई मीलों तक उनका धड़ तो थम्भे और उनकी शाखाओं का कटाव फैलाव छत के समान दीखता था।

ता० २७-६-३२ ई०

चिरंजीविनि कमले !

ईश्वर तुम्हारी दीर्घायु करे। कल फिर रोम से २५ मील दूरी पर गये। पहिले तो आड्रियाना (Adriana) नाम का आमेर (जयपुर) की तरह का उजड़ा हुआ ऐतिहासिक क़स्बा देखा जो १८०० वर्ष पहिले खूब सुन्दर बसा हुआ था। फिर एक पहाड़ी पर लेजाये गये जहाँ भोजन किया और पानी के झरने देखे। रसभरी, अंजीर, आड़ू और खुरमानी खूब खाई। पानी के चश्मे ऊपर से खूब बहते तथा गिरते हैं। यह जगह टिवोली (Tivoli) कहलाती है। फिर 'डीयस्टा' नाम का एक गांव देखा जिसमें पानी के चश्मे अनेक फव्वारों में बड़ी सुन्दरता से पलट दिये गये हैं। हज़ारों फंवारे तरह २ के हैं। फिर रोम नगर में वापिस आकर सन् १९१४ की लड़ाई की यादगार (War Memorial) देखी जो बहुत ही विशाल-भवन है। वहाँ रास्ते में दो मद्रासी विद्यार्थी मिल गये जो हमको एक विश्व-विद्यालय में

होगये । यह प्रथम ही भारतवर्षीय थे जिनको यूरोप की धरती में पहिले ही पहल देखा । कल जब वेटीकेन देखने गये थे उस समय इन्होंने हमको देखा था और चूंकि मैं हिन्दुस्तानी वेष में रहता हूं इसलिये मुझे झट पहचान लिया। सर शादीलालजी व उनके दोनों पुत्र तथा मैं वार मेमोरियल को देखकर एक बड़े मकान के वाहर, जिसके आगे पहरा था, बातें कर रहे थे, वहीं पर इन विद्यार्थियों से मिलने पर पूछा कि यह किसका मकान है, पता चला कि मिस्टर मैसोलिनी का है। विद्यार्थियों के हृदय में गो वे क्रिश्चियन थे, परंतु देशप्रेम उमड़ आया और हमको रोमन यूनिवर्सिटी, जहाँ वे पढ़ते थे, दिखाने को लेगये । इनमें से एकने, जिसका नाम Rev. S. J. Kalathil (रेवरेंड. एस. जे. कलाथील) था, वहां का पुस्तकालय दिखलाया, वहाँ के प्रोफ़ेसरों से मिलाया और उन कमरों को भी दिखलाया जहाँ विद्यार्थी पढ़ते थे । एक २ कमरे में एक सहस्र विद्यार्थी वैठ सकते हैं ।

सर शादीलालजी को तो ब्रूसेल्स जाना था इसलिये वे रात्रि को १० वजे की गाड़ी से रवाना होगये और मैं उनको विदा करके वापिस मिनरवा होटल में आगया। रात्रि को शयन करने के वाद सवेरे एक खास गाइड को लेकर, जो देखने योग्य दृश्य व वस्तुएं रह गई थीं, देखने चला गया और एक छोटी मोटरकार आधे दिन के लिये तय की । सवसे पहिले इटैलियन रुपया भुनाकर एक गिर्जा देखा । अपने यहाँ का रामचन्द्रजी का वड़ा मन्दिर उसकी मुँह दिखलाई में जाता है, यह गिर्जा सन्तपाल का है, यहाँ रोम में कोई ४०० ऐसे गिर्जे वतलाते हैं और इस गिर्जे में ५००० (पाँच हज़ार) आदमी आसकते हैं। एकछता मकान है। कारीगरी का पार नहीं, थम्भे तो इतने ऊंचे और ऐसे मोटे सुन्दर

एक पत्थर के टुकड़े हैं कि मेरी समझ में नहीं आया कि कैसे यह पत्थर काटा होगा, कैसे उठाया होगा, कैसे तराशा होगा और कैसे जिलह की होगी। बड़े ही क़ीमती पत्थर रंग बिरंग के थे। हमने सिंहासन के नीचे का ऐसा भी पत्थर देखा जो पन्ने से ज़्यादा क़ीमती था। देलवाड़े (आबू) का मन्दिर यहाँ की कारीगरी के सामने कुछ नहीं है। छत सब लकड़ी की थी लेकिन इतना अधिक स्थिर और सुन्दर काम था कि यद्यपि यह इमारत सैकड़ों वर्षों की थी लेकिन ऐसा मालूम पड़ता था कि अभी आज ही बनी है। इसही तरह परसों एक यादगार देखी जिसके बाहर गेरी बेल्डी की मूर्ति थी उसका भी यही हाल है। रोम ऐतिहासिक नगर है, हज़ारों बादशाह, जिनका छत्रपति राज्य था, वहां होगये।

जूलियस सीज़र—जो अभी तक दुनियाँ का सब से बड़ा सेनानायक समझा जाता है, उसके भी तीन चार हज़ार वर्ष पहिले के बने हुए राजभवन के चिह्न देखे। परन्तु अब सब विलायमान होगये हैं। यहां के पोप किसी समय सब क्रिश्चियन संसार के अधिष्ठाता थे। बादशाहों को चाहे जब उतार देते, चाहे जब दूसरा बैठा देते। इटैली निवासियों ने गैरीबाल्डी नामक एक फ़ौज़ी आदमी के झण्डे के नीचे सन् १८६० ई० में ज़ोर लगाया। पोप महाशय के अधिकार कम करके एक राजा बैठाया जिसके खानदान के लोग लड़ाई के अन्त तक स्वच्छन्द राज्य करते रहे।

क़रीब १० वर्ष हुये मैसोलिनी नाम का एक मामूली आदमी खड़ा हुआ। सन् १९१८ में लड़ाई के अन्त में बादशाह से अपने दो तीन हज़ार फैसिस्ट साथियों के साथ जाकर कहा कि हम मालिक हैं तुम तख्त से उतरो, बादशाह ने हाथ जोड़ लिये।

अब बादशाह को खाने पीने को मिल जाता है और जो मैसोलिनी महाशय करते हैं सो होता है, वही वहां के डिक्टेटर हैं, बड़ा सुप्रबन्ध है। खूब अपने देश की उन्नति कर रहे हैं और यह दम भरते हैं कि सब से बड़ा राष्ट्र मैं अपने देश को कर दूंगा और अब भी यूरोप के पांच प्रथम बड़े राज्यों में है। महात्मा गांधीजी भी जब यहां आये थे तो इनसे मिले थे। यहां पोप के स्थान की भी हद बांधदी है। मालवीयजी भी पोप से मिले थे। सो प्रियपुत्री! गेरीवेल्डी जैसे मामूली १०) रु० महीने के आदमी ने क्या कर दिखाया! उस समय का मुख्य सेनापति होगया! और अब मैसोलिनी जैसा प्रभावशाली डिक्टेटर संसार में नहीं। मनुष्य सब कुछ कर सकता है अपने राजाओं को इनसे शिक्षा लेनी चाहिये। अब कपड़े पहनकर बाहर जाते हैं, पैरिस के लिये रवाना होंगे, सब आनन्द है।

(जिनोआ)
ता० २८-६-३२

चिरंजीविनि! आशीः,

इन देशों में यात्रा करना बड़े ही खर्चे का काम है, कुली होटल यह सब ⅃) आने की जगह १) रु० लेते हैं और परदेशी को खूब ठगते हैं, लेकिन रास्ते में मुसाफिर बहुत भले, बड़ी खातिर से पेश आते हैं। बोली में तो नहीं समझते लेकिन इशारे से बातें करते हैं और जो कोई अंग्रेज़ी जानने वाले मिल जाते हैं तो खूब ही दिलचस्पी लेते हैं।

इटैली देश में रोम से जिनोवा के मार्ग का प्राकृतिक दृश्य—कल के रेल के सफ़र में देश के बड़े २ सुन्दर दृश्य देखे, रेल में

होकर २०० दोसौ मील आया लेकिन तीन २ मील दुतरफा रेल के बस्ती थी। सुन्दर सुहावने वंगले और कृपको के खेत थे। सूर्यास्त तक कृपक खेती में लगे हुये थे—कोई हल चलाता था, कोई घास की गुञ्जी बनाता था तो कोई भारे ढोता था। सब साहब और मेम गोरे लोग थे। किसानों के घर तो अच्छे थे लेकिन अपने यहाँ के किसानों की तरह ग़रीब मालूम पड़ते थे। धोती की जगह पतलून और साफ़े की जगह टोप थे, कृपिकायें मेमों की तरह थीं। सुन्दर सफेद गुलाबी रंग, नाक, आंख की काटछांट अच्छी। खेतों में अनाज के साथ २ फलों के वृक्ष और वेलें थीं, जैसे—अंगूर, आड़ू, खुरमानी, आलूचा। और भी तरह २ के फल थे। अनाज में जौ, गेहूं शामिल वोये हुये थे और जगह २ पाइन नाम के वृक्ष की वहुतायत थी जो दूर से विलकुल छत्ते की शकल का दीखता है। कल यहाँ गुलाव की वेलें भी देखीं जो ऐसी कोमल लचकीली टहनियों की थीं कि जिनका कहीं खम्भा वना दिया और कहीं छाया करके गुञ्ज करदी हो। एक तरफ समुद्र, दूसरी तरफ आवू वाले गुरु शिखर पहाड़ की तरह पहाड़ और वीच में वंगले व खेती थी। दृश्य वड़ा सुन्दर और जमीन सब जगह हरी भरी थी। पहाड़ियों में खेती होता है और सब ही सुन्दर खेत हैं। वाड़ अंगूर की वेल की होती है और जैसे आवू में करोंदा वैसे यहाँ अंगूर की खेती है। जिस रास्ते से हम आये ऐसा रास्ता था मानो जयपुर के सिलावटों के मुहल्ले में जा घुसे, कारण इन पहाड़ों में मकराने की खानें थीं वड़े २ पत्थर, कातले और सिलावट कारखाने में काम कर रहे थे। हर स्टेशन पर गाड़ियां भरी थीं, स्टेशन एक २ मिनट में आता, लेकिन गाड़ी वहुत अल्प ठहरती। मैं तो वैठे पीछे उतरता ही नहीं हूं और ऐसा ही अच्छा है। स्टेशनों पर खोमचे वाले, पानीवाले व क़िताबों वाले

ज़ोर २ से अवाज़ें लगाते हैं। मलाई की वर्फ के कुंजे यहां वहुत विकते हैं। पानी मिनेरेलवाटर खानों के सोतों का वोतलों में खूब विकता है। रेलगाड़ी के साथ खाने की गाड़ी चलती है। वे सव अंग्रेज़ी जानने वाले होते हैं इससे कोई दिक्क़त नहीं होती है। फल दूध से काम चलता है। यदि रेल की खाने की गाड़ी में खावें तो एक वक्त में ३) रु० के क़रीव लगते हैं।

पैरिस (फ्रान्स) स्थान ग्रान्ड होटल
ता० २९-६-३२ ई०

चिरंजीविनि कमले ! आनन्द में रहो,

इटैली और फ्रांस देश के मार्ग का प्राकृतिक दृश्य—

जिनोआ से चले तो दृश्य अनुपम पाया। पर्वतों की छटा अनुपम थी न तो पहिले कभी देखी न भारत में होगी। शिखरों पर तो थोड़ा वर्फ था और पानी के झरने जगह २ वह रहे थे। आधी सी ऊंचाई पर खेती होती थी फिर रेल की पटरी थी कृपक स्त्री पुरुप काम करते थे और सव तरह से रुष्ट पुष्ट दीखते थे। सीधे ढाल में भी खेती थी, वैलगाड़ी, गदहे, खच्चर सव ही काम में लेते थे। पर्वत हरे भरे थे। पत्थरों की खानें वीच में आती थीं। आज अंग्रेज़ी वोलने वाला नहीं मिला इससे अकेलापन रहा, एक लड़के खोमचे वाले ने ठगना भी चाहा लेकिन एक भले आदमी ने आकर उसके कान खींचे।

चार पांच वजे फ्रांस का राज्य आगया। पासपोर्ट राहदारी की जांच रेल में ही होगई। वहां के आदमियों को देखा भाल

कर लेते थे, लेकिन मुझको गांधी इण्डिया का भला आदमी समझकर मेरे सामान की तलाशी नहीं करते। फ्रांस का दृश्य बहुत ही प्रशंसनीय है। बड़े पेड़ों को काटकर आधे आकाश में बाड़सी कर देते हैं। कहीं२ तालाब भी आये, बंगले छोटे, क्यारियां ज्यादा सुन्दर थीं, रात को खूब नींदली यहां सूर्य्य इस समय १६ घण्टे के क़रीब रहता हुआ दिखा। साढ़े चार बजे फिर उजाला होगया रात को ६ बजे तक उजाला था।

सवेरे पैरिस में पहुँचे। जयपुर वाले सोगानीजी को पत्र लिखा था परंतु वे नहीं मिले। टॉमस कुक के आदमी ने ऐसी मोटर में बैठा दिया जो ठीक होटल में न लेजाकर इधर उधर भटकाती रही और ६॥) रु० किराये के देने पड़े। फिर इस ग्रान्ड होटल में, जिसका ख़र्चा २५) रु० रोज का है, ठहरा। लेकिन आज खूब पैरिस की सैर की दिन भर मोटर में घूमे २५) रु० लगे।

पैरिस—भी एक विचित्र शहर है। जिधर देखो उधर ही फैशन की नवीनता है। इमारतें बहुत सुन्दर व ऊंची, सड़कें साफ और हर जगह बाज़ारों और सड़क के दोनों तरफ़ पक्की सड़क पर कुर्सियां हज़ारों की तादाद में बिछी हुई तथा टेबिलें पड़ी हुई हैं। नर नारियां उम्दा से उम्दा हर फैशन के कपड़े पहने हुए सड़क पर चलने फिरने वालों को घूरते हुए और बातें करते हुए नज़र आरहे हैं। इस पैरिस नगर में भी नदी बीच में होकर जाती है दोनों तरफ बड़ी २ इमारतें हैं और कहीं २ नदी में मछली पकड़ने वाले लम्बी स्टिक, कांटा व जाल को लिये हुए हैं। कितने ही पुल बने हुए हैं, नदी बहुत बड़ी तो नहीं है किन्तु किनारों की बंधाई सुन्दर है। बीच २ में सुन्दर बाग

आते हैं जहां वृक्ष खास तरह के काट छांट के और हरी घास पर हज़ारों कुर्सियां पड़ी हुई हैं जिन पर हरएक मनुष्य थोड़ी सी क़ीमत देने पर बैठ सकता है।

सवेरे की सैर में १०॥ बजे से १॥। बजे तक पैरिस नगर का नवीन हिस्सा देखा जिसमें मैडालीन चर्च (Madaleine), कोलोन वेनडोम (Place and Coloune Vendome), टूलेरीज़ गारडन्स (Tuileries Gardens), ट्राम्फैन्ट आर्च (Arc de Triomphe), मूसीड्डू लौवरे (Musse du Louvre), प्रेसिडेन्ट का भवन Palais de Lelysee अनजान-सिपाही की कवरस्थान, प्लेस ट्रोकाडेरा, एफीयलबुर्ज, अपाहिज आदमियों का निवास-स्थान, नैपोलियन का मक़बरा, रूडी कॉन्सटेन्टाइन, मिनिष्ट्री इलाके पैर (जहाँ शक्ति स्थापना की सभायें हुई थीं), रू रोयल (Rue Royal) इन इमारतों में एफीयल बुर्ज स्टील की बनी हुई है और क़रीब ६०० फ़ीट की ऊंचाई है।

फिर दो बजे से सैर करना शुरू किया, पहिले ही पहल ओपेरा हाउस, स्टोक एक्सचेंज, कोर्न एक्सचेंज, दी मिन्ट, सेंट चैपल, न्यायालय, लक्ष्मवर्ग बाग़, दी पैन-थियोन, नोर्तिडेमे (Norte Dame) का गिर्जा, वैस्टील स्कायर और जोलाई का स्थस्भ; दी टाउनहाल, आरकोलब्रिज। इनमें एक्सचेंज के स्थानों पर भी बहुत भीड़ थी और सट्टेबाज़ी भी खूब चलती है।

अब फिर जाता हूं, इमारतें तो ठीक लेकिन निठल्लों का शहर है और व्यभिचार का घर है। सोगानीजी २८-५-३२ को चले गये, जयपुर होंगे। यहां से कल ८-२५ पर रवाना हो जाऊंगा। और ३॥ बजे दोपहर बाद लन्दन पहुँचूगा। आनन्द में हूं, कल नहीं तो परसों तुम्हारे पत्र मिलेंगे, लन्दन में कौन मिलता है

स्टेशन पर कोई न मिला तो आर्य्य-भवन ३० वेल साइज
पार्क में ठहर जाऊंगा। टामस के आदमी लेजावेंगे और वहां से
सब लिखूंगा, आनन्द है।

चि० कमला को प्यार पहुंचे, ता० १-७-३२ ई०

पैरिस में रात्रि-जीवन—हम फिर रात को भी उस ही
४॥) रु० की मोटरमें गये। हमेशा २५ आदमियों की मोटर होती है,
खासतौर पर टामस की एजेन्सी में पहिले टिकट लेना पड़ता है।
थोड़ी देर तक तो देखा—गाइड (वताने वाला) जो मोटर शरावोंका
में रहता है वह कहता रहा, फिर निद्रादेवी इतनी सवार हुई कि
बैठे २ नींद आगई, एक पहाड़ी पर लेगया जब आंख खुली तो देखा
कि १४ मील लम्बा ६ मील चौड़ा यह पैरिस नगर दीपकों का
समुद्र है, जहां २ आंख खुली तो देखा कि कहीं विजली की रोशनी
की पताका, कहीं ध्वजा, कहीं लहरिया रंग विरंग का लहरा रहा
है और पेंड २ पर हज़ारों कुर्सियों पर नर नारियां बढ़िया वस्त्र
पहिने हुये शराव पी रही हैं। कोई तीन चार लाख आदमी कम से
कम ८ वजे से २ वजे तक रात को यही करते हैं। मालूम पड़ता
है कि इनके कोई घर ही नहीं है। खाने की दूकानों पर ही, जो
यहां कम से कम दो लाख के करीब होंगी, खाते पीते हैं। अपने
महाराजकुमार के जन्मोत्सव पर जैसी रोशनी थी उससे दस
बीस गुणा शहर में रोशनी हर रात को हर गली और कूचे में
होती है। परमात्मा जाने इतना रुपया पानी की तरह बहाने के
लिये कहां से आता है। नदी की धारा में रोशनी की लहर

पाताल तक घुसी मालूम होती है। श्रृङ्गार एक मेम का दूसरी मेम से नहीं मिलता है। हाव, भाव प्रत्येक के अद्‌भुत हैं।

दूसरा टिकट १० से १२॥ बजे रात तक का गुप्त दृश्य और व्यभिचारालयों में जाने व शराब पीने का मिलता है। उसकी सैर के लिये क़रीब २६) रु० फी सवारी देने पड़ते हैं। जब वापिस आया तो दलाल लोग गुप्त रहस्यों में ले चलने के लिये पेंड २ पर मिले, बड़े ही व्यभिचार की जगह है। बस एक मिनट यहां ठहरने को जी नहीं चाहता, यहां व्यभिचार एक गुण समझा जाता है। अब स्टेशन जाने के लिये होटल वालों के पास अपने कमरे से उतरता हूं, परमात्मा रक्षक हैं, लन्दन में ठहरने को व्यवस्था करके राजी खुशी की पहुंच का तार दूंगा।

लन्दन, १५ परसी स्ट्रीट
ता० २-७-३२

पैरिस से डोवर तक—पैरिस से सवेरे ही ७॥ बजे लन्दन के लिये रवाना हुआ, कुछ अंग्रेज़ी बोलने वाले साथी तो ज्यादा नहीं थे, परन्तु पास में जो सज्जन बैठा था वह गम्भीर प्रकृति का भला आदमी था और लन्दन में किसी ऑफिस में काम करता था। बातें करते हुए उसने प्रकट किया कि आपको हमारे देश अच्छे दीखते होंगे लेकिन हम लोगों का सही हाल आप लोगों को ज्ञात नहीं हो सकता, निरुद्यमता के कारण बहुत हल चल मची हुई है और पार्टी गवर्नमेंट से जल्दी २ पलटाव खाने से देश में स्थिर काम नहीं होरहा है, सूरत उन्नति की नहीं किन्तु गिराव

की है। मैं इस सज्जन की इन बातों को सुनकर कुछ विचार में पड़ गया और उसके कथन में कितनी सच्चाई है जानने के लिये मनमें ठानी।

खिड़की बन्द करते वक्त यह तो खयाल किया नहीं कि स्प्रिंगदार है विंडो रेल याने खिड़की के काच पर बांये हाथ की उंगलियां रक्खी हुई थीं जो ऊपर एक दम चढ़ने से दब गई और चोट आई। इस सज्जन यात्री को मालूम पड़ते ही उसने अपने बक्स में से शुद्ध की हुई रुई, धागा और पट्टी निकाल कर मेरे बांधी और डोवर पोर्ट आने तक रास्ते भर संभाल की, मेरे यह जच गया कि इंगलैण्ड के आदमियों में सौजन्यता भरी हुई है। फ्रांस देश की सीमा का अन्त हुआ। इंगलिश चैनेल शुरू हुआ। यहां सीमा पर सब के पासपोर्ट देखे गये, सामान की (Customs) राहदारी के अफ़सरों ने संभाल की और सुन्दर स्टीम लॉंच याने छोटे जहाज़ में अपने २ टिकटों के अनुसार बैठाये गये। स्टीम लॉंच पर बैठते ही दूसरा सज्जन एक लॉंच के स्टुवर्ड को बुलाकर लाया जिसने दवाई डाली और दूसरी पट्टी बांधी।

इंगलैण्ड का किनारा दीखने लगा और किनारे के भिन्न २ स्थान पृथक् २ नामों से बतलाये गये। इंगलिश चैनेल की समाप्ति हुई और फिर रेल में बैठे और इंगलैण्ड की राजधानी लन्दन के स्टेशन विक्टोरिया पर क़रीब ३ बजे पहुँचे। टॉमस का आदमी मोटर लिये मिला इतने में दिल्ली के साथी यात्री के बड़े भाई कृष्ण-वीर मिल गये और मुझको अपने यहां लेगये और लंदन में मेरे ठहरने व भोजन आदि का बहुत ही सुप्रबन्ध मेरी इच्छा के अनुसार कर दिया। लंदन में इनके यहां ४ बजे पहुँचा और पहुँचते ही राजी खुशी का तार दिया सो पहुँचा होगा।

चतुर्थ अध्याय

लंदन पहुंचना

स्थान १० हैरिंगटन स्कायर
(लंदन) ता० ३-७-३२

चिरंजीविनि ! शुभाशीर्वाद,

लंदन में ठहरने का स्थान—जिस मकान में मैं ठहरा हूं उसका पता यह है जो पते की जगह लिखा है। अच्छा, छोटासा कमरा है, मालिकनी का नाम मिस गुडासी है जो इटैलियन है, अंग्रेज़ी मासूली जानती है, पाँच, छः किरायेदार हैं। एक तो अपने जोधपुर का है जिसके लिये स्केल्टन साहब ने कहा था कि आपकी सेवा के लिये आरकिटेक्ट मिस्टर अब्दुलहमीद को छोड़ दूंगा। दो दिन रहने के बाद इत्तिफ़ाक से पता चला कि वह भी ऊपर के कमरे में ठहरा हुआ है, आकर मिला और अब रोज आता है। मेरे कमरे के पास मिस गुडासी वृद्धा-स्त्री की बैठक है कि जिसमें आने वालों और मिलने वालों को बैठा सकता हूँ। पास ही स्नान करने का कमरा और पाखाना है। ठीक ६॥ बजे स्नान करता हूं और कमरे के पास बगीचा भी है। यहां इस लन्दन नगर में जिसमें ७०,००,००० सत्तर लाख आदमी और १०,००००० दस लाख मकान हैं उसमें बगीचा और खुली जगह दुर्लभ है, लेकिन मुझको बगीचा और खुला हुआ चौक खूब मिला है। रहने के कमरे में बड़ा पलंग है जिसमें मजे से दो आदमी सो सकते हैं। एक अलमारी है, जिसमें खूटियें लगी हैं और जो आदमी के

फ़द से ड्योढ़ी ऊंचाई की है इसके दरवाज़े के ऊपर आदमी से सवाई ऊंचाई का कांच मुंह देखने का जड़ा है। फिर एक मेज़ मकराने की है जिसके साथ चीनी मिट्टी के पीने, धोने के बरतन बालटी वग़ैरह और दो तीन काँच के कुंजे गिलास हैं।

एक शृङ्गारमेज़ है जिसमें कितने ही खाने हैं और एक दो मेज़ और कुर्सियां और हैं। ठहरने के कमरे सब जगह इसही तरह के होते हैं। कलेवा कर लिया, कलेवा के थाल में दूध, चाह, १ छटाक मिश्री, पाव भर फल, डेढ़पाव पकवान और कुछ तले मेवे होते हैं। इसमें आधा खाता हूँ और आधा जूंठन में जाता है। एक दो बजे तक भूख नहीं लगती। कभी २ फल सेव, नारंगी, केले वग़ैरह रख लेता हूं जो ५॥ बजे के क़रीब खाता हूं। नहाने के कमरे में एक बड़ी टब है जिसमें आदमी लेट जावे उतनी भरदी जाती है फिर ठण्ढे, गर्म जल के नल लगे हैं, फ़वारा लगा है, चीनी के मांगे, तसले रक्खे हुए होते हैं और चार तौलिये भी होते हैं। पाटा चौकी होती है, खूंटियां होती हैं। स्नान के बाद अधोवस्त्र सब छोड़ दिये जाते हैं जो सेविका धो डालती है। यहाँ सब काम गैस से होता है। गर्म पानी भी गैस से होता है। मेरे सोने के कमरे में एक बहुत बड़ी अंगीठी गैस की तापने के लिये है। एक छोटासा गैस का चूल्हा भी है जिस पर टूटींदार लोटा होता है। मैं उसमें ही गर्म पानी करके हाथ पैर वग़ैरह धो लेता हूं और कुरला वग़ैरह अपने कमरे ही में कर लेता हूँ। इस पर खिचड़ी, दूध, चाह भी हो सकती है। यहां की इस कक्षा की स्त्रियां कितनी परिश्रमी होती हैं। इस मकान वाली के मकान में १० आदमी, उनका कितना काम, फिर इसकी भतीजी इसके पास रहती है उसको वही परवरिश करती है। अपना व मह-

मानों का पांच वक्त का खाना वना देती है। जहां मैं खाने जाता हूं उस ढावे के मालिक का नाम कृष्णावीर है, जैसा मैं पहिले लिख चुका हूं। यह यहां १४ वर्ष से रहते हैं जो रायसाहव गिरधारीलालजी देहली वालों के मकान के पास रहते हैं। यहां दो वर्ष से इनका ढावा चल रहा है। सिर्फ नौकर तो दो, तीन आदमी हैं वाक़ी खुद दोनों भाई सपरिवार लगभग ६०, ७० आदमियों के ३ वक्त के भोजन का प्रवन्ध करते हैं। मेरे लिये अलग विशेष रूप से प्रवन्ध कर दिया गया है। सव हिन्दुस्तानी खाने जैसा चाहो वना सकते हैं। कल शाम को मैंने पूरी, वरफी, गुलावजामुन, छाना, वड़ा आलू, गोभी, मटर का साग, अचार, मुरव्वा वगैरह और तली हुई तहरी खाई। इस प्रकार यह परिवार रात को १२ वजे तक जुटा रहता है।

लंदन में उस समय का मौसम—यहां आम तौर पर आदमी ६ वजे सवेरे तक सोते रहते हैं। ६॥ वजे शाम तक ऐसा मालूम होता है जैसा अपने यहाँ कार्तिक महीने में ६ वजे हों, यहाँ आज कल ऋतु वड़ी अच्छी है। जिस कमरे में मैं सोता हूं वहां सूर्यनारायण का प्रकाश खूव रहता है और वगीचे में धूप खूव रहती है। यहाँ धूप निकलना ही महिमा है।

अण्डर ग्राउन्ड रेल्वे—फिर शनिवार को आर्य-भवन में गये। वैसे तो पैसे ज्यादा लगते, परन्तु १५० फीट धरती से नीचे नाला खोद कर शहर के नीचे रेल निकाली है उसमें वैठकर गये। वड़ा तमाशा देखा, नीचे उतरने के लिये कहीं तो लिफ्ट नीचे ऊंचे जाने वाली पालकी है जिस पर खड़े हुए और झटसे जा उतरे और जा चढ़े और कहीं सीढ़ियां हैं जो विजली से चलती हैं और आधे सेकिन्ड में नीचे उतार देती हैं। वैठते

चढ़ते और उतरते वक्त जो सावचेती न रक्खी जावे तो गिरने का अन्देशा रहता है।

मैं अपने साथ एक साथी रखता हूँ कि इन सब बातों से वाक़िफ़ हो जाऊं। इस वक्त अलमोड़े के जोशीजी मेरे साथ हैं। आर्य्य-भवन के स्टेशन तक पहुँचने के लिये इस धरती के नीचे चलने वाली रेल पर दो जगह बदलना पड़ा। स्टेशन, टिकटघर, बाबू लोग वाक़ायदा जैसे स्टेशन पर होते हैं वैसे ही हैं। फिर इस रेल से आगे एक मील पैदल चले तब आर्य-भवन आया। आर्यभवन के दरवाज़े पर गये। हर दरवाज़े पर घन्टी लगी रहती है। बिजली का बटन दबाया और मकान मालिक या स्थानरक्षक को खबर हुई; वह बाहर आया। उससे पता चला कि आर्य-भवन खाली है। उसने पूछा कि क्या आपही हिन्दुस्थान से आने वाले रसोईदार हो। हमने जवाब दिया इस मकान के मालिक के स्वजातीय हैं।

आर्य्यभवन के बनाने में दो तीन लाख रुपये खर्च हुए होंगे। सुना है कि कुछ रुपया तो रामगोपालजी मोहता बीकानेर वालों के हैं और कुछ बिड़लाजी के, लेकिन इस समय उचित प्रबन्ध न होने से बन्द पड़ा है। आज बिड़लाजी को लिखूंगा। अगर स्टेशन से मैं सीधा आर्य-भवन को जाता तो शायद घण्टों तकलीफ़ में पड़ा रहता और बड़ा कष्ट होता इसलिये विदेश में आदमी को एक इन्तज़ाम के भरोसे न रहना चाहिये। पांच जगह लिखा था जिसमें टामस कुक का इन्तज़ाम हुआ और कृष्णवीर खुद हाज़िर हुए और मेरे साथ हो लिये और सब तरह से घर के बराबर आराम में हूं।

शनिवार को शाम को सिर्फ सिनेमा देखा और कुछ नहीं किया। सिनेमा में जो तस्वीरें निकलती हैं खूब बोलती हैं, देखो कैसा विचित्र है! जैसे नाटक की नाट्यशाला में वैसे ही सिनेमा की चद्दर पर सब तस्वीरें काम व हरकत करतीं और बोलती दीखती हैं—घोड़े दौड़ते हुए, उनको दौड़ने की आवाज़ तथा आदमी की बातें अलग २ मालूम होती हैं और सब काम करते हुए दीखते हैं और ऐसा मालूम होता है मानो सब प्रत्यक्ष में हो रहा हो। एक चार गज़ की सफेद चद्दर पर सब दुनियाँ का दृश्य कैसे दिखाते हैं, देखो बुद्धि का चमत्कार!

रात को १० बजे खाना खाकर सोगये। खाने के ढाबे में जाने आने के लिये मोटर बस में बैठकर जाना आना होता है और क़रीब १। मील दूर है तथा -) एक आना एक वक्त बैठने का लगता है।

रविवार ता० ३-७-३२ ई०

लंदन में दक्षिण दिशा की तरफ़ की सैर—सवेरे उठे लेकिन यहाँ आज के दिन सब लोग गिर्जों में जाते हैं। ९ बज गये, कलेवा भी नहीं आया। पीछे पता चला कि सब गिर्जा में थे। कलेवा किया, हजामत की, हजामत हरएक को सवेरे पहिले प्रतिदिन करनी पड़ती है। इतने में मेरा सिकत्तर मिस्टर जोशी, जो बड़ी इंजीनियरिंग में पास हो गया है, आगया तथा ऊपर वाला पड़ोसी पहिले ही आगया था। हम तीनों बाहर रवाने हुये, साथियों के टिकटों के दाम बहुधा मैं ही दिया करता हूँ। लंदन के दक्षिण दिशा के आखिर तक गये, बाहर मोटर दुखनी के छत पर से देखते गये। पार्लि-

पार्लमेंट की इमारतें, राज के दफ़्तर और मुसाहब के रहने के मकान देखे, लेकिन सब बाहर ही से देखा और फिर विक्टोरिया स्ट्रीट देखी।

विक्टोरिया स्ट्रीट से आगे निकलने के बाद ज्यों २ आगे बढ़ते गये त्यों २ इमारतें छोटी २ लेकिन सुन्दर आने लगीं। शहर से बाहर जितनी रहने की इमारतें हैं दोमंज़ली से ज्यादा नहीं हैं और हरएक के साथ बगीचा लगा हुआ है। छोटे २ बंगले जिसमें एक गृहस्थी रह सके ऐसे ही होते हैं और सब आदमी अपने आप अपने बंगले व बगीचे का काम करते हैं।

क्यू गारडन्स—अन्त में हम एक बाग़ में पहुंचे जिसका नाम क्यू गारडन्स है। यह रामनिवास की तरह सुन्दर तो है परन्तु बहुत बड़ा और विशाल है। इसके बनाये रखने में लाखों रुपये का खर्च है। संसार के हरएक वृक्ष, बेल, झाड़ी, फल, फूल, जड़, बीज, वृक्षों के पत्ते मद और लकड़ी यहाँ इकट्ठे किये गये हैं। कोसों में एक तखता है, अनेक जाति के वृक्ष हैं, बीच में तालाब है जगह २ बैंचें पड़ी हैं। आज रविवार का दिन है। नागरिक बाहर चले जाते हैं। अपने साथ खाने पीने के थैले लेजाते हैं। लाखों इस बाग़ में भी आये थे। कोई स्त्री पुरुष अलग वृक्षों के नीचे पड़े हैं तो कोई अन्वेषण करते हैं, कोई चतुर पुरुष विद्याभ्यास हरएक वृक्ष के पास जाकर करते हैं। हरएक मौसम के वृक्ष, पौदे, झाड़ी के लिये अलग २ कांच के मकान बने हुए हैं। जब बाग़ के अन्दर मकान में गये तो देखा कि मकान ऐसा बना दिया गया है कि जो ऐसा गर्म था गोया ज्येष्ठ के महीने में अपने बाग़ में बैठे हैं फुल-वाड़ी के पौदों में गरम मुल्क के सदाबहार के पौदों को भी, जो अपने बगीचे में बहुत हैं, पाया और फिर दूसरे मकान के अन्दर

घुसे तो पाया कि आबूराज के सब वृक्ष हैं। तीसरे में घुसे तो अमेरिका के सब वृक्षों का नज़ारा पाया। इसी तरह एक मकान में घुसे तो छोटा सा तालाब है उसमें गर्म मुल्कों के भाँति २ के कमल हैं। पाँच सात कमल के पेड़ ऐसे देखे जिसका पत्ता, तुम मेरा विश्वास करो, बीच में से ४।। फुट चौड़ा घेरा १५ फुट के क़रीब अन्दर से बिलकुल चिकना, लेकिन शकल ऐसी थी जैसे मालपुवे उतारने की तवी याने पत्ते के चारों तरफ उठी हुई बाड़ थी और पत्ते के नीचे जैसे तार खिंचे हुए हों वैसी तन्तुओं की जाल थी और हर जाल के बीच में खूटी की तरह एक इंच की बिरंची की तरह नोकीली मेख थी।

भगवान् की लीला देखकर अश्रुपात उसकी महिमा में हुए और लंदन राज्य के इस खर्चे को देखकर उनके राज्य के बड़े होने में कोई सन्देह न रहा। वृक्षों और पौदों के लिये बड़े ऊंचे सैकड़ों काँचदार घर थे, यहाँ एक महल भी है जिसमें मौजूदा बादशाह जार्ज पंचम के हाथ के ८ वर्ष की उमर का लेख देखा।

यह महल विक्टोरिया महारानी के दादा का बनाया हुआ है। इतने में चार बज गये। मिस्टर अब्दुलहमीद ने, जिसको साथ लेगये थे, कहा कि मुझको पाँच बजे मिलना है। पस वे तो चले गये और मैं और मेरा सिकत्तर जोशी "रिच-मोंड की तरफ़ गये, क्योंकि स्टेशन पर नोटिस देखा कि ग्राफ जैपेलिन (Graph Jappelin), जो सबसे बड़ा हवाई जहाज़ दुनियां में है, जर्मनी से आया है। बाग़ के स्टेशन से जहाँ हवाई जहाज़ उड़ते हैं वहां पहुंचे पन्द्रह या बीस हज़ार आदमी उसके देखने को जमा थे। चाय व फल वालों की दूकानें थीं और हज़ारों मोटरें थीं।

पचासों छोटे २ हवाई जहाज़ उड़ रहे थे, उड़ने के लिये ५ मिनट के लिये ५ शिलिंग का टिकट था। आध घन्टे के लिये १५ शिलिंग थे। मैंने भी उड़ना चाहा परन्तु जब जाकर टिकट देने वाले अफ़सर से कहा तो उसने जवाब दिया कि अभी आध घन्टे तक, जब तक जैपलिन यहां न उतरले, टिकट नहीं दे सकते।

फिर बाहर आगये। वह भी बाहर आया हुआ था उससे कहा कि हम जैपलिन को मैदान के अहाते के अन्दर जाकर देखना चाहते हैं भीड़ में से तो देखना कठिन है। वह हमको लेगया और एक ही कुर्सी थी उस पर बैठा दिया। मैं साफा बांधे हिन्दुस्तानी पोशाक में रहता हूं, इसलिये कई लोग चलाकर सलाम करते हैं। कई लौंडे, लौंडियां हँसते भी हैं। यहां सब टोप लगाते हैं। थोड़ी देर में वह हवाई जहाज़ दिखाई दिया। धीरे २ हमारी तरफ़ चक्कर लगाता हुआ आया, दूसरा चक्कर लगाया। जिस विक्टोरिया जहाज़ में बैठे थे उससे ज्यादा बड़ा था। पूछा कितने आदमी बैठ सकते हैं, क्योंकि मेरा अनुमान था कि ३००० आदमी बैठ सकते हैं, पता चला कुल २४ आदमियों के सोने की जगह है। और क़रीब १४ आदमी उसमें काम करने वाले हैं। इस जहाज़ की शक्ल बिलकुल मछली के मुआफ़िक थी। जहाज़ के नीचे छाती की जगह पर आदमियों के रहने और सोने की जगह जहाज़ के कोई हज़ारवें हिस्से में थी। छः किश्तियां थीं जिनमें आदमी थे। एक आदमी को जहाज़ में से बारी में होकर कूदते देखा। खुले हुए दरवाज़े में एक अफ़सर था जिसको दरवाज़े पर खड़े हुए बिल्कुल डर नहीं लगता था। जहाज़ में से रस्से फेंके गये, मुंह की तरफ़ से रस्सों को खींचने वाले नीचे मैदान में १०० आदमी थे। रस्सा पकड़ कर खींचा हुआ जैपलिन का मुंह टिका पूंछ नहीं टिकी, आदमी उतरे। फिर २० मिनट ठहर कर जहाज़ उड़ने

लगा। हम भी भीड़ से बचने के लिये जल्दी आकर रेल में बैठे, वह बड़ा जहाज़ भी जर्मनी की तरफ़ हमारे साथ २ चला। बड़ा दृश्य रहा। देखो लीला आदमियों की। पूछने से पता चला कि इतने बड़े जहाज़ के बदन में गैस ही गैस भरा हुआ है और इस-ही कारण से यह इतना हलका है। और यह गैस से ही चलता है। इनकी बुद्धि की गति को धन्य है!

(लंदन) ता० ४-७-३२ ई०

डाक्टर कटियाल व महात्मा गांधी—आज ता० ४ होगई। दांत कल तक तैयार हो जावेंगे। आज बिड़लाजी के सिफारिशी डाक्टर कटियाल आये थे और मुझको मोटर में बैठाकर लेगये। यह वही मोटर है जिसमें महात्मा गांधी बैठे थे तथा लंदन में घूमे थे। डाक्टर कटियाल महात्मा गांधी के साथ हर वक्त रहते थे और यह मोटर बिड़लाजी की ही मालूम होती है जो महात्मा गांधी के लिये नियत थी। डा० कटियाल मुझको एक होटल में लेगये, जहां राजा सर वासुदेव कालिनगोड (मद्रास) ठहरे हुए हैं उनसे मिलाया और असोसियेटेड प्रेस के एडीटर मिस्टर आयंगर से मिलाया। फिर हम हेनरी पोलक साहब (Mr. Henry Polak), जो एक नामी बैरिस्टर हैं, जिनके नाम भी बिड़लाजी की चिट्ठी थी उनसे मिले। सब ही नामी आदमियों से मिलेंगे। यह पोलक साहब बड़े प्रतिष्ठित आदमियों में से हैं ऐफ्रिका में महात्माजी का साथ दिया था और अपने यहां के रायबहादुर पं० अमरनाथजी अटल से इनका गाढ़ स्नेह है और डा० सर सप्रू साहब के बड़े मित्र हैं।

(लंदन) ता० ५-७-३२ ई०

चिरंजीविनी आशी: !

बस आज से यहाँ के प्रतिष्ठित पुरुषों से मिलने का समय नियत हुआ। बहुत चिट्ठियां आई हैं। सब बड़े आदमी, जिनसे मिला, कहते हैं कि किसी बड़ी होटल में न ठहरना आपकी शान के ख़िलाफ़ है, लेकिन होटल में गये और भूखे मरना शुरू हुआ। यहां तो केवल 'ऊंची दुकान और फीके पकवान' की बात है।

(लंदन) ता० ६-७-३२ ई०

पार्लियामेंट हाउस आफ कामंस—अंग्रेज़ मित्रों के कहने के मुताबिक़ मैं कल मकान के बदलने की तलाश में बहुत रहा, लेकिन कोई जचा नहीं। फिर मेरे पास एक पार्लियामेंट के मेंबर की चिट्ठी आगई थी जो बड़ा ज़बरदस्त मेंबर है। उससे तीन बजे का समय निश्चित हुआ सो वहां पहुंचा। यहां हर काम टेलीफोन से होता है। बड़ा अच्छा बर्ताव किया और बातें कीं, क़रीब डेढ़ घंटा ठहरा वहां से फिर सर हॉवर्ड डी एगविल (Sir Haward-de-Egvill) के पास पहुँचा। उनसे पास लिया और पार्लियामेंट जो यहाँ राजकीय महासभा है और जो सब के ऊपर है और जिसके आदेशानुसार यहाँ के राजराजेश्वर जार्ज पञ्चम को राज्य करना पड़ता है याने उस हाउस आफ कामंस (House of Commons) को देखा। वहां बादशाह की कुर्सी तो खाली थी, क्योंकि बादशाह वर्ष में एक बार बुलाया जाता है, लेकिन बादशाह के कुछ राजकीय चिह्न मौजूद थे और

मैंबर लोग आते जाते झुक कर सलाम करते थे। बहस खूब होती है और ३ बजे से ११ बजे तक हर रोज़ बहस होती है और हुक्म निकलते हैं। मैंने तुम लोगों के भाग्य से और बड़कों के पुण्य प्रताप से यहां बैठने में बड़ी अच्छी कुर्सी Dominions Gallery डमीनियन्स गैलेरी में, जहां ब्रिटिश साम्राज्य के बड़े आदमी बैठाये जाते हैं, पाई। खूब देखा।

इस पार्लियामेंट भवन के पास ही एक बहुत सुन्दर प्राचीन गिर्जा है जिसका नाम वेस्ट मिनिस्टर अबे (Westminister Abbey) है। यहां ही सब राजा और प्रधानमन्त्री गाड़े जाते हैं और यहां ही सब राजाओं का राज्याभिषेक होता है। जब अपने बड़े दरबार विलायत पधारे थे यहां ही राजराजेश्वर एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेकोत्सव में शामिल हुए थे, प्रत्येक मन्त्री अथवा जिसकी भी क़बर है उसके ऊपर उसकी मूर्ति है।

आज फिर २ बजे से बाहर निकलता हूं। देखो क्या २ होता है, लिखूंगा। कल जिन पार्लियामेंट के मेंबर से मिला उनकी तस्वीरें भेजता हूं और सब आनन्द है। आज एक अंगुली की पट्टी तो खोलदी दूसरी की दो चार दिन में खोलूंगा। खर्च खूब होता है और फिर भी मैं यहां कंजूसों की गिनती में हूं।

भोजन करके इंडिया ऑफिस में गया। भारतसचिव (Sir Samuel Hoare) से मुलाक़ात तै करने के लिये, प्राइवेट सेक्रेटरी मिस्टर क्रोफ्ट (Mr. Croft) को एक बड़े आदमी की सिफ़ारिश देकर आया हूं। जब वक्त मिलेगा मिल आऊंगा। कर्नेल पेटरसन साहब खाना खाने गये थे, फिर मिलूंगा। सर मैनच-

रजी भावानगरी के पास गया; यह भारतवर्ष के बड़े प्रतिष्ठित वृद्ध पुरुष हैं, पार्लियामेंट के मेम्बर रह चुके हैं। वहां से मेजर ग्रेहमपोल (Major Graham Pole) के साथ गया वे खुद मुझको पार्लियामेंट में ले गये और मेजर मिलनर (Major Milnar), जो पार्लियामेंट के मेम्बर हैं और अभी हिन्दुस्तान में फ्रेंचाइज़ कमेटी में गये थे, उनसे मिलाया। और कई नये आदमियों से मिलाया और पार्लियामेंट फिर दुबारा दूसरे दिन देखा, स्पेसियल गैलेरी फ्रांट रो (Special Gallery Front Row) में कुरसी देखने को मिली और सब बातें बड़ी अच्छी तरह से देखीं व सुनीं। आज आयरलेण्ड फ्री स्टेट पर कर लगाने के प्रस्ताव पर बहस थी।

No. 126, 5th July 1932 Page 2101 order of the day (No. 2 and No. 3) No. 127, 6th July page 2114 order of the day A 3 Free State (Special Duties Bill; Second Reading).

लंदन में रात्रि के समय बाज़ार की सैर—पार्लियामेंट के बाहर निकलते ही मिस्टर के. लाल (Mr. K. Lal) से भेंट हुई, ये भारत इंजीनियरिंग कम्पनी कानपुर के मालिक हैं, बड़े उत्साही व्यापारी हैं, १४ वर्ष से प्रतिवर्ष यूरुप में आते हैं और अपने भाइयों को भी खूब यहां शिक्षा दी है। अच्छे मैशीनरी के व्यवसाय में लगे हैं। कानपुर उपद्रव के केस में सब से पहिले विटनेस ये ही थे इनका साथ हुआ, इनके साथ भोजन करके बाज़ार में गया और एक ऐसी जगह पर पहुँचा जहां जुआ खेला जाता है और जहां बिजली के बटन दबाने से तरह २ के खेल होते हैं जो पैसों से दाव लगा कर खेले जाते हैं। वहां एक कमरा है जिसमें इस तरह के कांच लगे हैं जिसमें विकृत सूरतें दीखती हैं,

कहीं सिर बड़ा और पैर बच्चे के से, कहीं मुंह गोल, कहीं पैर पांच फिटके और सिर तीन इञ्च का। ख़ैर एक कमरे में गये, जहां मछलियां (Mermaids) देखीं, जिनकी शकल आदमी और औरत की सी थी, सिर्फ दुम मछली की सी थी। यह मछलियां समुद्र की तह में रहती हैं और कभी२ बाहर दीखने में आती हैं। घास फूस खाकर, जो समुद्र के नीचे होता है, उससे अपना जीवन बसर करती हैं। सुना ही करते थे आज देख भी लिया। यहां ८ बजे रात से १२ बजे तक बाज़ारों में जीवन रहता है बड़े दुकानदार तो ८ बजे के क़रीब दुकानें बंद करके चले जाते हैं। हर दुकान का बाहर का ढक बड़े २ कांचों का होता है और हर चीज़ के ऊपर क़ीमत लिखी रहती है, भाव कराने की ज़रूरत नहीं, बिल के मुताबिक दाम देने पड़ते हैं और ऊपर से कुछ पैसे आदमियों को और देने चाहिये लेकिन अपनी २ चीज़ की इश्तिहारबाज़ी इतनी होती है कि कहीं तो पांच छ: खन के ऊपर झण्डा लगा देते हैं, अपना नाम लिख देते हैं और यहां झण्डे की मुमानियत नहीं होती, कहीं बिजली के चमक के नाम होते हैं, कहीं बड़े २ इश्तिहार। सवारियों की और मोटरों की भीड़ इतनी ज्यादा होती है कि सड़कों को पार करना यहां कुछ काम रखता है और हमेशा बड़ी सावधेती रखनी पड़ती है।

(लन्दन) ता० ७-७-२२

आज दिन भर उन्हीं मिस्टर K. Lal के साथ ही रहे, फिर इन्हीं सज्जन के साथ सेंटपाल नामी गिर्जा देखा। सब गिर्जे रोम के गिर्जाओं से छोटे हैं और नीचे हैं, ऐसी विशाल देवताओं की इमारतें जैसी रोम में देखीं और कहीं नहीं हैं। हां यों तो अमेरिका में

१२०० फीट ऊंची और ६० खण्ड की इमारतें भी हैं जो एक २ मकान एक २ क़सबे व शहर के बराबर होता है।

वहां से टामस कुक के दफ़्तर में गया, तलाश किया कि क्या कोई तुम ने तार चिट्ठी भेजी है, पता चला कि बिलकुल नहीं।

फिर वापिस आकर इन्हीं सज्जन के साथ भोजन किया और व्यापार सम्बन्धी बातें करते रहे। रात को यहां का हाइड पार्क नामी बाग़ देखा। जगह २ भिन्न २ प्रकार के व्याख्यान हो रहे थे, जगह २ साहब मेम जोड़ा जोड़ी की तरह पड़े थे, बड़े निर्लज्ज हैं। किनारे २ इसके एक झील बनाई है जिसको सर पेन्टाइन लेक कहते हैं। जगह २ हज़ारों कुर्सियां पड़ी हैं, जो बैठे उससे ≈) आने ले लिये जाते हैं, वरना बैंच पर बैठो।

(लन्दन) ता० ७-७-३२

इस समय एक जहाज़ की कम्पनी के दफ़्तर में बैठा हूँ। मेह बरस रहा है, बैठा २ क्या करूं इसलिये यह चिट्ठी लिखने लग गया हूं।

लन्दन के बाज़ार—पैरिस की तरह रोशनी तो बड़ी तेज़ और रंगबिरंगी है, खुलती जुड़ती है, रंग फेंकती है, पुतलियां वग़ैरह तरह २ की नाचती हैं और नये २ तमाशे रोशनी में हैं। यहां लन्दन में एक बाज़ार में एक चीज़ नहीं बिकती, एक बाज़ार में अनेक तरह का सामान। मांस वाले की दुकान के पास बजाज की और बजाज के साथ फल वाले की। माली मालन भी हैं पर

हार नहीं वेचते, फूल जगह २ वेचते हैं। फल वाले भी अपनी दु-कान व खोमचे को सजाते हैं, एक २ फल अलग २ सजाते हैं, एक के ऊपर दूसरा नहीं डालते और सब के नीचे हरी घास की बाढ़ सजाते हैं। फल खोमचे वाले भी वेचते हैं। मांगने वाले भी बाज़ार में मिलते हैं पर किसी से मांग नहीं सकते, लेकिन सितार या कोई बाजा लेकर बजाते रहते हैं, कोई सड़कों पर चित्रकारी कर देते हैं, कोई सुन्दर लेख लिख कर वैठ जाते हैं, कोई सिगरेट, दियासलाई का खोमचा लटकाते हैं। जो कोई एक पेनी, दो पेनी दे जाता है सबर कर लेते हैं। दाम हरएक चीज़ के हिन्दुस्तान से पचगुने ज्यादा हैं । ब्रुस नहीं लाया, जिसके खरीदने में भारतवर्ष में जो ।) चार आने को मिल जाता है, २॥ शिलिङ्ग याने क़रीब २) रुपये के लगे। फिर एक रास्ते में पहुँचे जिसमें नाटक-घर और होटलें थीं। यहां का जीवन चौके चूल्हे को नफ़रत करनेवाला है। होटलों में खाना और जच्चेखाने में जनना, घर पर सोना और चाय दूध सवेरे के वक्त पीना, यही यहां का जीवन है।

(लंदन) ता० ८-७-३२ ई०

आज ता० ८ होगई। आज सर रेजीनाल्ड ग्लैंसी साहब से मिलने का वक्त है और आज ही तुम्हारे पास हवाई जहाज़ से चिट्ठी भेजने का भी वक्त है। कल बाज़ार में एक कांचों का दफ़्तर देखा जिसमें दीवार, आले, आलमारी कुल कांच ही कांच के बने थे।

चिरंजीविनी को आशीस ! ता० ८-७-३२ ई०

आज हवाई जहाज़ से चिट्ठी डाल चुका। अब भी डालता तो भी पहुंच जाती, परन्तु सुभीते में डालदी। सर रेज़िनाल्ड ग्लैंसी साहब से १॥ घन्टे तक बातें हुईं फिर सर शादीलालजी आगये वर्ना और बातें होतीं। कई विषयों पर बातें हुईं। कल कर्नल पेटरसन साहब की मेम ने चाह पानी के लिये बुलाया है, परन्तु कल मैं हैसलमेर जाऊंगा, जहां अपने जयपुर के इंजीनियर स्टोथर्ड साहब रहते हैं। कल उनके यहां ही मेरा चाय पानी है। यहां शनि, रवि को लोग शहर से बाहर बाग़ में जाया करते हैं। रविवार को एक दावत है उसमें जाऊंगा। सोम को कर्नल पेटरसन साहब के चाय पानी में जाऊंगा।

(लंदन) ता० ९-७-३२ ई०

लंदन पुलिस और मुसाफिर—स्टोथर्ड साहब से मिलने के लिये हैसलमेर नामी एक कसबे को इस वक्त कोई साथी न होने से अकेला ही रवाना हुआ। बाहर निकलते ही पुलिसमैन से दरियाफ़्त किया, उसने कहा कि नम्बर १ बस में बैठ कर वाटरलू स्टेशन पर चले जाइये। यहां किराये की मोटरें हर समय, हर जगह मिलती हैं, लेकिन १ मील का १ पेनी लगता है। बस सौ पचास आदमियों के बैठने की मोटर है। दुमनी भी हैं उसमें -) आना मील से भी कम लगता है और नम्बर डले होते हैं तथा जगहों के नाम लिखे होते हैं, १ मील में तीन जगह

ठहरती है, हज़ारों ऐसे बस हैं। मैं नम्बर १ की बस में बैठा। वाटरलू स्टेशन पर उतरा। यहां सैकड़ों ही स्टेशन हैं। आदमी को घर से निकलने के पहिले सब जान लेना चाहिये कि कहां और कैसे जाना चाहिये। पुलिसमैन जो हर चौराहे पर होते हैं उनसे सब पूछ लेना चाहिये, यह बड़े भले होते हैं।

रेलवे स्टेशन और मुसाफिर—वाटरलू स्टेशन पर पहुंचते ही सड़क पार करने की फ़िकर पड़ी। आधी सड़क जाने के लिये और आधी आने के लिये होती है। मुझको हिन्दुस्तानी लिबास में देख कर पास वाले एक भले आदमी ने सलाम कर मेरा हाथ पकड़ा और मुझको सड़क से पार किया, क्योंकि मैं १२॥ बजे पीछे घर से रवाना हुआ था और गाड़ी १ बजे से पहिले जाती थी, मुझ को फ़िकर था कि टिकट ले जल्दी बैठूं। टिकट-घर तलाश किया, टिकट क्लर्क ने कहा हमारे पीछे होकर टिकट घर में जाओ। वहाँ पहुँचा तो दहनी तरफ़ से घुस गया जितने में एक मेम ने, जो टिकट लेरही थी, कहा—मेहरबानी करो। मैं समझा कि अरे, मैं बांये हाथ होकर नहीं आया, मुआफी मांगी। हिन्दुस्तान की तरह यहां भीड़ टिकटघर पर नहीं होती, मुसाफिर एक २ की क़तार में एक के पीछे दूसरा खड़ा होता है और टिकट क्लर्क टिकट देने में २ सेकेन्ड से ज्यादा नहीं लगाता। मुझको टिकट तो फ़ौरन दे दिया लेकिन मुझको दामों का पता नहीं था, जेब से निकालने में आधा मिनट लग गया। इसमें उसने तीन जनों को टिकट देदिया। 'अब मेहरबानी करो, मेहरबानी करो' की आवाज़ आई। वापिस १० शिलिंग की बचत के दाम लेने मुश्किल होगये। दिल्ली की तरह कई लाइनें एक २ स्टेशन पर से जाती हैं। देहली में तो ऊपर चढ़ना पड़ता है

लेकिन यहां नहीं। मैं ६ नंबर के प्लेटफार्म पर घुसने लगा, परंतु क्लर्क ने कहा आप मेहरबानी करके १० नम्बर में जाइये, घबराइये नहीं, आपके लिये अभी वक्त है।

रेल के मुसाफ़िरों का बर्ताव—तीसरे दर्ज़े का टिकट था १० नम्बर प्लेटफार्म में घुसा और सब गाड़ी भरी पाई। एक कम्पार्टमेंट में दस आदमी बैठते हैं, एक में ६ थे, झट एक मेम ने उसकी खिड़की खोली और झट सब सरक गये और मुझ को बैठा लिया। अपने यहां की तरह नहीं कि यही कोशिश रहे कि कोई और न आने पावे। फिर पास वाले भले आदमी से दरियाफ़्त किया कि यही गाड़ी हैसलमेर जाती है न? पूरा विश्वास होगया, उस आदमी ने कह दिया कि वह स्टेशन आवेगा जब मैं आपसे कह दूंगा, मैं उधर को ही जारहा हूं।

इङ्गलैण्ड का ग्रामीण जीवन—२॥ मिनट बाद गाड़ी चल दी। रास्ते में सैर करते गये, ठीक सवा घण्टे बाद हैसलमेर आया वहां उतरा, टिकटघर होकर जाने लगा कि Mr. C. E. Stotherd (सी.ई.स्टोथर्ड) साहबने कहा आपही सोमानीजी साहब हैं? टिकट आने जाने का था, सस्ता किराये का था। आधा मैंने फाड़ कर हाथ में पहिले से ही ले लिया था, आधा जेब में था। झट मुझको मोटर में बैठाया एक दुकान पर ठहरे और कुछ खाने के लिये बांधकर मोटर में रखकर मुझ से कहा कुरले करो तो करलो, फिर मुझे सैर के लिये ले गये, ३० मील घुमाया और दस बीस गांव दिखाये। उनमें एक गांव उप-भारतसचिव लार्ड विन्टरटन साहब का था, मैंने ऐसे भी पुराने गांव देखे जो क़रीब १००० वर्ष पहिले के थे। बड़ौदे महाराज की कोठी भी वहां पहाड़ी पर थी, जो साढ़े तीन लाख को बेचते हैं। खूब घूमे, सब चीज़ें

देखीं। घास की बागर लगाते हुए उतर कर देखा, पांच बुड्ढे आदमी लगा रहे थे। मैंने कहा गीला घास क्यों चुनते हो और एक से उम्र पूछी तो साहब ने कहा यह तो यहां गाली समझी जाती है। ख़ैर, उसने हंस कर जवाब दे दिया। गोशालायें देखीं—गायें मोटी, ताज़ी, अच्छा दूध देती हैं। खेती नहीं करते, सिर्फ घास काटते और गायें रखते हैं। फिर हम साहब के बंगले गये, रास्ते में बातें होती रहीं। रा० ब० पं० अमरनाथजी, तीनों दफे जब विलायत गये साहब के गांव हैसलमेर में आये। साहब ने एक २ जयपुर वाले को याद किया। अपने पुराने ऑफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट और अकाउन्टेन्ट—बाबू नन्दकिशोरजी अरोड़ा को, जो अपने पड़ोसी हैं, बहुत याद किया, उनको कहला भेजना। अपने फर्राश बालजी की, जो उनका दर्जी था, मौत का हाल जानकर रंज माना, उसके लड़के मोनामल से कह देना। जुगलजी को कह देना, पुराने ओवरसियर बाबू सुगनचन्दजी को भी बहुत याद करते थे। चाय पानी पिया, बगीचा देखा, गुलाब का बसन्ती रंग का फूल देखा, माला पहनाई, बहुत खातिर की और वापिस स्टेशन पर लाये, पूछा तीसरे दर्ज़े में क्यों आये, मैंने जवाब दिया कि मुझको यहां के तीसरे और पहिले दर्ज़े में तमीज करने की लियाकत नहीं। सब में मखमल के गद्दे हैं, सब में बड़े अंग्रेज़ व मेमें बैठी हैं।

वापिस आकर एक नाटकघर देखने गये, अपने भारतवर्ष के नाटकों से यहां के नाटक गिरे हुए हैं। वहां शिक्षा मिलती है, यहां व्यभिचार के लिये उत्तेजना, अब नहीं जाऊंगा।

(लन्दन) ता० १०-७-३१

चिरंजीविनि ! आशीः,

मिसेज़ बृजलाल नेहरू का ऐटहोम—सवेरे तो दक्षिण का तरफ़ एक दोस्त साथी मुसाफ़िर से मिलने गया जिसके ज़रिये जर्मनी में एक आदमी के पास ठहरने का पता लगाना था। यहां सवेरे से मतलव ६ बजे से १२ बजे तक समझना चाहिये, क्योंकि अक्सर ६ बजे से पहिले आदमी उठकर काम में नहीं लगते और १२ बजे रात को सोते हैं तथा इस समय १० बजे के क़रीब शाम होती है। फिर ४ बजे ऐटहोम में पहुँचे, वहां सब क़रीब २ हिन्दी बोलते थे, एक कोई बड़े घर की वयस्का स्त्री, जिसको पीछे जाना कि अतिया बेगम है, जवान स्त्रियों से लिपट कर बातें करती थी। जेवर में अंगूठियां बहुतसी लादे हुए थी। एक संन्यासी भी भगवां कपड़े पहिने हुए लेकिन अंग्रेज़ी स्टाइल में चाय पानी में शरीक हुए थे। १५० आदमी थे। वहाँ ही ६० या १०० वर्ष की आयरलैंड की वृद्धा स्त्री मिसेज़ डेसपार्ड से मिलना हुआ, यह आयरलैण्ड में स्त्रियों का उत्थान कर रही है। मिस्टर पटेल साहब जो भारतवर्ष में लेजिस्लेटिव असेम्बली के प्रधान थे उनसे भी मिला और कई आदमियों से मिला, फिर चले आये। आज और कल शाम को यहां अपने यहां की सी वैशाख कृष्णा की जैसी गर्मी थी सब आनन्द है, बाहर जाते हैं।

(लन्दन) ता० ११-७-३२

३१ क्रामवेल रोड में भारतीय विद्यार्थी-गृह—कल फिर हम बाहर गये, ३१ क्रामवेल रोड में बेनर्जी से, जिनके नाम छपाई

जहाज़ वाले नवाबजी ने मेरे जयपुर से प्रस्थान के दिन चिट्ठी मेरे ठहरने के लिये लिखी थी, मिले। उन्होंने मेरे ठहरने का प्रबन्ध टॉमस कुक के मार्फ़त कर लिया था। लेकिन यहां विद्यार्थी ही ज्यादा रहते हैं, जगह अच्छी है, भोजन सादा मिलता है, एक वक्त का १।) रु० लगता है। दाल, भात, लपटा, तरकारियां मिलती हैं। वेनर्जी आदमी भले, अनुभवी और नीतिज्ञ हैं। विद्यार्थियों की संभाल के लिये सरकार से वेतन पाते हैं और यह विद्यार्थी गृह भी सरकार की सहायता से ही बनाया है।

कर्नल पेटरसन साहब का आतिथ्य सत्कार—वहां से आकर कर्नल पेटरसन साहब (Col. Patterson) के मकान पर गये परंतु साहब नहीं थे, आध घण्टे बाद आ गये, कमरा खूब अच्छा सजा था। वहां एक नौकरानी थी और उनकी मेमसाहिबा थीं। मैं इसके पहिले टॉमस कुक के दफ़्तर में तुम्हारी चिट्ठियों की तलाश में गया था। वहीं ज्यादातर हिन्दुस्तान का पड़ाव है, वहां पर कई आदमी मिले, मैं हिन्दुस्तानी लिबास में रहता हूं इसलिये मेरे पास आ जाते हैं और सलाम करते हैं। एक लड़के ने सलाम किया और कहा मैं अजमेर का गौड़ ब्राह्मण हूं और रामचन्द्रजी नसीराबाद वाले का लड़का हूं, कल अजमेर जाऊंगा और वह दूसरे तीन लड़कों को लाया जिनमें एक गौड़ ब्राह्मण जयपुर के ठिकाने खेतड़ी के पास ग्राम पांचेड़ी का रहने वाला था और फिर आगे परिचय दिलाया कि यह आपके भानेज मिस्टर लक्ष्मीनारायण मूना के पास रहता था, अब हमारे पास रहता है। आजकल बिलकुल फालतू है, इसको आप साथ ले जा सकते हैं और हम तीनों अजमेर जाते हैं। आप हमारा मकान ले लीजिये। मैं उनके साथ गया, मकान बहुत अच्छा और सस्ता था लेकिन एक

शौकीन हमारे पहिले पहुंचा और उसे रोक लिया। एक दूसरा और भी छोटा कमरा खाली है, देखा जावेगा। उस लक्ष्मीनारायण के साथी को रख लिया जो पेटरसन साहब के यहां भी साथ गया था। पहिले तो मेम साहब ने अपना कमरा दिखलाया जिसमें बाईजी की दी हुई पंखी और मेरी दी हुई तस्वीर भी रक्खी थी, फिर इधर उधर की बातें कीं। फिर नीचे खाने के कमरे में ले गईं और दूध चाय पिलाया, इतने में साहब भी आ गये। साहब गले की तकलीफ़ की वजह से बोल नहीं सकते लेकिन वैसी ही मोहब्बत करते हैं जैसे भारतवर्ष में करते थे। अगर गले की तकलीफ़ न होती तो उनसे खूब काम लेता। अब कल डेढ़ महीने की छुट्टी लेकर स्वीजरलैण्ड जा रहे हैं।

वहां से आकर नेचर हिस्ट्री म्यूज़ियम (Nature History Museum) देखा। वहां हाथी, घोड़े, कुत्ते, बैल वग़ैरह सब जानवर सब देशों के खाल भरे हुए जिन्दा के मुताबिक देखे। एक हाथी का दांत १०॥ फुट लम्बा देखा। कुत्ते सिंह के मुताबिक बड़े २ देखे।

फिर नदी टेम्स-(R. Thames) पर गये जो शहर के बीच में होकर निकली है। सुन्दर दुरतफा पाल बनी हुई थी। किश्ती में बैठ कर सैर करने के लिये ॥।) आने लगते हैं। सैकड़ों बड़े पुल, जिनके नीचे होकर जहाज़ आ जा सकते हैं, बंधे हुए हैं। ऊपर उनके आदमी, सवारी और जानवर वग़ैरह चलते हैं। कुछ घोड़ेगाड़ी, दूध वग़ैरह के सामान को ढोने के लिये चलती हैं। इसलिये एक दो जगह बाज़ार में उनके लिये पत्थर की खेलियां व कूंडियां बनी हुईं और पानी से भरी हुई देखीं।

(लन्दन) ता० १२-७-३२

चिरंजीव कमले ! पूर्ण आनन्द में रहो,

आज पहिले तो यहां एक लंदन-टावर (London Tower) है उसको देखा। यह एक पुराना हज़ार वर्ष पहिले का दुर्ग है जिसके समान अपने जयपुर के राज्य में भी कई हैं। इस मकान के देखने से पता चलता है कि इङ्गलैण्ड के राजा पहिले जयपुर के एक वड़े ठिकाने के सामन्त के वरावर थे। कुचामन (मारवाड़) का गढ़ इसके वरावर का सा है। अव इसमें पुराना शस्त्रागार है और एक कमरे में वादशाहों के मुकुट व सोने के राजकीय चिह्न रक्खे हैं। वह मुकुट भी रक्खा है जो देहली के राज्याभिषेक के समय वनाया गया था। इसमें थोड़े से सिपाही रहते हैं, जिनकी वर्दी वड़ी शानदार है और चन्द सिपाहियों की टोपी अज़ीव है। जिस तरह जिन पुराने औज़ार से पुराने इङ्गलैण्ड के राजा अपने वन्धुओं को आघात पहुँचाते थे वे सव भी वहां रक्खे हुए हैं। जो सव गोरांग प्रभुओं की पुरानी सभ्यता के द्योतक हैं। पास में ही नदी वहती है। नदी पर एक पुल वना हुआ है। यदि कोई वड़ा जहाज़ जाता है तो पुल टूट जाता है जैसे कलकत्ते में हौड़ाव्रिज, इसको टावर व्रिज कहते हैं।

हिन्दुस्तानी ढावा और रानी—वहाँ से हम एक इण्डिया रेस्टूरेंट याने ढावा में, जिसमें दाल भात मिलते वा फुलके वनते हैं, खाने को गये तो देखा कि महारानी मंडी पञ्जाव भी वहां जीम रही हैं और महाराज के प्राइवेट सेक्रेटरी भी वहां खा रहे हैं। १८ या २० वर्ष की सुन्दरी है। साड़ी हिन्दुस्तानी पहिने थीं और चूड़ियां भी पहिने थीं, हिंगलू की

टीकी भी मस्तक पर लगी थी, लेकिन हमारे सामने तीन बार बटुवे में से कांच, ब्रुश और कंघा निकाल कर वाल संभाले, अंग्रेज़ी फैशन में थीं, होट रंगे हुए, भौंहें रंगी हुई थीं। भारत की स्त्रियां यहां सब इस फैशन में ही रहती हैं। ढावे वाला ६ आने में चावल, ६ आने में दाल, ६ आने में साग, २ आने में एक फुलका देता है इस तरह साढ़े चार रुपये दो आदमियों के साधारण भोजन में लगे, गरीबी पेटभराऊ भोजन था, तृप्त नहीं हुए थे।

वहाँ से आकर (Art Gallery) एक चित्रशाला में गये, जहां चित्रकारों की वनाई हज़ारों तस्वीरें थीं। मकान विशाल, तस्वीरें बड़ी और कोई तो ऐसी थी कि असलियत को पूरी पहुँचती थी। लेकिन जयपुर के कारीगर हमारे वालकपन में इससे ज्यादा कारीगरी रखते थे। अफ़सोस! हमारे देश का हुनर नष्ट होरहा है और साम्प्रति और भी अधिक!

ईस्ट इन्डियन ऐसोसियेशन—वहां से एक जगह का बुलावा था। इन्दौर के डिपुटी मन्त्री के मारफ़त मिस्टर ब्राउन सी. आई. ई. के नाम पत्री लाया था जिन्होंने ईस्ट इंडियन ऐसो-सियेशन (East India association) नाम की संस्था में बुलवाया था। आज की सभा की प्रधाना, हिन्दुस्तान से वापिस आये हुये, लार्ड रीडिंग साहब की लेडी साहिबा थीं। 'हिन्दुस्तान की स्त्रियां कैसे उन्नत हों' इस पर व्याख्यान था, मिसेज ग्रे प्रधान वक्ता थीं जिन्होंने अपना लेख पढ़ कर सुनाया। सभा में स्त्री-पुरुष सब ही थे, दो चार राजा भी थे। एक हैदरावाद की तरफ़ की रानी थी जो नाक में दोनों तरफ हीरे की लौंग पहिने थी। हिन्दुस्तानी स्त्री की यहां यही पहचान है कि धोती पहनती हैं और जो मेमें हिन्दू होगई हैं वे भी धोती पहनती हैं और हिंगलू की टीकी (बिन्दु)

हिन्दुस्तानी महिलाओं की भाँति लगाती हैं। व्याख्यान हुआ, और खंडन मण्डन खूब हुआ। एक स्त्री, जिसकी आंखों में लज्जा थी और जो यू. पी. की सी ज्ञात हुई, आई और बड़े मधुर शब्दों में और अच्छी अंग्रेज़ी में कह सुनाया कि भारतवर्ष की स्त्रियां सब पतिव्रत धर्म को लिये हुए अपने आप सब कर लेंगी, उनको किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है। पं० ईश्वरशरणजी भी मौजूद थे उन्होंने भी खूब फटकार बताई। मैं भी बोलता लेकिन मुझे कुछ पहिले मालूम नहीं था इसलिये अवसर नहीं मिला।

(लन्दन) ता० १३-७-३२ ई०

चिरंजीविनि ! आनन्द में रहो।

लंदन जू (Zoo)—प्रभात हुआ लंदन की टावर का हाल तो कल की चिट्ठी में आया ही है, आज अभी जू (Zoo) देखने जाता हूँ। जैसे रामनिवास में अपने यहां चिड़ियाख़ाना है, बन्दरों की जगह है, रीछ रहते हैं तथा अनेक प्रकार के वनचर पशु हैं वैसे ही यहां भी हैं। सब जानवर देखे। वन-मानुष भी देखे रामनिवास बाग के जू के पशु पक्षियों से विशेष बात न देखी, बड़ा बहुत है। कई तरह के बकरे देखे जिनके सींग भैंसों के बराबर हैं और ऐसे भी जानवर देखे जिनके कई हिस्से एक ही शरीर में बैल, हिरन, ऊंट, बकरे के से थे। लेकिन रामनिवास का सा दोनों एक ही शरीर में बकरा बकरी होना कहीं नहीं पाया। जल का सिंह भी देखा, सफेद रीछ भी देखा। एक ऐसा बन्दर देखा कि जिसके चेहरे पर धारियां थीं, और जल-जन्तु, नैपिल्स में थे, उनसे ज्यादा नहीं देखे। एक ऐसा जानवर देखा जो पक्षी था, लेकिन गर्दन ऊंट

समुद्र का सिंह, जो लंडन, डबलिन और बरलिन आदि के जू में है
पृष्ठ ७६, ८६

की सी थी इसको शतुरमुर्ग कहते हैं। परमात्मा की सृष्टि विचित्र है। उसकी रचना को वही समझ सकता है। मनुष्य को चाहिये कि हर समय उसकी महिमा का स्मरण रक्खे।

१॥ बजे तक देख सके। जल्दी वापिस आकर खाना खाया और फिर हमारे अजमेर के उस्ताद (Mr. E. F. Harris) हैरिस साहब से जो ईस्ट क्राइडन पेडिस कोम्ब में रहते हैं और जो लंदन से ६० मील दूरी पर हैं मिलने को गये। यह वही साहब हैं जो अजमेर गवर्नमेंएट कालेज के ३० वर्ष तक प्रिंसिपल रहे थे और जो सर पुरोहित गोपीनाथजी साहब, दीवानबहादुर हरबिलासजी शारदा व पुरोहित रामनिवासजी एम. ए. चोमूवालों के सहपाठी हैं। मिलकर बड़े खुश हुये और सब का हाल पूछा।

फिर रात को श्री पुरोहित स्वामीजी की उपनिषदों की कथा सुनने गये। कोई पाँच मील जगह थी, ऋषिजीवन पर उस दिन उनका व्याख्यान था। मैं देर से पहुँचा, खैर स्वामीजी व श्रोता तो मेरे पहुँचने के १० मिनट बाद चले गये लेकिन जिसके मकान में कथा थी उस महिला ने मुझे बैठाया और बड़ी प्रसन्न चित्त होकर कहने लगी कि क्या आप कल की सभा में गये थे। मुझको क्रोध है कि अमुक २ स्त्रियों ने हिन्दू रमणियों की कुछ निन्दा की है। हैरिस साहब भी गये थे, हैरिस साहब ने कहा कि मैंने चाहा था कि मैं सभा में उठकर कहता कि अजमेर की श्री गुलाबदेवीजी ने कितना काम किया है इससे जनता जान सकती है कि हिन्दू-स्त्रियां कितना काम कर सकती हैं।

फिर उस महिला ने, कि जिसका नाम मिसेज गोनेथ फोडन (Mrs. Gwyneth Fowden) है और एक सेनापति की

लड़की है तथा बड़ी मालदार है, हमको अपना कमरा दिखलाया। उक्त महिला ने पुरोहित स्वामीजी के साथ तस्वीर भी उतराई है। कोई उसको अंग्रेज़ कहे तो चिड़ती है और कहती है मैं तो हिन्दू हूं, हिन्दुस्तानी हूँ, भारत मेरा मुल्क है। देखो मैं कल की सभा में बनारसी साड़ी पहन कर गई थी, उससे कैसी शोभायमान दीखती थी। देखो राधाकृष्ण की तस्वीर मेरे सामने है, महात्माजी की तस्वीर बना रक्खी है, हिन्दुस्तानी चीज़ें मेरे मकान में मौजूद हैं। मैं बम्बई में एक आश्रम खोलूंगी, वहां सब जाति के मनुष्य आवेंगे और धार्मिक-शिक्षा लेवेंगे। मेरे सिर होगई कि कुछ खाओ पीयो और फिर कहा कि मैं तो एकबार ही जीमती हूं। मैंने कहा मैं तो अपने उस्ताद के यहां गया था वहां से पेट भर के आया हूँ। मुझ को मोटर तक बैठाने आई। हैरिस साहब भी रेल तक आये थे।

(लन्दन) ता० १४-७-३२ ई०

लंदन की मंडी—(London Market) कल ता० १४-७-३२ को व्यापार की मण्डी देखी। नमूने रखकर नमूनों पर भाव होता है। अपना पैसा नहीं लगाते। दूसरों की चीज़ जो बम्बई आढ़तियों के मारफ़त आवे उसको बाज़ार भाव बेचते हैं। सैकड़ों हिन्दुस्तानियों के करमटे फूट जाते हैं। यहां भी हर चीज़ का सट्टा चलता है। यहां का भारतवर्ष के साथ का व्यापार ऐसा उल्टा चलता है कि लावें, नावें भी किसी धन्धे में नहीं होते और घर का पलोथन लगता है। घरू व्यापार करना बड़े भारी परिश्रम और जोखम का काम है। फ़ायदे की सूरत नहीं, इस समय ब्याजभाड़ा सब से उत्तम है और ख़र्च बँधा हुआ रखना

आवश्यक है। जो आदमी क़रीने से ज्यादा खर्च रखते हैं उनको पछताना पड़ता है।

वहां से आकर कम्पनियों में गये। अगर सुप्रबन्ध हुआ और अधिक छुट्टी मिली तो ता० २२ तक अमेरिका जाऊंगा, क्योंकि फिर बार २ नहीं आया जाता है। कम्पनियों से लिखा पढ़ी होरही है, पहिले तो आयरलैण्ड और स्काटलैण्ड जाने का विचार है।

लंदन की फोटोग्राफी—फिर तीसरे पहर के बाद हम अपने सेक्रेटरी मिस्टर चतुर्थी गोड़ को अपने साथ लेकर बाज़ार की तरफ़ गये। वह एक जेरोम (Jerome) नाम की फोटो उतारने वाले की दूकान पर लेगया। कार्ड साइज के फोटो २ शिलिंग ६ पेंस याने १॥।) रु० में एक दर्जन दो घण्टे बाद तय्यार करके दे दिये, बस्ट जो इस पुस्तक के फ्रन्ट पेज पर है उसही फोटो का ब्लाक है। यद्यपि भारतवर्ष में अनेकानेक फोटो स्टूडियो; हैं परन्तु अभी इतना सस्ता, अच्छा और जल्दी काम कहीं नहीं होता। रंग कराने से दुगुने दाम पड़ते हैं।

लंदन में पानी का अभाव—लंदन में बाज़ार में पेशाब करने की जगह तो बहुत हैं, परन्तु जनेऊधारी हिन्दुस्तानियों को पेशाब करके हाथ धोने की आवश्यकता होवे तो बाज़ारों में नल नहीं होते, न भारतवर्ष की तरह धर्मार्थ प्याऊ बैठाने का रिवाज़ है। किसी रेस्टोरेंट में, जो हर जगह बहुतायत से हैं, आकर ही हाथ धोने व पानी पीने की आवश्यकता को पूरी कर सकते हैं। जिसमें ६ पेंस से लेकर १ शिलिंग तक का ख़र्चा उठाना पड़ता है, क्योंकि कोई न कोई पीने की चीज़ लेनी होती है।

सिनेमा से खबरें—फिर बोलती हुई तस्वीरों के नाटक में गये, जो कुछ पहिले दिन कोई बात पब्लिक के सम्बन्ध की हुई उसकी बोलती हुई तस्वीरें उतारी गईं और नाटकघर वालों ने खरीदलीं। नाटकघर के चद्दर के ऊपर वे तस्वीरें सी मालूम नहीं पड़तीं, परन्तु साक्षात् मनुष्य बातें करता, काम करता, लिखता, पढ़ता, नहाता, धोता, हँसता, कूदता दीखता है। मसलन दो तीन दिन हुए थे यहां मशहूर पहलवानों की कुश्तियां हुईं थीं जिसकी २०) रु० फ़ीस थी। हूबहू वैसा का वैसा दृश्य बातें करता हुआ, कुश्ती लड़ता, दाव पेंच करता, इस पर्दे में दीखता था और बोली साफ हम सब सुनते थे अगर चुटकी भी बजाई तो चुटकी की आवाज़ और अगर मुक्का मारा तो मुक्के का आवाज़, पग रक्खा तो पग की आवाज़। साइंस को हद्द दर्जे पर पहुँचाया है। ३॥) दो टिकटों के लगे। खूब दृश्य देखा, राजराजेश्वर भी इस सिनेमा में, जिसमें हम गये थे, आया करते हैं।

पंचम-अध्याय

ग्रेट ब्रिटेन की सैर

स्थान डबलिन आयरलैण्ड
ता० १७-७-३२

चिरंजीविनि कमले ! शुभाशी:,
आपकी माता को मेरा शुभ संवाद,

जौहरी और जौहरी बाज़ार—मैं आनन्द में हूं। इस समय ठीक १२ बजे हैं। यहां सूर्य ठीक १० बजे छिपा था। यह स्थान डबलिन आयरलैण्ड की राजधानी है, शुक्रवार के १० बजे तक का हाल तुम्हारे पास जाचुका है, बाद में लंदन में एक जौहरी से मिला और चूंकि जयपुर से रवाना होते समय जौहरी बांधवों ने यूरोप के जवाहरात का हाल जानने के लिये कह दिया था इसलिये इन जौहरी महाशय से खूब खोद २ कर बातें कीं। यह भी यहां के प्रतिष्ठित और बड़े अच्छे जौहरियों में से हैं। इनकी दूकान अच्छी जगह पर और बड़ी है। इनसे मालूम पड़ा कि जवाहरात के बाज़ार में कुछ दम नहीं है। बिक्री बिलकुल नहीं, हर चीज़ का बाज़ार—क्या मोती, क्या पन्ना सब का—गिरता जाता है। और जो चीज़ आज खरीदली कल उसमें नुक़सान देना पड़ता है। दूसरे जौहरियों से पता चला कि जितना रुपया जौहरियों के पास था सब माल में लगा हुआ है और जिसकी क़ीमत इस समय में किसी के रुपये में ॥) आने और किसी के।=) आने होगये। नया माल खरीदने के लिये न तो रुपया ही पास में है और न कोई ग्राहक ही है।

पैरिस, जा यूरोप में जवाहरात का सेंटर है बिलकुल खाली सा है और जो भारतवर्षीय जौहरी अपना माल लेकर आये हैं उनका क़रीब २ सब माल खाने, पीने, किराया खर्चे में ही उठ जावेगा। ब्रुसेल्स, एँटवर्प में कुछ काम हीरे का चलता है किन्तु मामूली है। व्यापार नहीं कहा जा सकता। शनिवार को पहिले तो टिकट अमेरिका के लिये लेने में लग गये। फिर असबाब बांध-कर इंगलैण्ड में उसी कमरे में रक्खा, फिर स्टेशन को रवाना हुए।

ग्रेटब्रिटेन में दौरा—पहले बरमिंघम में ३ घण्टे के लिये उतरे। यहां मोटरें बनती हैं, फिर बाज़ार देखा। लन्दन से आधे दामों में चीज़ें मिलती हैं। यहां का विश्व-विद्यालय देखा। एक आदमी को साथ लेलिया था, २ शिलिंग दिये। बरमिंघम भी तिज़ारती शहर है। स्टील का कारख़ाना भी है। लाहे पीतल की चद्दरें व मोटरें भी बनती हैं। यहां स्टेशनों पर एक बड़ा सुभीता होता है कि चाहे जितने पैकेज हों स्टेशन के क्लोक रूम (Clock Room) में रक्खे जा सकते हैं। फी बन्डल, एक पेनी या दो पेनी लगता है, रसीद ली और रसीद दिखाकर सामान वापिस ले दे सकते हैं। सब जगह बड़ी ईमानदारी से काम होता है। इस बरमिंघम की सब्ज़ीमण्डी बहुत बड़ी पाई। फूलों का बिक्रा भी खूब होता है।

एक बात और देखी कि इन शहरों में कुछ ऐसे स्थान नियत होते हैं कि जहाँ हरएक आदमी को अपनी वाणी की स्वतन्त्रता होती है। कई आदमी तो अपने मज़हबों की शिक्षा और बड़ाई में ही कुछ कहा करते हैं। कई तरह २ के व्याख्यान दिया करते हैं और चन्द पेशेवर आदमी भी इकट्ठे हो जाया करते हैं।

ज्योतिषी भी देखे जो अपना बोर्ड लगाकर जन्मपत्री फलादेश उसी वक्त टाइप किया हुआ दे देते हैं और एक पेनी ले लेते हैं। जो मुझ को फलादेश दिया वह यह है—

Sun in Aries.

Delineation of Character.

Persons born on this day have excellent intuitive power, which if they follow, will seldom lead them astray. They feel the minds and influence of other persons readily, and are led by will power or sympathy. Notwithstanding this, they can be very positive and high tempered when they feel they are in the right. They have good ability and talents, and if they are actively engaged they will be successful in their undertakings. Their capabilities are sufficient to enable them to fill a responsible position. They are just and generous to others who may be below them in social position. They may be hasty in speech, but are always ready to forgive, and do not bear any ill-will to persons with whom they have quarrelled.

सिंहार्कः

चरित्र वर्णन

जो मनुष्य इस तिथि को जन्मते हैं उनमें अत्युत्तम स्फूर्णा और धारणा की शक्ति होती है, जिसका यदि वे अनुसरण करें तो विचलित नहीं हो सकते वे फौरन ही दूसरों के मनोगत भाव को पहिचान लेते हैं और दृढ़ संकल्प और सहानुभूति के पात्र होते हैं। और जब उनको यह निश्चय होता है कि हम सत्य पर हैं तो जमे रहते हैं और उत्तेजित रहते हैं। उनमें योग्यता उत्तम होती है और तीव्रधी होते हैं। और यदि लग्न से किसी कार्य्य को करते हैं तो अवश्य उसमें सफलता प्राप्त करते हैं। वे इतने योग्य होते हैं कि किसी भी उत्तरदायित्व के बड़े स्थान को अलंकृत कर सकते हैं। वे दूसरों के प्रति न्यायी और दयालु होते हैं जो उनसे सामाजिक स्थिति में नीची कक्षा के हों। वे वाणी के कदाचित् आतुर होवें लेकिन क्षमाशील होते हैं और किसी के साथ विग्रह होने पर भी वे उसका अनिष्ट नहीं चाहते।

ऐसे ही मुक्तिफोज (Salvation Army) वाले भी गाने सुनाकर और बेंड बाजा बजाकर कुछ अपनी संस्था के लिये आमदनी कर लेते हैं। फल, फूल, सब्ज़ मेवे का बाज़ार भी बहुत बड़ा देखा। इस बाज़ार में भीड़ बहुत ज्यादा देखी। जौहरी लोगों की दूकानें भी खूब सजी बजी थीं। एक कम्पनी ऐसी भी थी जिसमें ६ पेनी से ज्यादा की कोई चीज़ नहीं बिकती थी और सब चीज़ों पर एक पेनी से लेकर ६ पेनी तक लिखा हुआ था और इस कम्पनी में बेचने वाले अनुमान से ३०० आदमी होंगे। बरमिंघम से रात के १० बजे रवाना हुये। जो यात्री थे बड़ी खातिर से

पेश आये। रास्ते के साथी मुसाफ़िरों ने ही दूध चाह के लिये प्रबन्ध किया। कहीं रेल, कहीं नाव में होते हुए सवेरे यहां पहुँचे।

डबलिन (आयरलैण्ड फ्री स्टेट) यह भी बड़ी नगरी ५००००० (पाँच लाख) आदमियों की है। बादशाह पञ्चम जार्ज के आधिपत्य को हटाकर खुद राजा सब प्रजा के आदमी बन गए। यहां के प्रेसीडेन्ट का नाम डी वेलेरा साहब (De Valera) है। बड़ा विचित्र पुरुष है। जब मैं लन्दन में हाउस ऑफ कामन्स को देखने गया तो उस समय आयरलैण्ड की लड़ाई का वार्षिक रुपया न देने पर तय हुआ कि आयरलैण्ड से अमुक आने वाली वस्तुओं पर टैक्स बढ़ा दिया जावे। डबलिन पहुँ-चने पर मालूम हुआ कि डी वेलेरा महाशय ने भी प्रतिकार यही सोचा है कि वहां से आने वाली वस्तुओं पर टैक्स लगा दिया जावे। मन में इच्छा हुई कि ऐसे स्वतन्त्र विचार वाले महा-पुरुष को अवश्य देखना चाहिये। रविवार होने से कुछ न हो सका और दूसरे दिन प्रयत्न करके वहां की सिनेट हाउस में पहुँचे और उस दिन की डिबेट सुनी।

डबलिन का सिनेट हाउस—बड़ी जोरदार डिबेट थी और सुनने से पता चला कि यद्यपि डी वेलेरा साहब प्रेसीडेन्ट हैं तथापि उनका विरोधी दल भी एक ज़बरदस्त दल है। यह अन्दाज़ा करना कठिन था कि ऐसे विरोध के रहते हुए देश का काम कैसे चलता है एक सिनेटर से बातें हुईं। इन सिनेटर महाशय ने, जो कृषकों के पक्ष में थे, बड़ा विरोध किया। इन्होंने चाह, पानी की मनवार की और खाने के कमरे में ले गये और जब डी वेलेरा साहब वहां आये उनसे परिचय कराया।

डी वेलेरा और भारतवर्ष—डी वेलेरा साहब ने भी दूध चाह के लिये मनवार की और फिर कुछ बातें हुईं, भारतवर्ष के संबन्ध में भी बातें हुईं। डी वेलेरा साहब का कहना था कि आयरलेंड ने जो स्वतन्त्रता प्राप्त की है वह बड़ी कठिनाई से की है। विरोधीदल सब जगह हुआ करते हैं जो स्वतन्त्रता के बड़े बाधक हैं। विरोध के कारण आयरलैंड भी जैसी चाहिये वैसी स्वतन्त्रता प्राप्त न कर सका, किन्तु भारतवर्ष इतना बड़ा है और उसमें इतनी अधिक जनसंख्या है कि उसको कैसी ही अवस्था हो कोई हड़प नहीं सकता। भारतवासियों, को धैर्य्य रखना चाहिये। यह उनके बड़े दृढ़ विचार हैं। मैं तो आयरलैंड की पृथकता को अच्छा नहीं समझता जो इंगलैंड व आयरलैंड दोनों के लिये ही बुरी है। यदि दोनों एक होते तो डी वेलेरा भी इंगलैंड की पार्लियामेंट के आभूषण होते और परिणाम यह होता कि डुमीनियन्स को जहां पूर्ण अधिकार नहीं है वहां उनको अधिकार देकर के इंगलैंड के गौरव को शिखर पर पहुँचाते।

डबलिन विश्व-विद्यालय (University) और पशु पक्षियों का घर (Zoo) देखा। यहाँ भी चार हिन्दुस्तानियों को तलाश किया सब बड़े आदमियों के लड़के लड़की हैं जो रोटूंडा हॉस्पिटल में पढ़ते हैं। ऊंचे दर्जे की डाक्टरी का अभ्यास करते हैं। उनमें एक जस्टिस रानाडे के पौत्र भी थे। खूब खातिर से दूध चाह पिलाई, यहां के आदमी सबही खातिर करते हैं और जिधर से जाता हूं खूब सलाम करते हैं। फिर समुद्र और पहाड़ की सैर की, बाज़ार देखे और लन्दन से आये हुये मिलिटरी डिपार्टमेंट के एक पञ्जाबी महाशय मिस्टर अमरचन्द मिल गये।

पहिले दिन एक तांगा दिन भर के लिये किराये किया था क्योंकि

मोटर में बैठकर सैर करने से ख़र्चा बहुत पड़ता है। यहां ग़रीपी होने से तांगे बग्घी भी मिलते हैं। ट्रामवे, मोटर बस भी चलती हैं लेकिन उसमें बताने वाला नहीं होता, इसलिये महज़ बाज़ारों की शकल ही शकल देखी जा सकती थी। तांगा वाला भला आदमी था और सौभाग्य से यह वही तांगा था जिसमें १५ दिन पहिले इंडियन लेजिस्लेटिव असेम्बली के भूतपूर्व प्रेसीडेन्ट मिस्टर वी. जे. पटेल महाशय बैठे थे। पहिले तो तांगा वाला बाज़ारों में होकर कस्टम हाउस के पास होता हुआ एक पार्क में लेगया। यह पार्क बहुत ही बड़ा है। कई मील तक चला गया है और हरी घास के क़ुदरती बरसात के पानी से सिंचे हुए मैदान हैं। कहीं २ बड़े वृक्ष भी इसमें थे। सड़कें कटी हुई थीं और फुलवारी की शोभा इसमें नहीं थी, न ज्यादा खर्चे का काम था। वहां से उस स्थान को गये जहां पर ब्रिटेन की तरफ़ से हिज़ मैजेस्टी का वाइसराय रहता है।

आयरलैण्ड का वाइसराय—यह वाइसराय की संस्था भी कुछ गड़बड़ की हालत में देखी, क्योंकि कुछ अधिकार तो है नहीं, नाम मोटे और दर्शन खोटे की तरह बेकार सी संस्था है। मेरे तो समझ में भी नहीं आता कि हिज़ मैजेस्टी की गवर्नमेंट इतने अपमान को क्यों सह रही है! मेरे तो यही जचता है कि कभी न कभी और जल्दी ही वाइसराय को यहां से उठाना पड़ेगा।

(डबलिन) ता० १८-७-३२ ई०

यहां अत्यन्त सर्दी पड़ती है। कल तो मेंह की छींटें हुईं, धूप थी। आज इस समय भी धूप है। आज उत्तरी आयरलैण्ड बेल-

फेस्ट जाने का विचार है। डी वेलेरा साहब से मिलने के पहिले एक पुस्तकालय देखा जो यहां के विश्व-विद्यालय का ही था। इसमें क़रीब १३०० वर्ष पहिले की पुस्तकें देखी। उसमें क़रीब ५००००० पांच लाख की किताबें थीं।

फिर जो अपने मुल्क को स्वतन्त्र करके नोट व रुपये बनाये हैं उसको देखने के लिये बैङ्क में गये। फिर समुद्र के किनारे २ ब्रे (Bray) नाम की जगह में गये। अच्छा दृश्य था। स्त्रियां ही ज्यादातर स्नान कर रही थीं। वहां हिन्दुस्तान की एक मेम मिली, उससे पूछा—मुझे तो ऐसे गर्म कपड़ों में सर्दी लगती है और यह नग्न समुद्र में स्नान करती हैं। उसने कहा मुझको भी लगती है। मछली को नहीं लगती आदत हो जावे जब क्या दिक़्क़त है।

फ्री स्टेट डबलिन आयरलैंड के आदमी—सिनेट हाउस में डिबेट सुनते २ रात के क़रीब ६ बज गये। वहां से पैदल रवाना हुआ और अपनी होटल नार्थ स्टार में आया। यहां साथी अमरचन्द मौजूद था। बहुतसे आस पास के आये हुए आयरलैण्ड के स्त्री पुरुष बैठे हुए थे। दो घण्टे तक बातें कीं, देश के हाल जाने, यहां यद्यपि ग़रीबी है लेकिन मनुष्य उत्साहहीन नहीं हैं। यहां के आदमी दांत बहुत ही मैले रखते हैं और भारतवर्ष के आदमियों से बड़ा प्रेम रखते हैं और रास्ते में ऐसे भी मौक़े मिले कि भारतवर्ष से लौटे हुए कई आइरिश मिले। उन्होंने मुझको भारतीय लिबास में देख कर भारतीय सम्बोधन से रास्ते में सलाम की। कोई २ जगह ऐसा भी हुआ कि गलियों में से छोकरे और एक दो बुड्ढे निकलते और मुझ से कहीं तो ज़ोर

ज़ोर से पास आकर राम २ साहब करते और कई साहबजी और सलाम साहब करते। सब को मैंने प्रसन्नचित्त पाया, यहां रेस्टूरेंट और होटलों के ख़र्च भी अधिक नहीं पाये और फैशन की बढ़ाव चढ़ाव भी पैरिस व लन्दन की अपेक्षा बहुत ही कम थी।

रात्रि को शयन करके सवेरे ही कलेवे आदि से निवृत्त होकर बेलफास्ट जाने के लिये ट्रेन में सवार हुए। साथी यात्रियों को भी वैसे ही सीधा और प्रसन्नचित्त पाया जैसे शहर डबलिन में।

ग्रेट ब्रिटेन और इण्डिया के रेलवे कर्मचारी—क़रीब ३ घंटे में ही डबलिन से बेलफास्ट आ पहुँचे। रेलगाड़ी का गार्ड इतना भला आदमी निकला कि जब मैंने उससे कहा कि महाशय मैं उस पोर्ट स्टेशन पर जाना चाहता हूँ जहां से जहाज़ में बैठ कर सायंकाल को ग्लासगो के लिये रवाना हो जाऊं। वह भला गार्ड बाहर तक मेरे साथ आया और १० मिनट तक इन्तज़ारी करके मुझको ठीक बस मोटर में बैठा कर अपने काम में लगा। भारत-वर्ष के रेल्वे कर्मचारी, दुःख की बात है, ऐसा बर्ताव नहीं करते!

स्थान ग्लासगो स्काटलैण्ड
ता० २०-७-३२

मैं बेलफास्ट के स्टेशन पर से उतर कर उस पोर्ट स्टेशन पर पहुँचा जहां से ग्लासगो के लिये जहाज़ रवाने होते हैं। वहां ।=) आने के पैसे में क्लर्क के पास सामान रख शहर की तरफ़ बढ़ा। पास ही एक अंग्रेज़ एक पब्लिक स्मार्क के पास खड़ा था। उसको साथ लेकर सब बेलफास्ट देखा जो सवा चार

लाख आदमियों का बड़ा सुन्दर नगर है। एक बात तो यह मानने की है कि यहां नगरों में कई स्टेशन होते हैं। लन्दन में सैकड़ों स्टेशन हैं, किस स्टेशन से बैठना, कहां उतरना एक बहुत ही कठिन समस्या है। नहीं तो भूल कर पश्चिम के बजाय पूर्व में चला जाना पड़ता है।

बेलफास्ट का टाउनहॉल—पहिले तो यहां के नगर का टाउनहॉल देखा जो बड़ा विशाल है और जिसमें कलकत्ते के विक्टोरिया मेमोरियल की तरह बीच में गुम्बज है और गुम्बज के बगलों में कमरे हैं जिनमें म्यूनीसिपल व काउन्टी कौन्सिल वग़ैरह का काम होता है इस टाउनहॉल में एक कमरा ऐसा भी देखा जिसमें सिविल मेरेज होते हैं। बादशाह और लार्ड मेयर की तस्वीरें हर जगह मौजूद थीं।

बेलफास्ट और जहाज़ों के बनने की जगहः—फिर उस जगह गया जहां जहाज़ बनते हैं, इसको डौनेगेल की (Donegall Quey) कहते हैं और जो ग्रेट ब्रिटेन में जहाज़ बनाने की सब से बड़ी जगह है। सब से बड़ी कम्पनी के दरवाज़े पर पहुँचा तो पाया कि "No admission" अर्थात् भीतर जाने की इजाज़त नहीं है, लिखा था। मैं ज्यों ही दरवाज़े के अन्दर घुसा एक अफ़सर ने आकर रोक दिया और कहा कि किसी के लिये भी इजाज़त नहीं है। कुछ समझाने पर उस अफ़सर ने मुझको बैठक के कमरे में बैठाया और क़रीब २० मिनट पीछे एक बड़ा अफ़सर आया और उसने कहा कि आपको खासतौर पर जाने की इजाज़त दी जाती है और यह अफ़सर आपके साथ किया जाता है लेकिन आप ही जाइये अपने साथी को न ले जाइये।

मैं अन्दर गया, पता चला कि जहाज़ बनने का यह आयरलैण्ड का सब से बड़ा कारखाना है और यहां हज़ारों जहाज़ बना करते थे क़रीब १३००० आदमी काम करते थे, बड़े से बड़े जहाज़ यहां पर बने हैं और हथोड़े की शकल वाली १५० टन याने ४००० मन से ऊपर तक वज़न उठाने वाली क्रेन है। मैंने इस समय ३० आदमी भी काम करते न पाये। पूछने पर मुझको कहा गया कि 'लीग आफ नेसन्स' के सबब से ग्रेट ब्रिटेन ने नये जहाज़ बनाने बिलकुल बन्द कर दिये हैं और कोई काम नहीं होता। कम्पनी इस चिन्ता में है कि सब सामान को बेच दें, दाम १) रु० में एक आना भी नहीं उठता, करोड़ों रुपये का सामान है कोई देखने वाला भी नहीं, यह हालत देखकर मेरे हृदय में भी अनुकम्पा उत्पन्न हुई कि अब यह देश अधिक नहीं ठहर सकता !

वेलफास्ट और सनी कपड़ों के कारख़ाने—वहाँ से आठ मील पर उस स्थान में पहुंचा जहाँ सन के कपड़े बनते हैं। कारख़ाने में घुसा तो देखा कि दो हज़ार औरतें काम कर रही हैं। सब औरतों ने काम छोड़कर मेरे पास आना चाहा और खूब मुसकराती थीं, लेकिन काम छोड़ना एक जुर्म था। यह कारख़ाना सनियां कपड़े बनाने का था। यहां यदि पुरुष २०० थे तो स्त्रियां २००० हज़ार थीं और सब ही सब उम्र की थीं और दत्तचित्त होकर काम करती थीं, हर डिपार्टमेंट में थीं। ऐसी प्रसन्नचित्त स्त्रियां बिलकुल सादा कपड़े पहने हुए और जी लगाकर काम करते हुए मैंने कहीं नहीं देखीं।

वहां से एक स्कूल में पहुंचा जहां सब हुनर सिखाये जाते हैं। फिर उस स्थान में पहुंचा जहाँ एक कमरा एकछता देखा

जो परीक्षाओं के लिये किराया लिया जाता है और जिसमें २००० कुर्सी मेज़ लगी हुई थीं। यह एक गिर्जा है। फिर किनारे का दृश्य देखने १५ मील एक स्थान पर गये।

वेलफास्ट का प्राकृतिक दृश्य—इस स्थान का नाम वेलूश्रो (Bellevue) है। वड़े सुन्दर मनोहर स्थान, समुद्र के किनारे वड़े सुन्दर छोटे २ वंगले और पास के तख्ते, पहाड़, वृक्ष देखे, उतार चढ़ाव किनारे का वड़ा ही मनोहर था। वड़ी सुन्दर छटा, थी। खास मेले खेले की जगह थी, रेस्टूरेंट आदि सव आराम के स्थान मौजूद थे।

फिर आकर यहां के सुन्दर स्थानों में म्यूज़ियम व वोटेनिक गारडन देखे और उनकी तस्वीरें खरीद कर जहाज़ में वैठा। मेरे पास तीसरे दर्जे का टिकट था। यद्यपि सैकड़ों आदमी वैठे थे लेकिन शरावी होने से और स्नान ध्यान का कुछ उचित प्रवंध न होने से मैंने ६) देकर पहले दर्जे का टिकट लिया। वड़ा अच्छा कमरा मिल गया और खूब सोया, अव स्नान ध्यान करके यह पत्र लिख रहा हूं। मैं पूर्ण आनन्द में हूं। अव आध घण्टे में जहाज़ से उतरने वाला हूं, देखो कहां ठहरता हूं। सव देखकर कल की तारीख में लिखूंगा। तुम वहुत याद आरहे हो और यद्यपि मैं वड़ी कंजूसी से चल रहा हूं तव भी अव तक अच्छी रक़म खर्च हो चुकी। अभी लन्दन में १५ दिन और ठहरे विना काम नहीं चलता और यूरोप के जर्मनी, स्वीटज़रलैण्ड, वेलजियम आदि स्थान देखने की उत्कट अभिलाषा है। २५ दिन विना यह स्थान नहीं देखे जासकते, १५ दिन रास्ते के चाहियें, अमेरिका जाना कठिन है। ६० दिन में ३०००) रुपये के लगभग खर्च होंगे।

ऐडिनवरा (स्काटलेंड) (रात के १२ बजे)
ता० २०-७-३२ ई०

चिरंजीविनि कमला !

ऊपर के पते से मालूम होगा कि मैं इस समय स्काटलैण्ड के प्रधान नगर में हूँ। सवेरे जहाज़ से चिट्ठी लिखी थी, समुद्र था। ठीक ८ वजे उतरा। ६ वजे अपने पते पर पहुंचा। गर्मागर्म बहुत अच्छी पूरी, अदरख की चटनी और चाह खाई। इस शहर का नाम ग्लासगो (Glasgow) है। ग्रेट ब्रिटेन का जनसंख्या के हिसाब से दूसरा नगर है एक आदमी स्टेशन से साथ हो लिया और उसने ज़बरदस्ती मेरा हैंडवैग ले लिया और जिस मित्र के मकान (Secretary of Students International Club) में उतरा, खुद भी आकर बैठ गया।

ग्लासगो में उचके—यह भी बात याद रखने की है कि जिसके मकान पर पहुंचें उसको आवाज़ नहीं दीजाती। बाहर एक बटन होता है उसको दबाया और मकान के चार्ज में स्त्री होती है वही दरवाज़ा खोलती है। एक दफे लन्दन में मैंने मेरी पोल का दरवाज़ा खोल दिया तो साथी ने फटकारा कि बहुत ग़लती खाई। कोई भी अपने कमरे के बाहर बिना पूरी पोशाक पहिने नहीं जा सकता। मैं तो धोती पहने बैठा रहता हूं। मेरे लिये हिन्दुस्तानी भोजन आया, मेरे मित्र ने उस आदमी के लिये भी खाना मंगवाया। खाना खाने के बाद मैंने कहा यहां क्यों बैठे हो, जावो। मैंने कुछ दिया, नहीं माना। मेरा मित्र आया और फिर कुछ ज्यादा दिया मगर फिर भी मकान से नहीं हटा और कहा पुलिस को बुलाता हूं, मेरे मित्र ने कहा जाओ बुलाओ।

ग्लासगो यूनिवर्सिटी—मेरे मित्र ने एक आदमी अफ़रीका का हवशी, जो यहां इञ्जीनियर क्लास में पढ़ता था, मेरे साथ यूनिवर्सिटी दिखाने को भेजा। यह मालूम रहे कि अफ़रीका के हव्शी मोटा नाक और जयपुर की काली स्याही से भी ज़्यादा काले होते हैं। पहिले यह लोग नंगे रहते थे लेकिन अब उनमें से क़रीब ५००० के लन्दन में साहब बहादुरों के से कपड़े पहनते हैं, अपनी औरतों को मेमों के से पहनाते हैं और ब्रह्मा के मुल्क के से मालूम पड़ने लग गये हैं। वे भी स्वराज्य चाहने लग गये और अफ़रीका में ज़्यादा हिस्सा स्वराज्य का ले लिया। उसने यूनिवर्सिटी दिखलाई। यहां का पुस्तकालय भी विशाल पाया। यहां डाक्टरी वग़ैरह सब ही विद्या सिखाई जाती है। क़रीब ४ हज़ार या ५ हज़ार विद्यार्थी हैं लेकिन इस समय छुट्टी के कारण अपने २ घरों पर हैं। यहां जहाज़ की विद्या भी सिखाई जाती है। बड़ी यूनिवर्सिटी भी है। यह शहर भी बहुत बड़ा १४ लाख आदमियों की बस्ती का है।

ता० २१-७-३२

चिरंजीविनि ! आशीः,

ग्लासगो का प्राकृतिक दृश्य—प्रभात हुआ। रात को खूब नींद आई, भोजन फलाहार कर लिया। शहर ग्लासगो बहुत ही बड़ा और विशाल है। मकान लन्दन व पैरिस की तरह ज़्यादा ऊंचे नहीं, लेकिन मुल्क का प्राकृतिक दृश्य बहुत ही अच्छा है। पहाड़ ऊंचे नहीं जैसे शेखावाटी में बालूरेत के टीबे हैं इतने बड़े हैं, कहीं इससे ज़्यादा बड़े हैं, लेकिन सर्वत्र पहाड़ हैं। खास शहर ग्लासगो कहीं से ढालू, कहीं से ऊंचा, कहीं से नीचा है, परन्तु

हरियाली इतनी सुहावनी और सुन्दर है कि ईश्वर की महिमा कुछ वर्णन नहीं की जासकती !

शहर से ६० मील पर लोख लोमाण्ड (Loch Lomond) नाम की झील है वहां देखने को गये। पहाड़ों के बीच में ३० मील तक चक्कर खाती हुई झील चली गई है। जैसे वन सोमवार को नये घाट, जयपुर में आदमी जाते हैं वैसे लाखों आदमी यहां भी झील के किनारे देखे। खासी सर्दी होने पर भी किनारे की कंकरीली रेत पर बाल बच्चों समेत हज़ारों खान्दान पड़े थे। छोरे छोरी इस झील में खूब स्नान करते थे। गुप्तेन्द्रिय न दिखे आधी छाती तक कपड़ा जवान लड़कियां या औरतें पहन कर तैरती हैं। किनारे २ बाग़ व खेत थे। वृक्षों की सुन्दरता अवश्य थी पर झील बहुत सुन्दर थी। आबू की तरह गुलाब की और दूसरी सुन्दर बाड़ें थीं, परन्तु कोई फलदार वृक्ष नहीं देखा। खेतों में आलू के खेत, बैंगन, टमाटर के खेत देखे, बाक़ी ज्यादातर घास या जई देखी।

घोड़े:—अपने यहां के घोड़ों से यहां के घोड़े बड़े और बलवान् हैं। अपने चार बैल जो काम करें यहां उतना काम एक घोड़ा करता है। जंजीरें रस्सों और तस्मों की जगह काम में लाते हैं और जो मर्द लुगाई मामूली स्थिति के मेला देखने आते हैं अपने साथ मेले में डबलरोटी और एक बर्तन चाय करने के लिये लाते हैं। वहां किनारे पर अग्नि सिलगा कर चाय गरम करते और पीते खाते हैं। लेकिन यहां खास कर शहरों में कोई आदमी थूक नहीं सकता। फलों के छिलके अपने थैलों में रखने पड़ते हैं और बाज़ार में सब जगह कचरा डालने को बालटियां रक्खी होती हैं। चाहे कितना ही जंगल हो पेशाबखाने में ही जाकर पेशाब करना होता है।

अगर रात को पेशाव की दव लगे तो वर्तन में करलो। सवेरे कमरा साफ़ करने वाली फेंक देगी।

ग्लासगो की पुलिस:—लोख लोमांड नामी झील से आकर फिर बाज़ार देखा। यहां इन्हीं दिनों में कुछ छुट्टियां हो रही हैं। लन्दन से यहां आधी मंहगाई है लेकिन आदमी हज़ारों वेकार हैं और इस वजह से गठकटे होने लग गये हैं। सवेरे तो मेरे साथ आदमी लगा ही था। शाम को एक फिर लगा। पुलिस इतनी खबरदार है कि ताड़ लिया और मेरे पास आकर मुझको रास्ता वताया और उस आदमी को धमका कर भगा दिया। यहां की पुलिस ईमानदार भी है और भली इतनी है कि पूछने पर खूब अच्छी तरह वात को समझा देगी। गाड़ी, मोटर, ट्राम्वे पुलिस के हुक्म विना एक सेकिण्ड नहीं चल सकती। पुलिस के इशारे में रहती है।

वजाज़ा और दर्जी:—एक झुण्ड ७, ८ आदमियों का, जिनमें २, ३ पंजावी साफ़े वांधे हुए थे, देखा। उनको लपक करके रोका, पता चला कि यह सव पंजाव देश के हैं और यहां रहते हैं, कपड़े की, ज्यादातर सिले हुए कपड़े की, सौदागरी करते हैं। मैंने दो दिन पहले डवलिन में भी ५, ६ पंजावी देखे थे, वे भी यही धन्धा करते हैं।

देश-प्रेम विदेश में किसी स्वदेशी को देखकर उमड़ आता है। इसलिये आपस में वोलने की इच्छा हो जाया करती है और ठहर कर पांच सात मिनट तक रास्ते में ही वातें कर लिया करते हैं।

ग्रेट ब्रिटेन के बड़े शहरों में बजाज़ की दूकान के साथ दर्ज़ी-खाना अवश्य लगा रहता है। मर्द, बच्चे और औरतों की हर तरह की मूर्तियां बनाकर, जिस कपड़े का दिखावा करना होता है, उनको पहिना दिया करते हैं, उस पर क़ीमत का टिकट भी लगा दिया करते हैं। इनमें से बहुतसी दूकानें तो बहुत बड़े २ व्योपारियों की होती हैं। इन दूकानों से ये पञ्जाबी लोग सूट या मेमों के कपड़े ख़ास डिस्काउन्ट पर ख़रीदकर फेरी लगाते और बेचते हैं।

यहां ग्लासगो में इमारतें बड़ी और सुन्दर भी हैं और ज्यों २ शहर के बीच से हटो खण्ड उनके ऊंचाई में कम होते जाते हैं। आख़िर में फिर एक खण्ड की हो जाती हैं। शहर में चलते २ पांच बार मेह बरसा, यहां छाता हर वक़्त हाथ में रखना चाहिये। यहां से चलकर खेलघर देखे। काष्ठ के गोलों से कसरत करने के लिये खेल खूब खेलते हैं।

सवारी का आराम—फिर उस मित्र के डेरे Students' International Club (स्टूडेन्ट्स इन्टर नेशनल क्लब) पर पहुँचा, तो वह मित्र, जो इस संस्था के सेक्रेटरी हैं, दरवाज़े पर मिले और कहा साहब हम तो आपके लिये लंच की बाट देखते रहे। लंच का समय १२॥ बजे से ३ बजे का होता है। यह दिन का प्रधान खाना होता है। यहाँ भूख खूब लगा करती है। उस झील लोमोंड (Loch Lomond) पर तलवां पूरी और चाह बनवाकर खा भी चुका था, लेकिन फिर भी यहां मित्र के पास खालेना अच्छा समझा। पराउंठे, दाल तीनों मेल की, साग पांच मेल का, चाह, दूध, खा पीकर तृप्त हुआ और मोटर में बैठा, मित्र स्टेशन पर पहुंचाने आया। गाड़ी में बैठा और एक मिनट

वाद गाड़ी चलदी । मित्र के मकान से स्टेशन चार मील है, लेकिन सवारियों का इतना सुप्रवन्ध है कि हर दो मिनट वाद कहीं भी खड़े हो जाओ वड़ी मोटर आजावेगी और वैठा लेगी। हर सौ गज़ पर पाटिया लगा है, जहां मोटर ठहरती है और हर वड़ी मोटर पर नंवर लगे रहते हैं, उस नम्वर की न मालूम कितनी मोटरें हैं कि दो मिनट से ज़्यादा सवारी चाहने वालों को नहीं ठहरना पड़ता । मोटर के साथ किराया लेने वाले इतने होशियार होते हैं कि झट समझ जाते हैं और उसको आराम से वैठाकर टिकट देते हैं और जहां कहता है उतार देते हैं। वड़े नेक आदमी हैं, कभी ज़रासी तकलीफ़ नहीं होने देते। खास कर हिन्दुस्तानी पोशाक वाले की तो वहुत ही खातिर करते हैं और किराया एक आना मील से ज़्यादा नहीं लगता । कभी एक आने में एक कोस का भी हिसाव होता है। इसी तरह रेल के आदमी भी हर वक्त चौकन्ने होते हैं। लेकिन मुसाफ़िर को चाहिये कि एक वात को १० वार पूछे और पुलिस से पूछे या खास रेल-वावू से पूछे, नहीं तो दक्षिण का उत्तर में और पूर्व के वजाय पश्चिम में चला जाता है।

ग्लासगो से एडिनवरा—यहां से रेल में एडिनवरा के लिये रवाने हुए। रेल में भले आदमी मिलते हैं और इतने भले होते हैं कि मुसाफ़िर को आता हुआ देखकर राज़ी होते हैं और फौरन जगह खाली करके वैठा लेते हैं। अगर खुले दिल से चलाकर वोलो तो वे अहसान मानते और वातें करने लगते हैं, लेकिन चलाकर नहीं वोलते। पहिले तो कम्पार्टमेंट भरा रहा और वातें करते आये फिर एक औरत ही रहगई । उससे वातें हुईं तो वह ग्लासगो यूनीवर्सिटी की जियोग्राफ़ी एवं भूगोल पढ़ाने वाली थी।

भारतवासियों से प्रेम—राजकीय विषयों पर बातें होती रहीं। इन देशों में हरएक मनुष्य को राजकीय विषयों पर बातें करने का बड़ा शौक रहता है और जो कुछ बोलते हैं समझ के साथ बोलते हैं। मुझ से कम से कम दो तीन प्रश्न तो बहुधा साथ वाले यात्री कर ही लिया करते थे। एक तो यह कि क्या आप गांधी इण्डिया के हैं और दूसरा यह कि आप लोग हम से ज्यादा योग्य हैं फिर भी आप लोगों को अपने देश के प्रबन्ध में अधिकार क्यों नहीं है। तीसरा यह कि आपका मुल्क बहुत बड़ा है, अच्छे जलवायु का है और अधिक पैदावारी का है, आप तो हम से बहुत ज्यादा अमीर होंगे। इन प्रश्नों का जब यथोचित उत्तर देता तो भारतवर्ष के साथ बहुत कुछ सहानुभूति प्रकट करते और भ्रातृभाव से देखते। २॥ घन्टे में एडिनबरा आपहुँचा। मेरे कम्पार्टमेंटवाली स्त्री और मैं साथ २ उतरे और वह मुझको मोटर बस में बैठाकर और जहां मुझको ठहरना था वहां का ठीक पता देकर चली गई। मोटर बस के कनडक्टर ने मुझको ठीक स्थान पर उतार दिया।

मैंने लंदन से रवाना होते समय मिस्टर जे. एस. एमेन. (Mr. J. S. Aiman, General Secretary and Warden Indian Students' Union, 117 Gower Street, London W. C. I.) से कुछ पत्र इस दौरे में ठहरने के लिये लिखवा लिये थे। यहां एडनबरा के लिये ५ ग्रोवेनर क्रेसेन्ट (5 Grosvenor Creseent) का पता था। मैं ग्रोवेनर होस्टल में घुस पड़ा। होस्टल की भली मानस मालिकनी ने अपना जमादार साथ दिया और पास ही वह मुझको ५ ग्रोवेनर क्रेसेन्ट में पहुँचा आया। यहां की मैनेजर मिसेज़ आरमूस्ट्रोंग घन्टी बजाते ही बाहर आई

और मैंने वह चिट्ठी दिखलाई। मुझको कमरे दिखलाये और पसन्द करने पर एक बहुत अच्छे कमरे में जिसमें चार आदमी ठहर सकते हैं, झट नहाने धोने, पाखाने जाने का सामान जमा-कर कहा—हमारे यहां कलेवा ७ से ६॥ वजे तक, भोजन १ से ३ वजे तक और व्यालू ७॥ वजे से ६॥ वजे तक होती है। आप १० वजे आये। मैंने कहा—हम व्यालू नहीं करेंगे। इस स्थान में क़रीब ३० हिन्दुस्तानी ठहरे हुए हैं। कोई इञ्जीनियर और कोई डाक्टर। विक्टोरिया जहाज़ से आने वाला १६ वर्ष का एक लड़का भी दिल्ली का इनमें था।

स्थान ५ ग्रोवेनर क्रेसेन्ट, एडिनवरा (स्कॉटलेंड)

ता० २२-७-३२.

एडिनवरा का गढ़:—सवेरा हुआ, एक बङ्गाली लड़के को साथ लिया और क़िले पर गये। पुराना क़िला है, ताज रक्खा है, तोपें चलती हैं, पलटन है, जोबनेर (जयपुर) या कुचामन (मारवाड़) के क़िले से कुछ ही बड़ा है पर सुन्दर है।

फिर यूनीवर्सिटी देखने गये। लाइब्रेरी देखी जिसमें ५,००००० पांच लाख पुस्तकें हैं और पांच लाख में से जो पुस्तक चाहें उसी वक्त दे देते हैं, बड़ा सुप्रबन्ध है।

एडिनवरा में ढावा:—फिर एक ढावे में जाकर बर्फ़ी (जय-पुर का सा कलाकन्द), पूरी और चटनी खाई कारण ४ वजने वाले थे चौका याने दाल, भात, कढ़ी साग उठ चुके थे। पूड़ियाँ

बहुत पतली अच्छी सिकाई की थीं। कोई यह कहे कि यहाँ हिन्दुस्तानी खाना कहां, सो सब ग़लत है। जो लोग यहां आते हैं शौकीन आते हैं। हिन्दुस्तानी खाना छोड़ भ्रष्ट हो जाते हैं और १०० में से बीस पतित, यहांतक हो जाते हैं कि यहां की छोकरियों से फंसकर बाप के पास से लाये हुए धन को १ वर्ष के बजाय दो महीने में ही खर्च कर या तो चोरी करते या धोखा देते और पुलिस में पकड़े जाते, सज़ा पाते तथा फिर हिन्तुस्तान में न जाकर यहां बर्तन मांजने धोने के काम को स्वीकार कर, साहब बहादुरों की तरह रह कर अपने हिन्दुस्तानी कुनबे से हमेशा के लिये अलग होकर जल्दी मरते हैं। हिन्दुस्तानी अपने बच्चों को कभी अकेला न भेजें।

एडिनबरा के सुबर्बः—भोजन कर मकान पर आये और बंगाली युवक की सलाह से ४० मील की दूरी पर (Melrose) मेलरोज़ नामक स्थान पर गये। कुछ विशेष बात नहीं देखी, लेकिन यहां के ग्रामीण जीवन का हाल मालूम पड़ा। खेत बहुत बड़े २ थे और सब के पत्थर का अहाता था, उस पर बेल लगाई हुई। आलू, सलगम, जौ, गेहूं खास कर जई यहां बोए जाते हैं। इस क़सबे में नदी की छटा खूब थी। इसके पास के शहर में कांच का कारखाना था। लड़ाई में बहुत से आदमी गये थे। इसलिये उनके नाम खुदा कर एक यादगार बना रक्खी है। खुद शाहजादे ने आकर खोली थी। फवारे लगा रक्खे हैं। यहां सर वाल्टर स्काट, जो स्काटलैण्ड के बड़े भारी कवि व नावेलिस्ट हुए हैं, की कब्र थी उनका जन्मस्थान भी पास ही है। जब स्टेशन पर वापिस आया तो स्टेशन जनशून्य था। गाड़ी के आने के एक दो मिनट पहिले एक महिला आ गई। मैं उसके पास

गया और जनशून्यता का कारण पूछा, उसने कहा इस समय सब आदमी हवाखोरी में चले जाते हैं फिर उस महिला से खूब बातें होती रहीं। पता चला कि यहां की गायें बहुत दूध वाली होती हैं। २५ सेर से कोई कम नहीं देती और ग्रीजियन गायें तो २५ सेर देती ही हैं। घोड़े सुन्दर खेतों में खुले चरते हैं। गर्मी में सूर्य्य १६ घण्टे रहता है और रात केवल साढ़े चार ५ घण्टे की ही होती है। सड़कों में वर्फ़ जम जाती है। बिजली की रोशनी से काम हरवक्त होता है, कोयले की खानें यहां बहुत हैं। ग्लासगो में लोहे की भी खाने हैं, इन कारखानों में आदमी लगे रहते हैं। मैं उस जगह पर हूं जहां घाघरिया पल्टन वाले जन्मते हैं। यहां मामूली कुली २॥) रु० रोज से कम नहीं कमाता और खर्च भी एक आदमी का २॥) रु० से कम नहीं होता। कपड़ा सब अच्छा पहनते और अमीर ग़रीब में फरक़ नज़र नहीं आता, आनन्द में रहो।

एडिनवरा, ता० २३-७-३२ ई०

चिरंजीविनि पुत्री ! आशीः,

मैं अभी यहीं हूं। कल तुमको पत्री डालकर फोर्थ ब्रिज (Fourth Bridge) नाम का पुल देखने गया। यह पुल बहुत बड़ा समुद्र के एक टुकड़े पर बँधा है। २०० या २५० फुट की ऊंचाई के थम्बे हैं और लोहे के सेतूनों के बल खिंचा हुआ है। ऊपर के आदमी नीचे वालों को ज़रा से दीखते हैं। यह ब्रिज मामूली पुलों की तरह नहीं, एक तो लम्बा खूब है और दूसरे आदि,

फोर्थ ब्रिज एडिनबरा (स्काटलैंड) का अद्भुत पुल

पृष्ठ १०२
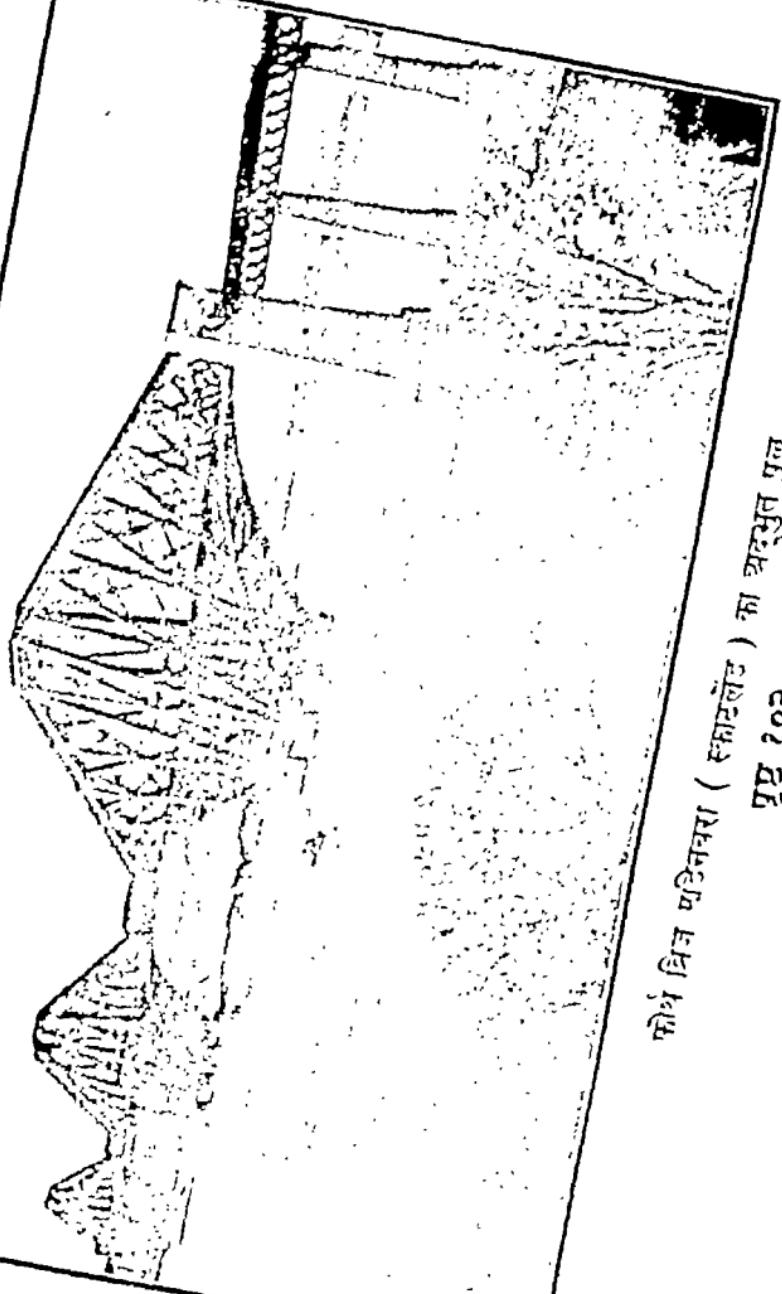
मध्य और अन्त तीन जगहों में तीन तरह का बना हुआ है, तीसरे तट जिसके ऊपर यह बना हुआ है उसका एक किनारा नीचा है। इसलिये इस ब्रिज को भी उतार चढ़ाव का ढाल दिया है। इसके बनाने में इसके रचने वाले इंजीनियर की बुद्धि का बड़ा आभास है। वहां से आकर भोजन किया फिर यहां का अजायबघर देखने गया।

एडिनबरा का म्यूज़ियम—अजायबघर क्या है एक बड़ा स्कूल है जिसकी चीज़ों को देखने और समझने में दो चार जन्म बीत जावें। हरएक तरह के जहाज़ रक्खे हैं, हरएक तरह के एंजिन रक्खे हैं। बाहर बिजली का बटन दबाया और जो पुरज़ा बतलाना होता है चलने लगा। हरएक तरह के हवाई जहाज़ और हरएक चीज़ की खान में कैसे काम होता है यह सब दिखलाया। प्रिय पुत्री! करोड़ों रुपया शिक्षा में ख़र्च होता है तब जाकर आदमी बनते हैं। भारतवर्ष की तरह नहीं कि इस विभाग में खूब कंजूसी की जावे या कुछ उदारता दिखलाई तो अपने मर्ज़ीदानों का वेतन बढ़ा दिया। बच्चों को या पबलिक को शिक्षा देने के सुगम मार्ग हैं ही नहीं। समय नहीं था एक कोना भी नहीं देख सका।

स्काटलैंड में मध्यम श्रेणी के सद्गृहस्थ का जीवन।—

वहां से फिर अपने जयपुर के पादरी लो साहब के बंगले पर गये। यहां से ६ मील जगह है। खूब भटकने के बाद बंगला मिला, लेकिन बन्द था। लो साहब नहीं आये। पड़ोसी ने मुझे देख कर कहा अभी तो अन्दर कोई नहीं है। पड़ोसी अपने बग़ीचे को मैले से कपड़े पहिने संभाल रहा था और हाथ कचरे से

भरे हुए थे। मैंने उसे एक कुली समझा, वह मेरे पास आया। मैंने उससे कागज़ का टुकड़ा मांगा वह मुझको अपने बंगले में ले गया और एक पैड मेरे सामने रख दिया, एक लिफाफों का बण्डल भी रख दिया और एक फाउन्टिनपेन रख दी और बार २ पूछता रहा आपको कोई अड़चन तो नहीं है। लिख चुकने पर मैंने भी कहा—इस मेरे पत्र को पढ़ लो, मैं तो खुला ही देना चाहता हूं। लो साहब आवें जब दे देना। पढ़ कर कहने लगा कि हमारे यहां के बड़े २ विद्वान् ऐसी अंग्रेज़ी नहीं लिख सकते, न बोल सकते। हमारा धन्य भाग्य आप आये। मैं ही इस बंगले का मालिक हूं तथा अपनी मेम को बुलाया और कहा दूध चाय लाओ। मुझको अपने बंगले के अन्दर ले गया। ३ सोने के कमरे, १ बैठक, १ भोजनालय, १ रसोई, १ भण्डार, १ स्नानागार और एक पोल बंगले के अन्दर थी। रसोई यहां गैस से होती है, अक्सर ४ चूल्हे होते हैं। मिन्टों में चाहे जितने आदमियों के लिये रसोई बनाई जा सकती है। लागत इस बंगले की रु० १०,०००) हैं, लेकिन रोशनी, गर्म, ठण्डा पानी, चूल्हे वग़ैरह की लागत इसमें आ गई। बाहर बगीचा, सड़कें नौकर की जरा ज़रूरत नहीं। सब मशीन से काम हो जाता है और खुद कर लेते हैं। पादरी लो साहब के इस पड़ोसी का नाम मुनरो साहब है। मैंने ऊपर लिखा कि मैले से कपड़े पहिने हुए था सो बगीचे में काम करते वक्त सूट मैला न हो जावे इसलिये ऊपर, पेट छाती व जांघों के आगे नीले रंग का गाउन सा बांध लिया था। मध्यम श्रेणी के मनुष्यों का घरू जीवन कैसा होता है सो आज मुनरो साहब के रहन सहन देखने से पता लग गया। इस श्रेणी के मनुष्यों का जीवन अपने यहां के इसही श्रेणी के मनुष्यों से अच्छा होता है, सब काम अपने हाथ से करना और नौकरों के आश्रित न रहना

कितनी अच्छी बात है। बड़ी फुर्ती, किफायतसारी और सीधा-पन ऐसे जीवन से आ जाता है। इन नये बंगलों में सास्तर सफेदी करने के बजाय सीमेन्ट में छोटे २ कंकर चिपेक दिये जाते हैं इससे सालाना सफेदी का खर्चा बच जाता है। यहां पास ही में गोरे लोगों और ग्राघरिया पल्टन वालों के बारिक थे। ग्राघरिया पल्टन वालों का तो यह जन्म-स्थान समझना चाहिये। बगीचे का बड़ा शौक है और अपने खाने भर की तरकारी तो उगा ही लेते हैं। मुनरो साहब का लड़का भी मिला जो अरब की तरफ़ फौज में भर्ती है। कुछ वहां की चीज़ें पीतल व ऊंट के खाल की बैठक के कमरे में सजा रक्खी थीं; वापिस आते रात्रि हो गई। ब्यालू न की और सो गया।

हिन्दुस्तानियों और स्कोचों की क्रिकेट मैच—नगर डंडी के पास एक ग्राम है आज वहां क्रिकेट मैच, जो हिन्दुस्तानी क्रिकेट दल और इस देश के खिलाड़ियों में होने वाला था, देखने के लिये गये। हिन्दुस्तानी क्रिकेट दल के कप्तान पोरबन्दर महा-राज और लीमड़ी दरबार के कंवर साहब हैं, पर दोनों बीमार थे। स्कोचों को हराया तो सही लेकिन फ़ीकापन था। यहां से ४५ मील है, २) रु० लगे। यद्यपि सूर्य भगवान दिन भर विराजमान थे तो भी मैं वहां ठिठर गया, बड़ी ठण्डी हवा चलती थी। भोजन कलेवा तो करके गया था पर फिर भी भूख लगी। वहां अखाद्य पदार्थ थे, मैं बाहर आया पूछ ताछ करने से पता लगा कि एक मेम दुकान करती है, वहां से फल लिये, सूंठ की टिकिया, तिलसकरी और तरह तरह की बिना पानी की मिठाई भी थी। मैंने फल खरीदे और कहा मैं दुकान ही में खाऊंगा। झट रकाबी पत्थर की उस मेम ने लगा दी और सब बन्दोबस्त कर दिया।

यहां हिन्दुस्तानी भेष की बड़ी क़दर करते हैं मुझको क्रिकेट देखने के लिये बड़ा स्थान दिया, मेरा फोटो भी उतारा। १०००० दस हज़ार आदमी थे। वापिस आते वक्त ध्यान से मुल्क को देखा तो जयपुर से किशनगढ़ जितनी दूर है उससे कुछ कम दूर जगह होगी। इसमें पांच सौ के क़रीब कारख़ाने खांड के, टाट के, काग़ज़ के, कोयले के और तरह २ के थे। बड़ा विचित्र देश है। पहाड़, खेत, समुद्र और नदी सब एक ही साथ देखे। परमात्मा ने खानें इतनी ज़्यादा यहां रची हैं कि पूछो मत। सब देखकर अक़्ल हैरान है कि यहां के पृथ्वी के गर्भ में न मालूम कितने फलने फूलने वाले रत्न भरे हैं। आदमी इतने भले कि हर समय हर मदद देने को तैयार। पुलिस तो देवतास्वरूप है। बड़ा अफ़सर भी आकर सलाम करके चला कर यह पूछेगा कि आपकी हम क्या सेवा करें और हर समय सावचेती से हर बात का जवाब देगा। रात को देर से आये। फलाहार करके सो गये। जब मैं डंडी गया था तो पीछे से मेरे कमरे में एक बम्बई के वैश्य आ गये और भुने पिश्ते, बादाम वग़ैरह की मनवार की यह बाल्यावस्था के ही हैं और बहुत सज्जन हैं।

राजपूताना और स्काटलैंड की कुछ समानता:—एडिनबरा एक सुन्दर शहर है, इसका दृश्य पहाड़ दुर्ग आदि के बनावट में व ऐतिहासिक वृत्तान्त में राजपूताने की किसी रियासत की राजधानी से किन्हीं अंशों में मिलता है। इसके बाज़ारों में प्रिंसेज़ स्ट्रीट, हेनोवर स्ट्रीट विशेष सुन्दर देखने योग्य हैं। होली रुड हाउस का महल ऐतिहासिक वृत्तान्त से भरा हुआ है, यूनीवर्सिटी बिल्डिङ्ग, स्काट मोन्यूमेंट और अन्य पब्लिक इमारतें देखने योग्य हैं। सर वाल्टर स्काट की समय २ की मूर्तियां शिल्प-

णालयों में पाई जाती हैं। स्काटलैण्ड की कीर्ति सर वाल्टर स्काट से और सर वाल्टर स्काट का नाम स्काटलैण्ड से परस्पर दृढ़ सम्बन्धित है।

(लन्दन) २४-७-३२
१२॥ बजे रात के

चिरंजीविनि कमले ! आशीः,

सवेरे एडिनबरा से रवाना होकर यहां १० बजे रात के पहुँचे। सवेरे दलिया, दूध, सेव खाकर रवाना हुए थे, रास्ते में फल फूल खा लिये, चाय पी ली। यहां अभी अपने पुराने ढावे में अपना सब देशी भोजन कर लिया। तुम्हारा तार राज़ी खुशी का मिला। पढ़कर बड़ा प्रसन्न हुआ।

एडिनबरा से लन्दनः—एडिनबरा से लन्दन क़रीब २०० मील है, लेकिन १२ घण्टे में पहुंच गया। सीधे रास्ते से आता तो ६॥ घण्टे में यहां पहुँच जाता। अकेला था, लेकिन रेल में बैठे पीछे सब घर के से हो जाते थे। मैं जान कर चक्कर के रास्ते से आया कारण मुल्क ज़्यादा देखने को मिला। आयरलैण्ड और स्काटलैण्ड दोनों देश देख लिये और खूब सैर करली। गांव से गांव और क़स्बा से क़स्बा लगा हुआ था। खूब खेती होती थी। खेत हरे भरे जई, आलू, जौ और घास के थे। लेकिन विचित्र बात यह थी कि हरएक गांव, क़स्बे और शहर में सैकड़ों की तादाद में कारख़ाने थे। कारख़ानों की चिमनियां जयपुर की सरगासूली की तरह इतनी ज़्यादा थीं कि अगर वे पाटी जावें तो कई

मीलों की एक छत वन जावे। गायें यहां औसत दर्जे पर ॥ ८५ पच्चीस सेर दूध देती हैं। गउओं का पालन अच्छा करते हैं, इसका प्रमाण पाया। एक स्टेशन आया, वहां हमारी गाड़ी २० मिनट ठहरी। उसमें तीन डव्वे गोल, जैसी तेल की टंकी होती है, थे। अन्दर से यह डव्वे कांच से मढ़े थे, इनमें दूध भरा था शायद १५०० मन दूध एक डव्वे में आता होगा। मैंने पूछा—यह कहां जाता है और यहां कहां से आता है; जवाव दिया किसान लोग १० या १२ मील से लाकर यहां एक कम्पनी है उसको वेचते हैं। यह कम्पनी इसको शुद्ध करती है और डव्वों में भर कर लन्दन भेज देती है। ७ दिन तक खराव नहीं हो सकता, दो वार कम से कम तीन चार डव्वे लगाती है और ऐसी कई कम्पनियां हैं। कहो गोपालन अपन अच्छा करते हैं या ये लोग! जयपुर राज्य में मालपुरे राजमहल में जव वड़े साहव वहां विराजे थे एक गाय से आधा सेर दूध से ज्यादा नहीं लिया है।

कारखाने ऐलूमीनियम, वूट, लोहा, ऊन वग़ैरह न मालूम हज़ारों वस्तुओं के थे। थोड़े दिन तक तो इङ्गलैण्ड को इन कारखानों ने मालोमाल किया लेकिन मेरी वात याद रक्खो पुत्री! अव इन कारखानों की वाहुल्यता ने इङ्गलैण्ड और अंग्रेज़ी राज्य की उन्नति में रुकावट पैदा करदी है। आवश्यकता से अधिक चीज़ों की पैदावारी होने से गोदाम ठसाठस भरे हुए हैं और लागत के भाव से भी माल का उठाव नहीं है। यद्यपि यह देश अभी दरिद्री तो नहीं कहा जा सकता, परन्तु कारखाने कम चलने से वेकारी इतनी वढ़ गई कि एक सौ मनुष्यों में से १० के लिये कोई काम नहीं रहा। परमात्मा रक्षा करे!

छठवां अध्याय

लन्दन परिचय

लन्दन, २६-७-३२.

चिरंजीव कमला बाई ! आशीः,

आज एक मारवाड़ी अग्रवाल से मिला। मिस्टर रामेश्वरजी बजाज़ से जो श्रीमान् सेठ जमनालालजी के काका हैं। वे यहां पर सात वर्ष से हैं। लाखों रुपये कमाये, जायदाद लाखों की बनाली, अब बेचना चाहते हैं, कोई लेवाल नहीं है, कुछ कर्ज़ा भी हो गया है। बच्चे बच्ची ७ वर्ष से भारत में बनारस में हैं। यह बड़े ही सज्जन हैं। देशप्रेम और देशभक्ति इनमें खूब भरी हुई है, बड़े मृदु स्वभाव के हैं। जयपुर की पगड़ियां इनके स्थान में देखकर मैं अपनी दृष्टि को पवित्र हुआ मानता हूं।

(लन्दन) २७-७-३२.

सर शादीलालजी ता० २५ को उसी जहाज़ से रवाना होंगे, जिससे हम आये थे। अब मैंने अमेरिका का जाना स्थगित कर दिया है। अपने वकील जुगलजी को पढ़ा देना। कारण (१) छुट्टी का जवाब नहीं आया और ता० २५ को रवाना होने के लिये यह आवश्यकीय है कि जहाज़ वाले को एक महीना पहिले लिखें कि जहाज़ में अच्छी जगह मिले, क्योंकि आजकल खास कर विक्टोरिया जहाज़ में, जिसका टिकट मेरे पास है, जगह

बहुत कम मिलती है। (२) छुट्टी मिली भी तो १५ दिन की छुट्टी से काम नहीं चलता। किराया खर्च भी करना और फिर जल्दी से भागना और कुछ देखना नहीं। महज़ पत्थरों को चुने हुए देख लेना इससे कुछ लाभ नहीं होता।

अपने वकील जुगलजी को चाहिये कि एक पत्र जो इस लिफाफे में होम मेम्बर के नाम का है उसको मौक़े से दे देवें इसमें लिखा है कि छुट्टी का जवाब नहीं मिला इसलिये जिस तारीख़ को जयपुर छोड़ा उसी तारीख़ को छुट्टी के अन्दर जयपुर वापिस आ जाऊंगा।

(लन्दन) २६-७-३२.

चिरंजीविनि कमले ! आशीः,

आज सवेरे ७। बजे सर शादीलालजी मिले। शादीलालजी जब मैं स्काटलैण्ड में था मिलने आये थे। उनसे मिलने से पता लगा कि वे ता० २५ को ही रवाना होते हैं। कारण उनको ७ सप्ताह पीछे फिर यहां आना है। उनका गवर्नमेंट पर इतना असर है कि उनको इङ्गलैण्ड और हिन्दुस्तान में जो लड़ाई के कर्ज़े का झगड़ा चल रहा है अथवा अन्य खर्च संबन्धी रक़म के झगड़े हैं उनको निपटाने के लिये भारत की तरफ़ से पञ्च नियत किया है। करोड़ों रुपये का हिन्दुस्थान का फ़ायदा इनके निर्णय से होना सम्भव है। इसलिये ऐसे विद्वान् का साथ छोड़ना नहीं चाहिये।

भारत के शासन करने वाले अंग्रेज़ और यहां के रहने वाले अंग्रेज़ः—वहां से आकर सर रोबर्ट हालेंड साहब से, जो पहिले आबू के बड़े साहब थे और फिर यहां आकर भारत-

सचिव की सभा के एक मेम्बर हो गये जिस जगह अब ग्लांसी साहब हैं, मिलने गया। उन्होंने सब के बारे में पूछा और कहा कि गवर्नमेंट ही गलती कर रही है, वकालतों को हटाने की चेष्टा कर रही है। गवर्नमेंट पछतावेगी। हमेशा एकसा हाल नहीं रहता है। वकालतें अत्यावश्यक संस्था हैं। इनसे बातें करते समय यह भी दुःख के समाचार सुने कि अपने पड़ोसी रा० ब० पंडित शीतलाप्रसादजी वाजपेयी चीफ़जज्ज जयपुर के ज्येष्ठ पुत्र का देहान्त हो गया, बड़ा रंज है, उनके नाम सहानुभूति का पत्र लिखा है और इस लिफाफे में बीड़ा है सो उनके पास भिजवा देना। फिर ये साहब लंच के लिये ले गये, मेरे साथ जो मेरा सेक्रेटरी था वह भी साथ गया क्योंकि मैं निरामिशी भोजन फलाहार वगैरह ही करता हूँ उन बेचारों ने भी मेरा साथ होने के कारण ऐसा ही किया। बड़े सभ्य हैं। जैसी सरलता और सभ्यता यह लोग यहां पर रखते हैं इसी तरह ये यदि भारत में भारतवासियों के प्रति रक्खें तो भारतवासी इनको अनन्य भक्ति से देखें, परन्तु भारतवर्ष में ये और ही चहरा मोहरा और वर्ताव रखते हैं। इस ही कारण से आपस में खींचातान और वैमनस्य रहता है। यह बात भी अनुभव से पाई जाती है कि ऐसे बड़े पदों पर जैसे साहब लोग पहिले आते थे वैसे अब नहीं आते। ऐसे कठिन समय में तो ऐसी अच्छी तबियत के ये लोग होने चाहियें कि जिनसे प्रजा को आश्वासन मिले। लेकिन आजकल ऐसी कठोर तबियत के स्वार्थी होते हैं कि वैमनस्यता जनता में और इनमें बढ़ रही है।

देहली के नरेन्द्र-मण्डल में जो दो वर्ष से भाषण हो रहे हैं उनसे तो साफ़ जाहिर है कि नरेन्द्रों में और इनमें भी खूब मनमुटाव बढ़ गया है। नरेन्द्रों को आवश्यकता से अधिक दवा भी

रक्खा जान पड़ता है। यदि ये लोग वास्तव में भारतहितैषी होवें तो गवर्नमेंट याने पैरा माउंट पावर, नरेन्द्र लोग और देशी राज्यों की प्रजा तीनों में खूब भक्ति-प्रेम बना रहें और कभी कोई विग्रह नहीं हो, परन्तु जैसा आज कल इनका वर्ताव है वह अशान्ति का फैलाने वाला है। इनको चाहिये कि देशी राज्यों की प्रजा की उन्नति और उत्थान को अपना ध्येय और अभीष्ट समझें और जिससे नरेन्द्रों और प्रजा में परस्पर भक्ति-प्रेम बना रहे ऐसी योजना सर्वदा करते रहें।

इसके बाद एक स्थान यहां मैडम डिसोट्स नाम का है, उसको देखा, इस स्थान में ऐसे कारीगर हैं कि झटपट मूर्ति न मालूम काहे की बना लेते हैं। हूबहू वैसी की वैसी बना कर सजा कर रखते हैं, जैसा आदमी होता है। कई जगह तो यहां तक देखने वाले को भ्रम होता है कि उन मूर्तियों को ज़िन्दा आदमी समझ कर उनसे पूछने लग जाते हैं। हद के दर्जे की कारीगरी है। यहां एक इस नाम की स्त्री थी उसके पास जितना धन था उसने अपना सब धन इसी काम में दे दिया। देखो इनका देशप्रेम, जैसे विचार उसही के अनुसार अपना सर्वस्व देश-हित में लगा दिया। सब तो अपने देश के राजाओं, मन्त्रियों कवियों और नामी कारीगरों की मूर्तियां बैठा दीं। कुछ विदेश के नामी लीडर्स की भी मूर्तियां थीं। महात्मा गांधी की भी थी लेकिन महात्मा गांधीजी से मिलान नहीं खाती थी।

हिज़ मैजेस्टी की गवर्नमेंट, देशी राज्य और भारत सरकार:— अब अगला हफ़्ता मैंने निश्चित रूप से इस ही काम के लिये रक्खा है कि यहां के पार्लियामेंट के मेम्बर्स, हिज़ मैजेस्टी के अफ़सर लोग और पार्टी लीडर्स से मिलूं, सब को अपने ढङ्ग से

अपने विचार प्रकट कर दूं और देशी रियासतों के नरेन्द्रों और उनकी प्रजा की क्या स्थिति है यह वतलादूं तथा ये लोग क्या विचार रखते हैं अथवा समय आने पर कितना साथ देवेंगे सो जान लूं।

जिन महाशयों से मैं मिला उनका नाम लिखना मैं उचित नहीं समझता। यह मैं अवश्य कहूंगा कि मेरे विचारों का जिस किसी से मैं मिला उस पर पूरा असर हुआ।

हिज़ मैजेस्टी की गवर्नमेंट के भारत से सम्बन्ध रखने वाले पदाधिकारी इस समय विचारशील पुरुष हैं। वहां के हालात और भारत सरकार के पोलीटिकल डिपार्टमेंट की करतूतों से अनभिज्ञ नहीं हैं, लेकिन मिस्टर वेन व लेवर गवर्नमेंट के समय का सा साहस इस समय की कौंसिल में नहीं पाया। भारत सरकार के पोलीटिकल डिपार्टमेंट की राय से दवे हुए हैं। न्यूकोन्स्टिटयूशन की योजना में भारत के देशी राज्यों को शामिल करने का एकमात्र यही अभिप्राय है कि ब्रिटिश साम्राज्य के वाहिर की दुनियां में भारतवर्ष की भी राष्ट्रों में गणना होवे और देशी राज्यों का शासन विधान उनकी राय से वनाया जावे। प्रजा के हिताहित का जैसा चाहिये खयाल नहीं है। अगर ज़रा भी प्रजा के हिताहित का ध्यान होवे तो जो विल पेश होवेगा उसमें इतना अवश्य डाल दिया जाना चाहिये कि:—

(१) जो देशी राज्यों को लगभग एक तिहाई भाग की सीटें अपने प्रतिनिधि भेजने के लिये मिलेंगी उनको ग्रहण करने के लिये देशी राज्यों की क़दीमी प्रजा न कि वनावटी प्रजा के आदमी चुनाव करके भेजे जावेंगे।

(२) कोई भी देशी राज्य फ़ीडरेशन में शामिल नहीं हो सकेगा जब तक वहां का शासन प्रजा को दातृत्व नहीं रक्खे।

(३) कोई भी देशी राज्य का निवेदनपत्र फ़ीडरेशन में शामिल होने के लिये नहीं लिया जावेगा जब तक कि यह निश्चय न हो जावे कि प्रजा-मण्डल से बनी हुई वहां की Executive Council (ऐग्ज़ीक्यूटिव कौंसिल) है और प्रजामण्डल या लेजिस्लेटिव असेम्बली के प्रधान या स्पीकर के उस पर हस्ताक्षर हैं; और यह कि लेजिस्लेटिव असेम्बली ठीक उस ही प्रकार और उन्हीं नियमों पर स्थित है जैसे कि ब्रिटिश भारत की प्राविंशियल असेम्बलियां हैं।

(४) जो जिस रियासत का है उसके सिवाय किसी पद पर भी दूसरी रियासत या ब्रिटिश इण्डिया का रहने वाला नहीं किया जावेगा और जितने ब्रिटिश इण्डिया के या रियासत के बाहर के उस रियासत या पैरामाउंट पावर की तरफ़ से आ जावेंगे उतने ही उस रियासत के दूसरी रियासत को या पैरामाउंट पावर को ब्रिटिश इण्डिया में उतने ही वेतन पर लेने भी होंगे।

लेबर पार्टी के भारतवासियों के लिये विचारः—हिज़ मैजेस्टी की गवर्नमेंट के अपोज़ीशन पार्टी के सभ्यों से मिला तो पाया कि प्रधान मन्त्री मिस्टर रैमजे मैकडोनेल्ड से यह कुछ असन्तुष्ट हैं। उनमें से एक दो ने तो यह कहा कि भारत के देशी राज्यों का सब सच्चा हाल मिस्टर रैमजे मैकडोनेल्ड को मालूम है। मालूम नहीं होता प्रधान मन्त्री होते हुए भी और देशी राज्यों की प्रजा के लिये जहां उत्तरदायित्व शासन नहीं है क्यों मौनसी धारण कर रक्खी है।

सर्वसाधारण जनता को तो देशी राज्यों और उनकी प्रजा के दुःख का हाल ज्ञात ही नहीं है। उनके ख़याल में यह बात

बैठ ही नहीं सकती कि प्रजा का देशी राज्यों में कोई अधिकार है ही नहीं। उनके ध्यान में यह बात चाहे जितना समझाओ आ ही नहीं सकती कि देशी राज्यों में शासन करने वाले देशी राज्यों से बाहर के आदमी भी हो सकते हैं। उनमें से जो अधिक उन्नत और शिक्षित हैं उन्होंने मुझ से कहा कि यदि अब के लेबर गवर्नमेंट हो जावेगी तो हम सब बातों का कोई उपाय निकाल कर हाउस ऑफ़ कामन्स में पेश करेंगे और देशी राज्यों की प्रजा का दुःख मोचन करने की चेष्टा करेंगे।

शेक्सपियर के नाटकः—तो बहुत से पढ़े थे, परन्तु उनमें से खेलते हुए केवल एक (Merchant of Venice) वेनिस के व्यापारी नामक नाटक को, जो विलायत जाने से पूर्व जयपुर महाराजा कालेज के विद्यार्थियों ने खेला था, देखा था। घूमते फिरते एक नाट्यशाला के द्वार पर जा पहुंचे और पता लगा कि इस नाट्य-शाला में केवल शेक्सपियर के नाटक ही खेले जाते हैं। उन दिनों में (Twelfth Night) ट्वेल्वथ नाइट नाम का नाटक खेला जाता था। इच्छा हुई कि दूसरे दिन रात को आकर वह नाटक देख लूं, परन्तु मैं नाटक तमाशे की तौर पर देखना नहीं चाहता था। मर्मभेदी महाकवि शेक्सपियर के उस नाटक में दिये हुए रस को आस्वादन करना चाहता था। चुनांचे मैंने अपने सिकत्तर मिस्टर गौड से कहा कि मुझको एक पुस्तक-विक्रेता की दुकान पर ले चलो। वह ऐसी एक दुकान पर ले गया जहां प्रत्येक पुस्तक अर्ध मूल्य पर बिकती है। पुस्तक-विक्रेता की दुकान क्या थी मेरे लिये तो एक अजायबघर था। एक बड़ी इमारत थी जिसमें ७ या ८ खण्ड थे और उनमें दो खण्ड ज़मीन के नीचे तहख़ानों की तरह थे। हरएक कमरे की चारों दीवारों

से लगी हुई अलमारियां थीं जिनमें पुस्तकें ठसाठस भरी हुई थीं और एक २ विषय की पुस्तकों के ऊपर एक २ क्लर्क था। नाम लेते ही फ़ौरन पुस्तक निकाल कर देता था, ऊपर क़ीमत लेनेवाले निकलने के दरवाज़े के पास बैठे थे। मेमो बिल और क़ीमत उनके पास जमा करानी पड़ती थी। यहां लन्दन नगर में भी आकर जो विद्यार्थी जिस विशेष विषय की तैयारी में लगे हुए हैं द्रव्याभाव से उस विषय के पंडित हुए बिना रह नहीं सकते, क्योंकि पुस्तक पढ़ी और फिर उसी पुस्तक-विक्रेता को बेच गये। विद्यार्थियों के लिये हर प्रकार का सुभीता है।

इस (Twelfth Night) ट्वैल्वथ नाइट नाम के नाटक को पढ़कर शेक्सपियर नाट्यशाला में देखने को गये। यद्यपि नाट्यशाला बहुत बड़ी और खिलाड़ी बड़े ही अभ्यास वाले थे और कई बार कई खिलाड़ियों के अभिनय करने पर करतलध्वनि भी खूब होती थी लेकिन मुझको तो केवल तमाशा ही दिखता था। नाटक का मर्म खिलाड़ियों के खेल से नहीं टपकता था।

(लन्दन) ता० ३१-७-३२.

चिरंजीविनि कमले !

यहां पर तारीख़ और वार का तो पता रहता है लेकिन हिन्दू तिथि क्या है कुछ ख़बर नहीं। अन्दाज़े से श्रावण शुक्ला २ होगी और तुम लोग तीज के त्यौहार मनाने में लगी होंगी। लन्दन में भी आज कल बड़े त्यौहार हैं। शहर उजड़ा सा है। मैं हैम्पडन कोर्ट गया था। क्या देखता हूं कि हज़ारों आदमियों की भीड़ है। यहां पर ६ पीढ़ी पहिले इङ्गलैंड के बादशाह रहते थे। कमरे

व परकोटे तो मामूली हैं लेकिन छतों की तस्वीरों और दीवारों के गलीचे बहुत कारीगरी के हैं। पुराना बगीचा जैसे अपने बाग होते हैं वैसा ही था, लेकिन नया बगीचा खूब बड़ा, क्यारियों की सजावट अच्छी, फव्वारे और लॉन एवं घास के मैदान तो बहुत ही बढ़ के हैं। यहां के राजा निर्दयी व दुष्ट हुए हैं और मन्त्री अच्छे प्रजापक्ष के हुए हैं, अब बादशाह के हाथ में कुछ नहीं है, मन्त्री ही राज करता है। यह हेम्पडन कोर्ट नदी के किनारे पर बसा हुआ है। मोटर बस में बैठ साथी को लेकर गया। आने जाने के ३) फ़ी आदमी लगते हैं और वहां १) देखने की फ़ीस है, यहां एक बात का बड़ा भारी दुःख है कि पानी कहीं नहीं मिलता। जगह जगह पेशाब-घर हैं, पाख़ाने हैं, लेकिन पानी नहीं। जब मुझको पानी की प्यास लगती है और हिन्दुस्तानी भोजन से ज्यादा ही लगती है तो मैं नारंगी का शर्बत बनवा कर पी लेता हूं जो ।=) आने से कम में नहीं बनता। होटल, रेस्टोरेंट (ढाबा) चाह की दुकान, बर्फ़, मिठाई अंग्रेज़ी, फल जगह २ बिकते हैं और छुट्टी के दिन भी यह दुकानें बन्द नहीं होतीं। अंग्रेज़ी मिठाई, दूध, सिगरेट का यह हाल है कि जहां चाहो खड़े हो जाओ कि एक मशीन जो जगह २ पर जमाई हुई है पेनी पटक दो और झट मिठाई चोकोलेट आदि आजावेगी। पेनी भारतवर्ष के आध-आने के जैसा शकल सूरत में होता है और लगभग -) आने के बराबर होता है।

(लंदन) ता० १-८-३२ ई०

चिरंजीविनि कमले !

रविवार और हाइडपार्कः—आज रविवार है केवल States Enquiry Committee की उस रिपोर्ट को, जो देशी राज्यों का भाग्यनिर्माण करेगी, पढ़ता रहा और आधी के क़रीब पढ़ ली है। बाद में हाइडपार्क में चला गया, यह बाग़ बहुत ही लम्बा चौड़ा कोसों में है। यहां हर बात की आज़ादी है, खूब लेक्चरबाज़ी होती है। इण्डियन कांग्रेस की ध्वजा भी फहराई जाती है। मिस्टर कमलानी नाम का एक भद्रपुरुष ४ घण्टे तक बोलता रहा, मैंने भी दस, पांच मिनट तक उसका भाषण सुना, बड़े मधुर स्वर से शान्ति के साथ समझा २ कर बोल रहा था। यदि कोई बीच में प्रश्न करता तो बड़ी गम्भीरता से उत्तर देता था। यह लोग ऊँची मेज़ पर खड़े हो जाते हैं और ध्वजा लगा कर बोलना शुरू करते हैं। इसी तरह पास ही दूसरे खड़े हो जाते हैं और बोलते हैं।

पादरी लोग खूब गाते हैं। क़रीब डेढ़ दो लाख आदमी इस बाग़ में जमा हो जाते हैं। यहां बुड्ढों व छोकरों की पतङ्गबाज़ी भी देखी, यहां के पतङ्ग अठपहलू मोटी खपच्ची के होते हैं और एक तरफ़ बीस पच्चीस गज़ की दुम भी लगा देते हैं। डोरा ज़रा मोटा होता है और पतङ्ग की लड़ाई नहीं करते इसलिये जयपुर की तरह 'वह काटा' की आवाज़ नहीं आती। किश्तियों में सैर करने वाले सैर करते हैं और बैंचें जो पड़ी रहती हैं उस पर बैठने का कुछ नहीं लगता, किन्तु कुर्सियां १,००० तो बैंच १० भी नहीं। कोई आदमी कुर्सी पर बैठा कि तीन आने मांग लिये जाते हैं चाहे फिर दिन भर ही बैठा रहे।

लंदन ता० २-८-३२

किंग्सले हाल (Kingsley Hall)—आज एक मकान देखा जिसमें महात्मा गांधी जब यहां राउंड टेबिल कान्फ्रेंस में पधारे, उतरे थे। ग़रीब कंगालों ने बना रक्खा है, जो तपस्वियों की तरह अपना जीवन रक्खे वही उस मकान में ठहर सकता है। यहां ग़रीबों के साथ बहुत सहानुभूति रक्खी जाती है। प्रबन्धिका इस स्थान की मिस मुरीयल लेस्टर बाहर इसही संस्था के कार्य्य को लेकर कहीं गई थीं, लेकिन उनके सहकारी वहां मौजूद थे, सब दिखलाया, उस सहकारी ने कहा कि भारतवासियों के साथ बड़ा कठोर बर्ताव हो रहा है, इससे हमारे देश का अपयश होता है। और किसी उपाय से जो आजकल कठिन क़ानून बन रहे हैं रुक जावें। और हम में तथा भारतवासियों में प्रेम भाव बढ़ जावे। उनके दुःख में हर समय हाथ बटाने को तय्यार हैं। फिर उस मकान के प्रत्येक कमरे को बतलाया जिसमें महात्मा गांधी ठहरे थे और उस झरोके को भी दिखलाया जहां से अपने प्रेमी उत्सुक जनता को प्रतिदिन दर्शन दिया करते थे। इस किंग्सले हाल की संस्था के दरवाज़े के सामने महात्मा गांधी ने जो वृक्ष लगाया वह भी सगर्व दिखलाया गया। मेह आज पांच छः बार इस समय में बर्षा इससे जगह २ इस मोहल्ले में ठहरना पड़ा और यहां के आदमियों से बातें करने का मौका मिला, सब महात्मा गांधी के माधुर्य्य, सहिष्णुता और बर्ताव से मुग्ध थे। यद्यपि यह मोहल्ला ग़रीबों के रहने का है परन्तु इन सब की दैनिक आमदनी भारतवर्ष के ऊंची कक्षा के आदमियों से कम नहीं है, इनकी ग़रीबी इन्हीं के

चरित्र का फल है, इनकी आधी कमाई मदिरा पान में जाती
है और आधी दैनिक आय से कुल कुनबे का पालन होता है।

जब किंग्सले हाल को देख रहे थे उस ही दिन डेनमार्क से
कई महिलायें आईं और बड़े चाव से हमारे साथ इस संस्था
को देखा। महात्मा गांधी के ठहरने के बाद यह संस्था एक प्रकार
का यहां तीर्थ व यात्रा का स्थान होगया है। इस संस्था में जितना दान
दिया जावे अच्छा है, उसका अच्छा उपयोग होता है।

लन्दन में व्यापार की क्षीणता—आज कई व्यापारियों
से बातें कीं, अंग्रेज़ अपना रुपया फंसाना नहीं चाहते। यहां कोई
व्यापार की वस्तु नहीं जिसकी मांग हो, यदि अपनी तरफ़ से
भेजी जावे तो नुक़सान की सूरत है। अब यहां का व्यापार सब
मध्य यूरोप विशेष कर जर्मनी को भाग रहा है और अगर हिन्दु-
स्तान इनके काबू में से निकल सकता है तो इसी सूरत से कि
भारतवासी जिस चीज़ को वर्तें अपने मुल्क में पैदा करलें।

बड़े २ जहाज़ एक पाउंड एक टन याने १) रु० के डेढ़ मण
के हिसाब से बिक रहे हैं। हिन्दुस्तानियों को चाहिये कि अपना
जहाज़ी बेड़ा और व्यापारियों को चाहिये कि अपनी कम्पनियां
खोलें और जहाज़ रखकर बिना इनको आढ़त दिये माल मँगावें।
यद्यपि लंदन में सत्तर लाख आदमी रहते हैं और अभी तक व्या-
पार की सब से बड़ी मण्डी है तथापि गिराव पर है।

(लंदन) ता० ३-८-३२ ई०

चि० कमले !

व्हूलविच अकाडेमी (Woowich Academy)—आज मैं व्हूलविच उस संस्था को देखने गया जहां अपने प्रभु महाराजाधिराज श्री मानसिंहजी बहादुर पढ़ने आये थे और वहां रहे थे। वहां कोई नहीं जा सकता है और आजकल छुट्टियां भी थीं, किसी को अन्दर जाने की इजाज़त नहीं हो सकती, लेकिन इण्डिया आफ़िस के (Mr. Gruselier) मिस्टर ग्रुजेलियर के द्वारा मैंने बन्दोबस्त कर लिया और एक पत्री इंडिया आफिस से लिखवाली और पहिले से फ़ोन करा दिया। इन्हीं महाशय ने मुझको कुल इण्डिया आफिस साथ लेजाकर दिखाया। यह महाशय बड़े सभ्य और नेक हैं, इण्डिया आफिस की लाइब्रेरी व दूसरे कमरे वगैरह जहां भारतसचिव की केबिनेट की मीटिंग होती है सब दिखलाये और हरेक प्रश्न को समझाकर यथोचित उत्तर दिया। आज १०॥ बजे और १२ बजे पहुंचने को था लेकिन जाने के मार्ग से अपरिचित होने से कुछ देर होगई, कोई लंदन से ३० मील दूरी पर यह जगह है। बड़ा अच्छा बर्ताव किया। अकाडेमी के द्वार पर पहुँचते ही सलामी ली और दरवाज़े के कमरे से एक अडजूटेन्ट साथ हुआ। इस संस्था के कमांडर के पास लेगये जो मेजर जनरल है। दरवाज़े पर उसने पेशवाई की और मेरे साथ होगये और सब दिखलाया, नये भर्ती होने वाले विद्यार्थी पहिले छः महीने तक एक छोटे कमरे में रक्खे जाते हैं और ऐसा अभ्यास कराया जाता है कि अपना शारीरिक कार्य्य करने में कभी किसी नौकर वगैरह का मुंह न ताकना पड़े।

टैनिसकोर्ट भी ५, ७ बने हुए हैं। क़वायद कराने के मैदान भी अच्छे बने हुए हैं। घुड़शाला मामूली, क़सरत का कमरा बड़ा, खाने का कमरा काठ की कुर्सियों का, खाना साधारण मिलता है, सब को अकेला रहना पड़ता है, कोई पास नहीं जा सकता, अपने प्रभु के पास एक नौकर कमरे को साफ़ करने के लिये, जिसका नाम जिंजर हुरैंड है, था। बड़ी भक्ति से जो भी सेवा कर सकता था करता था। यहां का कोई विद्यार्थी अपने पास कुछ रुपया नहीं रख सकता है। तोपों की क़वायद विशेष करके सिखाई जाती है। पुरानी इमारत है और अन्त में खाती, लोहार, खैराती का भी कुछ काम सीखना पड़ता है, अपने महाराज साहब ने भी सीखा है। यहां का यह सब प्रबन्ध सैनिक धर्मानुसार उपयुक्त ही है। यहां के विद्यार्थियों को सैनिक नियमानुसार सहिष्णु बनाया जाता है और ग्रेट ब्रिटेन के जितने भी नामी सेनानायक हुए हैं सब यहां ही के विद्यार्थी थे। एक कमरा है उसमें इन सब वीरों के नाम शिला पर मुद्रित हैं।

महाराज साहब ने इस संस्था को एक बिलियर्ड मेज़ दी है उस पर उनका नाम लिखा था। अफ़सर का नाम मेजर जनरल सी० एम० वेगस्टाफ़ (Major General C. M. Wagstaff) है, बड़े ऊंचे दर्जे के अफ़सर हैं उसका मेरा जन्म एक ही मास का है और तारीख भी मिलती जुलती है। जो रामबाग़ में स्नानागार बना है वैसा ही यहां भी है। शायद यहां ही से विचार उत्पन्न हुआ हो फिर यह महाशय अपने बंगले पर मुझको ले गये, भोजन करने के लिये कहा लेकिन मैं लन्दन में कर चुका था। बड़ा अच्छा बंगला है अपनी मेमसाहब से व अपने लड़कों से मिलाया, बातें कीं। यह साहब पहिले भारतवर्ष में भी रह चुके

हैं और हर समय प्रसन्नचित्त रहने वाले, ठा० कल्याणसिंहजी अजयराजपुरा वालों से भी खूब परिचित हैं। मुझको इन साहब ने ठा० कल्याणसिंहजी की खेंची हुई अपनी तस्वीर दिखलाई जिससे उनकी प्रकृति और स्वभाव खूब झलकता था, यहां व्हूलविच में एक आरसिनेल है जिसमें तोपें बनती थीं, लेकिन अब बन्द हैं और जो १०,००० आदमी इसमें काम करते थे, क़रीब २ सुना जाता है, बड़े कष्ट की बात है! बेकार हैं॥ और सब आनन्द है। आज मेह कलसे कम वर्षा, कल बिजली भी गिरी जिससे २ आदमी मरे थे।

इस हफ्ते में अधिक समय States Enquiry Committee Report नाम की पुस्तक के देखने में लगा। मैं इस समय जयपुर दरबार का वकील ८ वर्ष से हूँ और वाइसराय महोदय के जो एजेन्ट माउन्ट आबू पर राजपूताना प्रान्त के लिये रहते हैं वहां ही रहना पड़ता है। बाल्यावस्था से ही देश और राष्ट्रसम्बन्धी विषयों की तरफ़ मेरी लग्न है। जिसमें अब तो खास इस ही काम पर नियत हूं। जब से न्यूकान्स्टीटयूशन और राउन्ड-टेबल कान्फ्रेंस की चर्चा चली मैंने भी कई रूप से अपने विचार प्रकट किये और लग्न उधर ही लगी हुई है।

देशी राज्यों के सम्बन्ध में जो जयपुर तथा दूसरी सब रियासतों की जांच समिति बैठी थी उसकी रिपोर्ट बृहस्पतिवार ता० २८-७-३२ को निकली, मैंने भी एक प्रति ली। खूब ध्यान से पढ़ी और हिज मैजेस्टी के मन्त्रीगण से उस पर बहस भी की। मेरी राय जो उस पर है वह सब पृथक् पुस्तक रूप से निकलेगी, क्योंकि जयपुर मेरा देश है और जयपुर के राजराजेश्वर मेरे प्रभु हैं। जयपुर के सम्बन्ध में मैंने और भी दत्तचित्त होकर चेष्टा की और जो मर्म ढूंढ़ा उसको तो मैं प्रकट नहीं कर सकता, लेकिन

संक्षिप्त रूप में यह अवश्य कहूँगा कि "जिन ढूंढ़ा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ" इस उक्ति के अनुसार जिन २ रियासतों ने कुछ ज़ोर लगाया उनके हाथ कुछ पड़ जावेगा और जो चुप हैं उनका और भी ह्रास होगा।

यह कमेटी वटलर कमेटी की बड़ी बहिन है और अपनी लेखनी के चातुर्य्य से देशी राज्यों को खूब लपेटा है, प्रजा के हिताहित का इसमें भी कुछ ध्यान नहीं रक्खा है और देशी नरेशों के साथ २ उनकी प्रजा का भी ह्रास होगा।

लेडी रेनोल्ड्सः—राजपूताने के एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल महोदय सर लियोनार्ड रेनाल्ड्स महाशय तो अभी तक आबू पर हैं हां, उनकी मेमसाहवा, जो तुमको वहुत प्यार करती हैं और जिनकी तुम्हारी माता व भुवा से बड़ा मित्रता है, आजकल यहां ही हैं। उनसे मिलने के सम्वन्ध में कई पत्रियां आईं गईं, परन्तु कभी मेरा समय व स्थान मिलान नहीं खाया और कभी उनका, अभी आज ३॥ वजे उनकी पत्री आई कि वेक्स हिल (Bex Hill) स्थान पर हूं आप मिले विना मत लौट जाना, मैं उसी वक्त वेक्सहिल को जो यहां से ६० मील दूर है रवाना हुआ। २ घण्टे रेल और आधा घंटा मोटर को जाने में लगा, सवा घण्टे वहां ठहरा और २॥। घण्टे वापिस आने में लगे। समुद्र के किनारे वहुत अच्छे छोटे से वंगले में रहती हैं। भारतवर्ष के ठाट वाट के सामने इस छोटे से वंगले पर मुझे बुलाने से बड़ी घवराती थीं लेकिन उनका यह घवराना निरर्थक था। अव भी अपनी हैसियत से ज्यादा वड़े मकान में रहती हैं कदाचित् किसी का मांग लिया है। वगीचे में गुलाव की वेल सुन्दर है, किसी हिन्दुस्तानी अफ़सर का है क्योंकि एक धूप या तम्बाकू का आवनूस की लकड़ी का वरतन रक्खा था जिस पर पाँचों अपने

देवताओं की-श्री हनुमानजी, शिवजी, राम, जानकी की तस्वीर बहुतही उत्तम और बारीक रजत की कुराई की थीं। खाने, बैठने, सोने इत्यादि के ८ या ९ कमरे और एक मोटर ग्राज़ था। तुमको बहुत २ याद किया है और फिर महाराजसाहब की दोनों महारानी साहिबाओं की बातें करती रहीं, विवाह की बातें करती रहीं और अपने पति बड़े साहब के प्रशंसनीय काम गिनाती रहीं। जयपुर में सुप्रबन्ध का बखान भी करती रहीं। मैं चुप चाप सुनता रहा, क्योंकि महमान था और बात भी सच्ची यही है कि उनके समय में प्रबन्ध उत्तम ही रहा। फिर मुझको मोटर में लेकर रेल पर पहुचाने आई और कहा कि मेरे पति को जब मिलो कुशल समाचार कहना। जगह समुद्र के किनारे पर अच्छी और दृश्य सुन्दर, सफाई खूब अच्छी है। बच्चे तीनों तन्दुरुस्त हैं जिसमें लड़का तो बड़ा ही तन्दुरुस्त है। दूर से सब से पहले पहचान कर कह दिया कि वकीलजी साहब जयपुर दरबार आते हैं। मेम साहब ने आपकी माताजी को बहुत याद किया है और चिरंजीविनि! तुमको तो कई बार प्यार लिखने के लिये कहा है।

(लंदन) ता० ५-८-३२ ई०

चिरंजीविनि कमले !

इण्डिया हाउस (India House)—पत्र तुम्हारा नहीं मिला। न मालूम क्या होजाता है। भेजा तो होगा ही। कहीं देर से भेजना हुआ होगा या टामसकुक के यहां कुछ गड़बड़ी हुई है। आज एक मकान देखा जो (India House) भारतवर्ष के मकान के नाम से प्रसिद्ध है। भारतवर्ष के ख़र्चे से अभी बनवाया गया है और ४०००) चार हज़ार की वेतन पाने वाले एक महाशय,

जिसको हाई कमिश्नर फॉर इंडिया कहते हैं उनके चार्ज में है। ये ही महाशय विद्यार्थियों को और पेन्शनियों को संभालते हैं। यह मकान बहुत विशाल है। रंगत का काम किया हुआ है। तरह २ के नमूने हिन्दुस्तानी चीज़ों के बना रक्खे हैं और पुस्तकालय भी खोल दिया है। भारतवर्ष के कुछ समाचारपत्र भी यहां पर मिलते हैं भारत की कारीगरी की प्रदर्शिनी लगाई है। जयपुर की भी दो चार चीज़ें हैं। चार मञ्जिल का मकान है बाहर से बहुत सुन्दर है। यहां सड़कों से नीचे हरएक मकान में एक या दो मञ्जिल अवश्य रहती है। इस इण्डिया हाउस में लकड़ी पत्थर सब भारतवर्ष का ही लगा है। अब भी चार कारीगर भारतवर्ष के यहां पर काम करते हैं। हाई कमिश्नर तो इस समय, जो कैनेडा अमेरिका के नगर ओटावा में कान्फ्रेंस बैठ रही है, उसमें गये हैं। उनके सहकारी ने, जो एक बंगाली महाशय हैं, मुझको सब मकान अपने साथ ले जाकर दिखलाया। इसमें कर्मचारीगण बहुत ही अच्छे हैं और अपने देश की महिमा जितनी बतला सकते हैं सबको बतलाते हैं। मैंने भी जयपुर से कुछ चीज़ें भेजने का वायदा किया है सो वहां आने पर अवश्य भेजूंगा।

लन्दन कालेज और विश्व-विद्यालय—वहां से लौटते हुये यहां का कालेज देखा। एक हज़ार से पन्द्रह सौ तक लड़के एक कमरे में बैठते हैं और क़रीब ६०० सौ कमरे हैं। उसमें प्रोफ़ेसरों के भी कमरे हैं। बड़े नामी २ प्रोफ़ेसर हैरोल्ड लस्की जैसे भी हैं। मिस्टर बरसाया, जो जब्बलपुर के हैं और दीवानबहादुर सेठ वल्लभदासजी व जीवनदासजी वग़ैरह के खान्दान से परिपोषित हैं, वह भी यहीं पढ़ते हैं, मेरे साथ थे। इस कालेज के फ़र्श पर रबर के चौके बिछे हुये थे। लाइ-

अंरी विशाल, उसमें हरएक जगह मेज़ें और कुर्सियां बिछी हैं और बिजली तो यहां दिन भर प्रकाश कम होने से जला ही करती है।

विद्यार्थियों के लिये सुभीते—लन्दन में अनुमान से १०,००० दश हज़ार भारतवासी रहते हैं जिनमें एक तिहाई तमाशबीन, एक तिहाई व्यापार या सेवा करने वाले और एक तिहाई विद्यार्थी हैं। विद्यार्थी विद्योपार्जन सुलभता से कर सकें इसके कितने ही उपाय गवर्नमेंट करती है। अव्वल तो जितने विद्या-मन्दिर हैं सब सम्भवत: पर्याप्त और पूर्ण हैं फिर गवर्नमेंट ने दो तीन जगह बोर्डिंग हाउस की भांति छात्रालय खुलवाने में सहायता भी दी है। तीसरे म्यूज़ियम ऐसे अच्छे हैं कि जो हर शाखा की विद्योपार्जन में विद्यार्थी के लिये बिना खर्चे के लाभकारी होते हैं। इसके उपरांत जिन विद्यार्थियों को केवल विद्योपार्जन ही अभीष्ट है वे फैमिलियों के साथ रहकर दो पाउन्ड सप्ताह मकान व भोजन में भी गुज़र अच्छी तरह कर सकते हैं। हां, एक बात सुनने में यह अवश्य आई कि कोई २ परीक्षक ऐसे भी संकुचित विचारों के हैं कि जिनके हृदय में गोरे काले का भेद बसा हुआ है और विशेष कर आई. सी. एस., डाक्टरी, इंजीनियरी आदि विभागों में। हमारे जयपुर के एक बहुत ही सुशील एवं कुशाग्रधी विद्यार्थी हैं, बिचारे वे भी इस बुराई के कारण दुखी हैं।

हमारा प्रोग्राम यूरोप में इस प्रकार होगा।

ता० ६ अगस्त रवानगी लन्दन विक्टोरिया स्टेशन से रात के ११ बजे
ता० ६ " से ११ ब्रुसेल्स (वेलज़ियम)
ता० ११ " से १४ वर्लिन (जर्मनी)
ता० १४ " से १५ लिपज़िग (जर्मनी)
ता० १५ " से १६ प्राग (जैकोस्लोवेकिया)
ता० १७ " से १६ वियाना (आस्ट्रिया)
ता० २० " से २१ वेनिस (इटैली)
ता० २१ " से २२ मिलान (इटैली)
ता० २२ " से २४ जिनीवा (स्वीज़रलैण्ड)
ता० २४ " से २५ नीस (फ्रान्स)
ता० २५ " के सवेरे जिनीवा (इटैली)
ता० २५ " को २ बजे रवानगी जहाज़ विक्टोरिया से
ता० ५ सितंवर को सवेरे आमद वम्वई
ता० ७ " रवानगी वम्वई से जयपुर मा० सवाई माधोपुर
ता० ८ " सायंकाल आमद जयपुर

क्योंकि भिन्न २ राज्यों में भिन्न २ सिक्के हैं इसलिये मैंने सब राज्यों के सिक्कों का भाव जानना उचित समझा। मेरी यात्रा के समय जो भाव थे वे अपेंडिक्स नं० १ में दिये हैं और तुमको इसका ज्ञान हो इसलिये उनको भारतवर्ष के सिक्के की क़ीमत में करके रक्खे हैं।

अब डाक रवाने होने में वक्त शेष नहीं है सो चिट्ठी खतम करता हूं। आनन्द में रहना।

लन्दन ६-८-३२ ई०

चि० कमले !

विंडसोर का गढ़ (Windsore Castle)—आज जो एयर मेल से पत्र दिया उसमें तारीख़ कल की ग़लती से लग गई। सवेरे समय नहीं मिलेगा इसलिये अब रात्रि के १२ बजे यह पत्र लिख रहा हूँ। पत्र लिख भोजन—मूंग, चावल, रायता, फुलको आदि का-करके राजराजेश्वर के महल विंडसोर के क़िले को देखने गया। ७॥) रु० ख़र्च हुये। यहाँ से ३० या ४० मील है। क़िला ऊंचाई पर एक छोटीसी टेकड़ी पर है। सब महलात देखे। छत का काम बढ़िया और जगह २ की आई हुई चीज़ें, पुराने शस्त्र, हर तरह के बर्तन और तरह २ के फ़ैशन की मेज़ें और कुर्सियां लगी हुई थीं। सोने, खाने, नहाने, धोने के सब ही कमरे देखे। जैसे अपने राजाओं के हैं, वैसे ही हैं। दीवालों पर जो गलीचे थे वे बहुत पुराने और बड़े बारीक काम के थे। बीच का हाल बड़ा अच्छा सजा हुआ था। महाराणी ने एक दो कमरों में, जिसका नाम गुड़ियाघर है, अपनी चीज़ों और मकानों के नमूने लगा रक्खे हैं जिससे पूरा पता चल जाता है कि राजराजेश्वरी के महल कैसे हैं और उनमें क्या है। इस क़िले के मार्ग में नदी पड़ती थी, उसमें मर्द औरत कैसे नहाते हैं और तैरते हैं सो देखा। केवल गुप्तेन्द्रिय, सूंडी, कमर, आधी छाती तक ढकी रहती है, बाक़ी बिलकुल नंगे होते हैं, घण्टों नहाते हैं।

रास्ते में कुछ खेत भी देखे। बड़ी अच्छी तरह कमाये हुये थे लेकिन मालियों के थे। फुलवाड़ियां अलग २ प्रकार के फूलों की थीं जिनके फूल मालिनें शहर में बेचने के लिये लेजाती हैं जिन्हें अमीर लोग अपने कमरों को गुलदस्ते आदि से सजाने

के लिये खरीद लेते हैं। आज तो धूप और गर्मी मुझको भी बहुत लगी और सबको ही लग रही थी। यहां का मौसम बड़ा विचित्र है। पलक में मेह, पलक में शर्दी, पलक में करड़ी धूप हो जाती है। मैं नावाक़िफ़ था, नहीं जानता था कि स्टेशन से गढ़ कितनी दूर पर होगा इसलिये उम्दा लैण्डो घोड़ागाड़ी में बैठकर गया। उससे करार किया था कि सब क़स्बे को दिखलावे लेकिन वह सिर्फ़ क़िले तक लेगया। मैंने समझा था कि शायद दो चार कोस पैदल चलना पड़े, कुछ शान का भी ख़याल था, लेकिन २ मिनट में ही क़िला आगया और उसने कहा—आप देखकर आओ जब तक मैं यहां ही खड़ा हूं। क़िले में जब ४० आदमी जमा हो जाते हैं तब दिखाते हैं और एक गाइड दिखाने के लिये देते हैं, कोई अन्दर अकेला नहीं जा सकता। आज जब मैं देखने गया तो क़रीब ३०० की पार्टी होगई। दिखाने वाले ने कहा कि हम बादशाह के रहने के चार कमरे नहीं दिखा सकते। जब अन्दर पहुँचा तो सिपाहियों ने झुक कर सलाम किया और दिखाने वाला हमेशा अपने पास लिये रहा। हिन्दुस्तानी वेष से बड़ी क़द्र होती है, हर आदमी यही चाहता रहता है कि मैं इनके लिये कुछ सेवा करूं। जब देखकर बाहर निकले उस समय ५०० साहब मेम होगये थे। सब भले घर के थे, सब के पास गले में ज़ेवर था। क्योंकि दरवाज़े के बाहर बग्घी केवल मेरे लिये ही खड़ी थी सबने समझ लिया कि कोई भारतवर्ष के राजा महाराजाओं में से हैं। वापिस घर पहुँचने में १॥। घण्टे लग गये।

लंदन में मारवाड़ी जीमन—आठ बजे जीमने जाना था ७॥। बज गये। जल्दी से हाथ मुंह धोकर कपड़े बदल कर पटनी बृज को रवाने हुआ, छः पेनी यानी ।=) आने लगे। कभी

इतना किराया शहर के अन्दर किसी एक जगह जाने का पहिले नहीं दिया था। सर शादीलालजी, उनके दोनों कुमार और मुझको श्रीमान् सेठ जमनालालजी के काका, श्री रामेश्वरजी बजाज़ ने निमन्त्रण किया था। मैंने समझा २०-२५ मिनट में पहुँच जावेंगे, स्थान पहिले देखा हुआ था परन्तु रास्ते में पौन घण्टा लग गया; पौन मील तक पैदल चलना पड़ा। रास्ता याद नहीं रहा। एक छोकरी बड़ी सुन्दरी लेकिन भोली सभ्य मेरे साथ होली और मुझको ठीक स्थान पर लेगई और फाटक खोलकर कहा इसमें आप चले जाइये। घन्टी खटखटाई तो अन्दर से रामेश्वरलालजी आये, खाने के कमरे में घुसे तो सर शादीलालजी पापड़, जो अक्सर अख़ीर में खाया करते हैं, खा-चुके थे। मेरे लिये पुरसगारी आई। पूरी, चक्की का साग, दही-बड़े, बर्फ़ी, गिरी की बर्फी, छानावड़ा, साग और शेखावाटी की चटनी, चावल कढ़ी मानो सीकर या कुचामन में बैठे जीमन हो रहा है; फिर फल खाये—एक आड़ू क़रीब डेढ़ पाव का, बड़ी मीठी नारंगी दक्षिण अमेरिका की, जो बड़ी स्वादिष्ट और रसीली थी। वहां से बड़ी मोटर में बैठकर आये तो रास्ते में एक मेम ने सब के सामने मुझ से कहा कि मैं तो आपके पास बैठूंगी और झट मेरे पास आकर बैठ गई और मुझ से मीठी २ बातें करने लग गई मुझे बड़ी शर्म आई, दूसरे साथियों ने हँसी में कह दिया कि हमारे राजा साहब हैं फिर तो और भी घुल २ कर बातें करनी चाहीं। मैंने मुँह फेर लिया, वह कहने लगी हमसे आप नफ़रत क्यों करते हो। आप तो इतने बड़े अच्छे सुन्दर जवान हैं। रामेश्वरलालजी से कहा कि आप अपने सरदार को कहो कि हमारी तरफ़ मुंह करलें। पांच चार स्त्रियां उसके साथ थीं, जब बहुत करड़ा रहा, तो उठकर नीचे गई।

मैं तो कुछ सुन्दर नहीं। यहां तो हिन्दुस्तानी लिवास पर मस्त औरतें टूट पड़ती हैं। एक मस्त स्त्री राजा २ सम्बोधन करके नाचने ही लग गई। मैं बड़ा घबराता हूं और इसलिये अकेला कभी नहीं जाता, यह यहां की सभ्यता है। उसके जाने के बाद मेरे साथियों ने मज़ाक किया कि सोमानीजी हम तो समझते थे कि जयपुर तक ज़रूर साथ जावेगी।

लन्दन ता० ७-८-३२.

चिरंजीविनि कमले!

प्रभात हुआ, स्वर्गीय रावबहादुर नौरंगरायजी खेतान के बेटे, जो हवाई जहाज़ से उड़कर अपने बीमार लड़के से मिलने आये थे, घूम घाम कर वापिस रवाना हुये और उसही जहाज़ से जावेंगे जिससे मैं वापिस जारहा हूं। इतने दिन यूरोप में ठहरेंगे। उनसे यहां नहीं मिला था इसलिये स्टेशन पर मिला। उनका लड़का जो कमज़ोर है, आनन्द में है। फिर एक काम था, वहां गया। रात को गर्मी बहुत थी, नींद कम आई सो आराम किया।

लन्दन के बड़े अस्पताल का रुग्णालय—फिर अस्पताल में रुग्णालय को देखने का मौक़ा आज रविवार को ही मिलता है, सो वहां गया। घर में रोगियों को अथवा भारतवर्ष के अमीरों को उतना आराम नहीं मिल सकता जो वहां है। दो चार तकिये, स्वच्छ सफेद चद्दरें, अलमारी, सब ज़रूरत की चीज़ें व खाना पीना सब मुफ़्त मिलता है। गुलदस्ते मेज़ें कुर्सियां सब थीं और साथ ही में बिना तार का यन्त्र (Radio) सबके पास रक्खा रहता है। कान में लगाया और जहां जिसका वक्त

है गाना वगैरह शुरू हुआ। दुनियां भर से बातें करलो। हरएक मरीज़ के पास लगा था और हरएक रोगी से उसके रिश्तेदार मिलने के लिये आये हुये थे। बाहर निकले तो दो तीन हज़ार आदमियों से ज़ियादा थे मानो मेला बिखरा हो।

फिर वहां से अजायबघर देखने गये, बहुत बड़ा है। कई चीज़ें पांच हज़ार वर्ष पहिले की देखीं।

ज्योतिषी मशीनः—वहां से राजा गोविन्दलालजी पित्ती, सेठ केशवदेवजी रामगढ़ वालों के जवांई से, जो स्काटलैण्ड से कल आये थे, मिलने को गये। नहीं मिले अब कल ही वे भी यूरुप के लिये प्रस्थान करेंगे। फिर हाइडपार्क में गये जो पहिले रविवार को देखा था, आज भी वही दृश्य देखा। हिन्दुस्थानी भी अपने अखाड़े में जमा थे, गवर्नमेंट को खूब भांड रहे थे। क़रीब डेढ़ दो लाख आदमी इस पार्क में आ जाते हैं। यहां सब जगह मशीनें लगी हैं, जिसमें एक पैनी डालो और जिस बात के लिये वह मशीन है वह चीज़ फौरन निकल आती है। आज स्टेशन पर गये। पैनी डाली और प्लेटफार्म टिकट निकल आया। आज एक और मशीन देखी, पैनी डाली और झटपट एक मिनट में उसही समय टाइप होकर एक कार्ड, जो उस समय के मनोगत भाव थें उनका लिखा हुआ बाहर आया और वे भाव उस कार्ड पर यों अङ्कित थे Quick in temper, which keeps you backward······dynamic energy that needs restraint ·········fond of life······your thoughts have strayed and spoiled the reading············fonds of friends and company·········to be trusted. "स्वभाव में तेज होने

से पिछड़ रहे हो.........उत्साहपूर्ण एवं जोशीले बहुत ज्यादा हो इसमें रुकावट होनी चाहिये.........जीवन के उत्सुक हो ....तुम्हारा ख्याल बट रहा है इसलिये चरित्र वर्णन बिगड़ता है.........मित्रों और साथियों को चाहनेवाले हो......... विश्वास करने के योग्य हो।" अपने ज्योतिषी चौबे हरवक्षजी को दिखाना और कहना कि अब ज्योतिषी क्या करेंगे। यहां तो मशीनें ही ज्योतिषी का काम करती हैं।

(लन्दन) ८-८-३२

चिरंजीविनि पुत्री !

आनन्द से रहो, मुझको टिकट जहाज़ का मिल गया है। जो तुम अब चिट्ठी डालो तो जहाज़ के पते से डालना। मैं जहाज़ में ता० २५ को जिनोआ से रवाना होऊंगा। यहां भी मैंने कह दिया है कि मेरी सब डाक वहां ही भेजी जावे। रेल का टिकट सब जगह का यहां ही से, जैसा कि प्रोग्राम तुमको भेजा जा चुका है, ले लिया है। आज सेल्फरिजेज (Selfrideges) नामक सौदागर की दुकान पर गये। दुकान क्या है, बेटी! जैसे अपने बाग़ की बड़ी इमारत है उसको पचास गुणा कर दो उतनी बड़ी दुकान है। कम से कम ग्राहक व तमाशबीन ४००० हर समय रहते हैं। किसी कमरे में बर्तन, किसी में कपड़े, गरज़ कि कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो यहां न मिलती हो। मुनीम गुमाश्ते एक हज़ार के लगभग होंगे। खण्ड ६ हैं, दो तीन जयपुर के चौराहे घेर लेवें इतना बड़ा विस्तार है।

हवाई जहाज़ से सैरः—फिर ३ शिलिङ्ग ख़र्च करके क्रोयडन गये वहाँ पर जाकर हवाई जहाज़ में बैठा। आज राजा गोविन्द-लालजी पित्ती भी अपने पुत्र से मिलने के लिये पैरेस हवाई जहाज़ में बैठ कर गये थे। पहिले तो जी डरा फिर एक बंगाली विद्यार्थी मिस्टर सुहृत मल्लिक को, जो हवाई जहाज़ का काम सीखता था, कहा वह साथ हो गया और मेरे साथ हवाई Puss Moth G. AB HB जहाज़ में बैठ गया। उड़ाने वाला इञ्जीनियर मिस्टर सी. जी. हैनकोक उसका उस्ताद था। पुत्री! ज़रासा भी जी न मचलाया, न घबराया बल्कि ४ हज़ार फीट ऊँचे उड़े। ज्यों ज्यों ऊंचे उड़े बड़ा आनन्द आया। एक मिनट में एक मील की रफ़्तार से चला, कुल लन्दन का चक्कर काटा। नीचे ज़मीन और उसके ऊपर की वस्तुएं ऐसी दिखती थीं जैसे किसी ऊंचे मकान पर से नीचे किसी विशाल मकान का फोटो पड़ा हुआ हो। आदमी तो नीचे जूं के समान दीखते थे, मोटर जैसे चींटियां, वृक्ष जैसे तुलसी के छोटे बिरवे। ७० लाख आदमियों की बस्ती लन्दन थोड़ीसी दूर में दीखने लगी। उस मशीन का इञ्जीनियर बहुत भला था। बादशाह का बर्किंघम नामी महल बताया जो बड़ा सुन्दर दिखा, लेकिन दिखता था इतना ही छोटा जैसे रामनिवास बाग़ के बैंड बाजे का घेर। बड़े २ पार्क छोटी २ सी क्यारियां, तालाब जैसे रास्तों के अन्दर पानी की कूंडियां या खेलियां, सड़क एक बारीक लकीर सी और बड़े २ जहाज़ जैसे थूंणियां, लेकिन लन्दन सच्चा आज ही देखा चारों कोनों में बड़े २ बाग़ और इमारतों का तो कहना ही क्या! बड़ा आनन्द आया।

ता० ६ की शाम को सर शादीलालजी की डिनर पार्टी है और वे मुझको रोकने का बड़ा आग्रह कर रहे हैं, इसलिये मैं

रुकता हूं एक दिन की वात है, सब से मिलना भी हो जावेगा और वे भी खुश रहेंगे। आज का दिन यहां के मित्रों की विदाई की पत्रियां लिखने पढ़ने में लग गया, कई एम. पीज़. से और कई अन्य महानुभावों से जान पहचान हुई है। कई ने मेरी जान पहिचान को लाभकारी समझा है और कई ने मान दिया है। मुझ में तो कोई ऐसी वात नहीं दिखती यह उनही की गुणग्राहकता तथा कृपा का फल है। सब हिसाब किताब निपटा कर सब का बिल चुका कर सायंकाल को ६ बजे बादशाह के बकिंघम महल की तरफ़ रवाना हुआ। वहां से ८ बजे डिनर पार्टी में गया, सब मित्रों से वहां ही आज्ञा ली और सर शादीलालजी से क्षमा मांगी कि मैं इस समय जा रहा हूँ इसलिये खाने में शरीक नहीं हो सकता, वहां से आकर कुछ फलाहार करके कन्टीनेन्ट पर जाने को रवाना हुआ, कई मित्र पहुँचाने आये उनमें मि० स्केलटैन साहब, जिनका साथ बम्बई से ही हो गया था, भी थे। मिस्टर गोड, क्योंकि मेरे साथ रहा था और मेरे देश का बालक है, मेरी जुदाई पर बड़ा उदास हुआ।

सप्तम अध्याय

मध्य यूरुप

ब्रुसल्स (बेलज़ियम) ५ बजे
ता० १०-८-३२

चिरंजीविनि कमले ! आशी:

मैं परसों रात को विदा हो, कल सवेरे यहां आ पहुँचा। कुछ रेल में, कुछ जहाज़ में आया, आदमी भले ही मिले। पहिले ही पहिल आस्टेंड बेलज़ियम का छोटासा शहर आया। ७ बजे बेलज़ियम स्टेशन पर पहुंचा। क्लोक-रूम में सामान रक्खा इतने में अमेरिकन एक्सप्रेस (American Express) कम्पनी का आदमी मिल गया उस बिचारे ने सब प्रबन्ध आराम से दूध फलाहार वगैरह का कर दिया। साथ में १)रु० के पाव के हिसाब से मगद के लड्डू व मठरी लन्दन से बना कर ऽ५ रख लिये थे इसलिये खाने पीने की योजना करने से निश्चिन्त था तथापि उस कम्पनी के भले आदमी ने अपना टिकट और चिट्ठी देकर एक बस गाड़ी में मुझको बैठा दिया और मैं ड्यूक्यूरोइर (Ducuroir) कारखाने में गया जहां लकड़ी के काट छांट रँदाई वगैरह के सब औज़ार बनते हैं। भारतवर्ष के लिये ये बहुत ही उपयोगी वस्तुएं हैं, सब की क़ीमत व सब की तस्वीरें लीं जो अब मेरे पास मौजूद हैं। इन मशीनों के ज़रिये एक खाती ५० खातियों के बराबर काम कर सकता है।

वहां से लौट कर स्टेशन पर जाकर हाथ मुंह धोकर हजामत,

जो प्रति दिन करनी पड़ती है, करके बाहर निकला कि देर हो गई लेकिन उसही भले आदमी ने फिर संभाला, मोटर लेकर मुझ को पार्टी के साथ बैठाया और शहर ब्रुसेल्स (Brussels) देखने को रवाना हुए। बड़ा प्राचीन शहर है, कई राजाओं और राज्यों के नीचे रहा है, बड़ी २ इमारतें हैं जिन पर सोने का काम बहुत हुआ है, गिरजाघर भी कई बड़े २ हैं, ४२ बाग़ हैं, सात लाख आदमियों की बस्ती है और कई तरह की कारीगरी के लिये प्रसिद्ध है। न्यायालय, राजप्रासाद, चित्रालय सब ही अच्छे हैं और व्यापार भी ठीक है, घोड़े सुन्दर अपने यहां केसे हैं। ३॥ घण्टे में खूब घूम कर शहर देखा और कई हत्याकाण्ड के दृश्य जहां स्वदेशप्रेम के कारण तरुणियों ने अपनी बलि पिछले महासंग्राम में दी है, देखे।

फिर उसी समय स्टेशन पर आकर हैंडबेग लेकर ऐन्टवर्प शहर (Antwerp) में गये। वहां घोड़ागाड़ी किराये पर ली और शहर देखा, अद्भुत सुन्दर नगर है। इमारतें खूबसूरत हैं, एक इमारत में गये जो २५ खण्ड की थी। इसको स्काई स्क्रेपर कहते हैं और यह अमेरिका की इमारतों का एक छोटासा नमूना है। ऊपर ही ऊपर एक खण्ड में, जिस पर से नगर को देखा, काफ़ी गुञ्जाइश थी, ढाई सौ, तीन सौ के लगभग कुर्सियां आ सकती हैं। नीचे के खण्ड का तो जिक्र ही क्या। अमेरिका में सब से ऊंची ऐम्पायर स्टेट बिलडिङ्ग (Empire State Building) है जो ८६ खण्ड की सुनी जाती है और १२५० फीट ऊंची है ये इमारतें नहीं किन्तु एक प्रकार के क़स्बे हैं और इनमें सब मनुष्यों की आवश्यकतायें पूरी हो जावें ऐसे सब साधन और सामान हैं। जब स्काई स्क्रेपर के ऊपर लिफ्ट से चढ़े तो नीचे आदमी ज़रा ज़रा से दिखे। सब शहर दिख गया, नदी के किनारे पर है फिर एक गोथिक गिर्जा देखा जिसकी सूली ४०० फीट के

बेलजियम का ऐन्टवर्प नगर, जो बड़ा सुन्दर है

पृष्ठ १३८
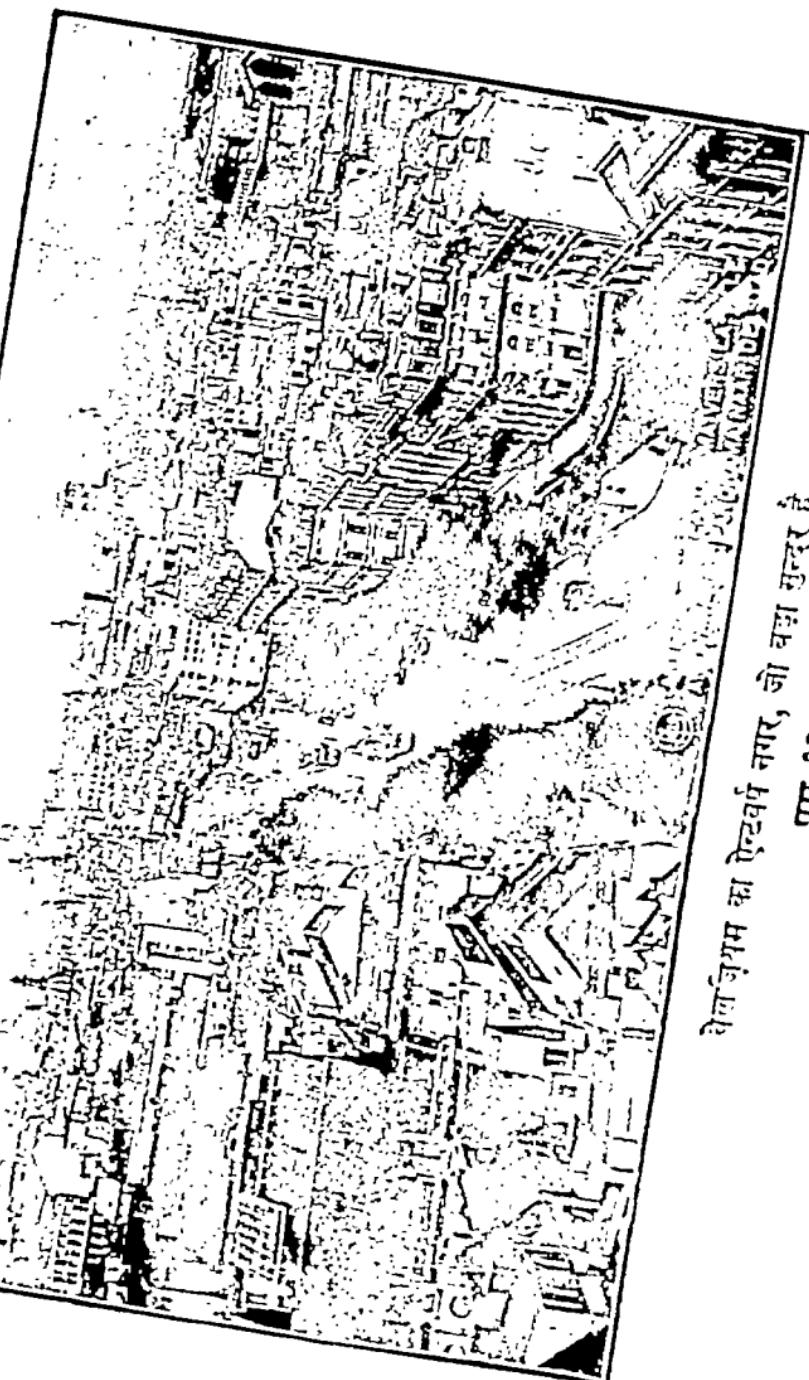
क़रीब ऊंची है, बड़ा सुन्दर है फिर टाउनहाल देखा और बैठ कर वापिस आ गये।

ब्रुसेल्स में एक भारतवर्षीय सद्गृहस्थी का मकान—

स्टेशन पर लौटते समय एक हिन्दुस्तानी मिल गये जो पोरबन्दर के हैं, गले लगा कर मिले। नाम शिवराम नन्दलाल सिन्धवाद है, जयपुर भी आये हैं; वल्लभकुली संप्रदाय के हैं और यहां व्यापार करते हैं। उन्होंने कहा कि एक रात तो ठहरो। अपने मकान पर लेगये और अपनी स्त्री से, जो जर्मन देश की है लेकिन भारतीय साड़ी और लिलाट पर हिंगलू की टीकी लगाने वाली है और हिन्दुस्तान से प्यार करने वाली है, मिलाया, जर्मन, फ्रैंच, अंग्रेज़ी में प्रवीण है, १८ वर्ष मदरसों में काम किया है। उनका लड़का नेनालाल क़रीब ६ वर्ष उम्र का है बड़ा बुद्धिमान् फुर्ती वाला है। मूँगफली आदि तिलहन का व्यापार करते हैं। तीन दिन से जयपुर जैसी गर्मी पड़ती है, कपड़े बहुत मोटे ऊनी पहिने थे, रात का जगान था, गर्मी की वजह से बहुत घबराहट थी। ये सब शाकाहारी हैं। शाक खाया और दूध पीकर खूब बातें करते रहे और जर्मनी देश की बहुतसी ऐतिहासिक घटनायें सुनाते रहे। कुछ गीता इन लोगों ने मुझ से पढ़ी। यहां के प्रधान पुरुषों का परिचय भी कराया। जयपुर से गर्मी कुछ कम नहीं पड़ती, यदि रात्रि को विश्राम इन सद्गृहस्थों के यहां न लेता तो न मालूम मेरा क्या हाल होता। मुझको इनके पास ठहरने से ग़रीब लेकिन ऊपर से उज्ज्वल धोले (सफेद पोश) यहां कैसे रहते हैं और खान पान किस चीज़ का और कैसे करते हैं सो सब ज्ञात हुआ। जो शाकाहार कल रात्रि को व्यालू के समय हम चार आदमियों ने किया वह सब अपने भारतवर्ष में ।=) आने में पर्याप्त मिल

सकता है। वटल की फलियां छिलकों समेत उबाली गईं और उस रमणी ने तो विना नमक के खाली और हमने नमक से और क्योंकि मैं महिमान था इसलिये मेरे लिये थोड़ासा ज्वार का दलिया व दूध था। पूछने पर पता लगा कि प्रतिदिन ऐसा ही आहार होता है यह क्या कठिन तपस्या नहीं है, परन्तु दुःख का विषय है ये ही रमणियां भारतवर्ष में आकर कैसे नाज़-नखरों से रहती हैं।

स्थान वर्लिन (जर्मनी)

११-८-३२

चिरंजीविनि कमले ! आशीः

तुम्हारी माताजी को सादर सप्रेम शुभ कामना

हिन्दुस्तान हाउसः—मैं इस समय वर्लिननगर जर्मनी की राजधानी में बैठा हूँ। रात के साढ़े बारह बजे हैं, २॥ घण्टे पहिले आया। बड़ा फिकर था कि कहाँ जावेंगे? कहाँ ठहरेंगे? क्योंकि रास्ते भर में १४ घण्टे का रास्ता था; पूरी तरह बोलने वाला नहीं मिला। लेकिन मेरे पास पता था मेरे रेलगाड़ी से उतरते ही १० या १५ जर्मनी के आदमी मेरे साथ होलिये। सावधानी से पूछने पर एक आदमी ने कहा कि आपको मैं आपके पते पर ले चलूंगा। कुली को पैसे दिये और किराये वग्गी करके उस आदमी को बैठाकर साथ लाया। अन्दर घुसा तो इस संस्था के गुप्ता वाबू ने पूछा आपको लेने के लिये चार मित्र पेशवाई के लिये गये हैं, आप अकेले कैसे आए। स्नान ध्यान किया कि इतने में जो आदमी स्टेशन पर गये थे उन्होंने कहा कि साहब सब गाड़ी तलाश की आप किधर होकर आगये। लंदन के मित्रों ने पहिले से सब बन्दोवस्त कर दिया था। वहुत अच्छे महल में जिससे अच्छे में मैं आज

तक नहीं ठहरा था, ठहर गया हूं। जो लेने गये थे उनमें दो तो मारवाड़ी अग्रवाल थे और एक बंगाली तथा एक गुजराती था। दाल-भात, पांच साग जीमकर गाना वन्देमातरम् बाजे के साथ सुनकर अब यह पत्र लिख रहा हूँ।

ब्रुसेल्स से बर्लिनः—आज कल से गर्मी कम रही। रास्ते में अंगूर, मठड़ी, लड्डू खाये दूध पिया और सेब खाये। ब्रुसेल्स से रवाना हुआ तब से क़रीब १५० मील तक तो कारख़ाने से कारख़ाना लगे हुए देखे। चिमनियां ऐसी मालूम होती थीं जैसे कोई थम्बे। मैंने कभी ख़याल भी नहीं किया था कि इतने ज़ियादा कारख़ाने हैं कदाचित हिन्दुस्तान के कुल कारख़ाने भी इतने हिस्से ज़मीन के कारख़ानों से भी कम हैं। इसके पश्चात् कारख़ाने कम और खेती ज़ियादा देखी। खेत लम्बाई में अधिक और चौड़ाई में कम होते हैं, कृषक मज़बूत और अच्छे परिश्रमी, ज़मीन को खूब अच्छी तैयार करने वाले होते हैं। हिन्दुस्तान के कृषकों से यहाँ के कृषक ज्यादा परिश्रमी और चतुर दीखे। घास का बहुत संचय करते हैं। कृषकों के मकान साफ़ सुथरे और बड़े आदमियों के बंगले जैसे हिन्दुस्तान में होते हैं वैसे देखे। मर्द औरत सुडौल, स्त्रियें सुन्दर व फुर्तीली हैं। जर्मनी के सिवाय दूसरी भाषा कम जानते हैं। रेल में मुसाफिर सामान साथ में कम रखते हैं। हर स्टेशन पर खोंमचा मिलता था जो जी चाहे लो लेकिन यहाँ के आदमी ढोंगी नहीं, सादे से सादा खाते पीते हैं। फलाहार के खोंमचे और दूध सब जगह पाया।

ता० १२-८-३२

चि० कमले ! आनन्द में रहो।

बेलजियम और जयपुर:—प्रभात हुआ, कलेवा कर लिया। तैयार हूं, १०॥ बज गये साथी की इन्तज़ारी कर रहा हूँ, आता होगा। जगतभानुजी कह गये थे कि ११ बजे तक आऊंगा। यहां भी कोई आदमी ११ बजे के पहिले नहीं निपट सकता। रात को १२ बजे से पहिले सोते भी नहीं हैं। बेलज़ियम के कुछ दफ़्तरों में दिन के १ बजे तक ही काम करते हैं लेकिन शुरू ७ बजे कर देते हैं। बेलज़ियम राज्य, जयपुर राज्य से रक़बे में बराबर और आबादी में छोटा है। लेकिन स्वतन्त्र होने से ऐसी चंचलता है कि हिन्दुस्तान के किसी नगर में भी नहीं और यूरुप के भी कम नगरों में है। जर्मनी देश की कृपिकाएं मज़बूत मालूम पड़ती हैं। अपने मर्दों के साथ २ घास काटतीं व खेती के सब काम करती हैं। घोड़ों को खेती के काम में खूब लेते हैं, ४ बैलों के बराबर एक घोड़ा काम करता है। पशुपालन भी यहां अच्छा है। गायें घोड़े सब ही अच्छे दिखते हैं, सफ़ेद बकरे भी देखे।

स्थान बर्लिन हिन्दुस्तान हाउस, देश जर्मनी

ता० १२-८-३२

बर्लिन:—यहां पर बहुतसे अमेरिका, इङ्गलैण्ड, जापान व आस्ट्रेलिया से यात्री आते हैं उनके साथ मोटर में बैठ कर ११ बजे के क़रीब रवाना हुए। कोई पांच दस मील तो बाज़ारों

में घूमे। बाज़ार में ही एक सुन्दर चौराहे पर फोटो वाले ने सब यात्रियों की तस्वीर ली। फिर एक नदी आई, बाज़ार लन्दन के बाज़ारों से अधिक सुन्दर हैं। कई सड़कों में दो तरफ़ पेड़ हैं, उससे ज्यादा चौड़ी सड़कों में बीच में मीलों तक दूब और फूलों की क्यारियां हैं। यहां कुछ ऐसे कोमल लकड़ी व त्वचा के पेड़ हैं कि जैसा चाहें उसी शकल के काट कर बना लेते हैं किसी को छत्ते की शकल का, किसी को सिरू की शकल का, किसी को घुंडी की शकल का, किसी को मुट्ठे की शकल का इत्यादि।

मकानों में खिड़की व झरोखे तो सब ही रखते हैं। लेकिन यहां झरोकों को तरह २ की बाहर की शकल दी है और भारतवर्ष में कई राजाओं के मकान ऐसे नहीं हो सकते जैसे यहां आम लोगों के हैं। कहीं दूसरी छत पर ताज, कहीं कोनों में छतरी, कहीं महराबदार झरोखा और बड़े कांच व दर्पण तो सब ही लगाते हैं। यह यूरुप का तीसरा बड़ा शहर है जन-संख्या ३८ लाख है।

बर्लिन की नदी की सैरः—फिर यहां की नदी स्प्री(R.Spree)पर पहुँचे तो किश्ती में बैठे। सब खाने की मेज पर बैठे मुझको भी लेजाकर खाने की मेज पर बैठाया। घृणा आ गई उठ कर अलग जा कर बैठ गया और दो आड़ू खाये, आड़ू यहां बहुत बड़े होते हैं। कल लिखना भूल गये कि रेल में किनारे २ पर प्रत्येक खेत में आड़ू और सेब के पेड़ देखे, सौंफ भी बोई हुई थी। नदी को इन उद्योगी जर्मनियों ने इस तरह से काटी है और शायद क़ुदरती भी ऐसी ही होगी कि कहीं तीन धारा और कहीं झील के आकार में, कहीं खूब चौड़ी जैसे समुद्र का किनारा। हज़ारों छोटी २ दो २ चार २ आदमियों की किश्तियां थीं। हज़ारों आदमी किनारे पर पड़े थे, हज़ारों नग्न स्त्री, पुरुष पानी में किलोलें कर रहे थे। नदी में ही

वैठे २ दो घण्टे वीत गये। कई औरतें कोसों की शर्त लगा कर तैर रही थीं। कई छोटी २ भाफ से चलने वाली नावों को चला रही थीं मानों नागकन्यायें जो सुना करते थे इसी नदी में रहती हैं। दोनों तरफ़ वड़े सुन्दर वृक्ष, कहीं वालूरेत का किनारा, कहीं घाट और कहीं पानी में कूदने के लिये झूले वने हुए थे।

पोस्टडेम (Postdam)—नाम नगर में गये। इस नगरी में क़रीव एक लाख आदमी रहते हैं, वड़ी सुन्दर है। जर्मनी में एक रिवाज़ और देखा कि अपने झरोखों और खिड़कियों में फुलवाड़ी के घमले लगाकर रखते हैं। लाल गुलाव को ज़्यादा लगाते हैं। पहिले तो यहां के राजा फ्रेडेरिक के महलों को दिखलाया, यहाँ महलों में जूते पहन कर कोई नहीं जा सकता। घुसने के साथ २ ऊन के वहुत वड़े २ स्लीपर होते हैं उनको सव को पहनना पड़ता है। कोई २ स्लीपर वड़े वज़नी और वड़े भारी थे, पहन कर चलने में किसी २ महिला को वड़ी तकलीफ़ होती थी। इन महलों में विचित्र वात कुछ नहीं देखी, अनुभव से ३०० वर्ष के पुराने थे। सव देखने वालों से १) रु० फ़ीस ले लेते हैं। वाग़ फव्वारे खूव थे। ढाल में सुन्दर दूव लगी हुई थी। यहां यूरोप के सव राजाओं को नग्न स्त्री और नग्न पुरुष की मूर्तियां रखने का वहुत शौक है। सव जगह कद्दे आदम की मूर्तियां व तस्वीरें देखीं। कई अपने नंगपन को दर्पन में निरखते हुए की तस्वीरें भी वहुतायत से थीं, ऐसी तस्वीरें भी थीं जो कामोत्तेजक थीं कि जिनका रखना भारतवर्ष में एक जुर्म है। वेलज़ियम में आम चौराहे पर वाज़ार में एक पानी की टूंटी (नल) देखी जिस पर एक लड़के की मूर्ति थी और पानी जननेन्द्रिय के ज़रिये से निकलता था और वहां के मनुष्य वड़े चाव से उसमें से पानी पीते थे वाग़ की सीढ़ियों
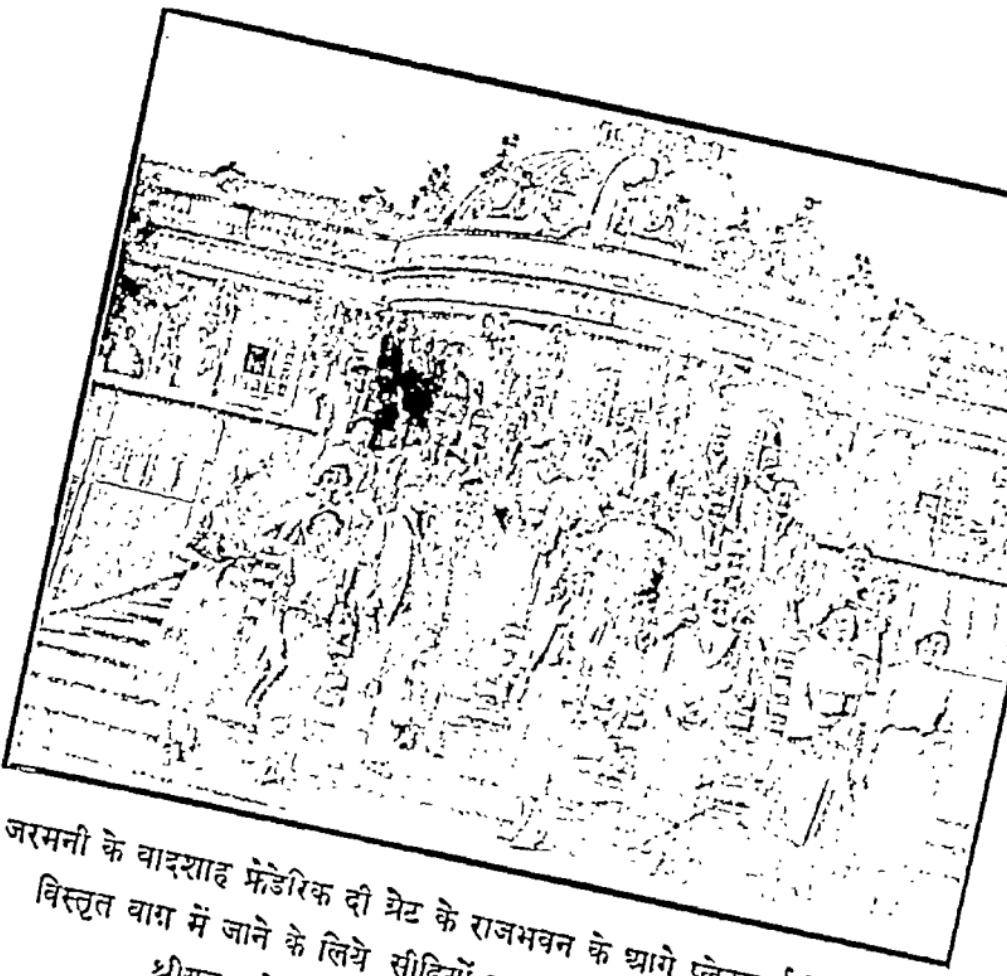
जरमनी के बादशाह फ्रेडरिक दी ग्रेट के राजभवन के आगे प्लेटफार्म से आगे के विस्तृत बाग में जाने के लिये सीढ़ियों पर साथी यात्रियों सहित ग्रंथकार श्रीयुत गणेशनारायणजी सोमानी का ग्रूप फोटो

पृष्ठ १८८

पर नीचे उतरते वक्त फोटोग्राफर ने फोटो उतारा। साथी यात्री तस्वीर उतरते समय मुझको बीच में ले लिया करते हैं और बहुत प्रेम व इज्ज़त से बातें करते चलते हैं। कोई तो सेवा करने के लिये इतना उत्सुक होता है कि मेरे लिये स्लीपर भी लाकर रक्खे और पहनाये, तीन चार बार सलाम करते थे। मैं अपने सफरी लिबास में काटराई की ब्रीचेज व काला ऊनी कोट पहनता हूं। मेरी छड़ी पर सब लट्टू होते हैं एक तो उसमें स्टील पर चांदी के धागे बैठा कर फूल पत्ती निकाले हुए हैं, दूसरे उस में तलवार और बर्छी हैं। यह मेरी यात्रा भर में प्रदर्शिनी की चीज़ हो गई।

इस समय के ग्रूप की तस्वीर ५० या १०० कापी थीं जो उसी वक्त हाथों हाथ बिक गईं और आज और आर्डर दिया है। फिर एक बाग़ देखा जिसका नाम बहिश्त था। गाइड बड़ा नेक आदमी था और कई स्थान दिखाता हुआ जलपान के लिये ले गया। नारंगी का शर्बत मैंने भी पिया, यहां पर लन्दन की तरह पानी का काल नहीं है। यहां इन देशों में रोटी खाकर हाथ नहीं धोते तथा कोई और चीज़ भी खा कर हाथ नहीं धोते न कुरला करते हैं यहां रूमाल काग़ज़ के देते हैं उनसे पोंछलो और न यहां वालों को हाथ धोने की आवश्यकता ही होती है, क्योंकि छुरी कांटे से खाते हैं लेकिन मेरी आदत इनसे विपरीत है; यहां सब जगह टूंटियां मिल जाने से कोई अड़चन नहीं होती है। इन देशों के आदमियों के दांत, खास कर औरतों के, मैले रहते हैं, क्योंकि कुरले करना जानते ही नहीं।

फिर गाइड कैसर बादशाह के महलों में ले गया। यह मालूम रहे कि जो यूरोप में बड़ी भारी लड़ाई हुई थी उसमें जर्मनी ही सब में बड़ी शक्ति थी और क़ैसर विलियम उसका छत्रपति राजा था।

महल में घुसते ही बैठने का भवन देखा तो दीवार में हर जगह सीमेंट में कहीं कच्चे हीरे, कहीं क़ीमती नग, कहीं सीपी, कहीं नीलम, बिल्लोर जड़े हुए थे ऐसा कोई प्रकार का रत्न न था जो इस भवन की दीवारों में न हो इस तर्ज़ का कमरा और कहीं नहीं देखा। आगे बढ़े तो कहीं लकड़ी, कहीं सीपी, कहीं सोना, कहीं चांदी का अति सुन्दर काम था। कोई ४०,५० कमरे थे, न किसी की छत और न किसी का आँगन एक दूसरे से मिलान खाता था। इतनी तरह की बनावट व सजावट थी। बहुत सुन्दर थे, काट छांट भी बहुत बन्दा और तस्वीरें सब अपने ढङ्ग की निराली लेकिन सब कामोद्दीपक थीं। अपने राजाओं के महलात से ज्यादा बड़ी इमारतें न थीं और अपने राजाओं के ठाठ से अधिक ठाठ भी न था। एक भाव प्रबल उत्पन्न हुआ कि मरने पर तो सब ही छोड़ कर जाते हैं लेकिन उस समय का दृश्य ख़याल करो कि एक ही दिन में क़ैसर विलियम इन महलात में किसी समय हैं और किसी समय रणक्षेत्र में। कहीं लाखों आदमियों को मरवाता है, कहीं राजाओं को भगाता है और कहीं क़िलों को तुड़वा देता है। उस दृश्य और समय को भी विचारो कि एक रात्रि को रणक्षेत्र से विश्राम लेने आता है और प्रजा के दो मुखिया आ कर कहते हैं कि आप गद्दी छोड़ भागिये, प्रजा आपसे अप्रसन्न है, क्योंकि लड़ाई में करोड़ों आदमी मर गये हैं और कोई लाभ दिखता नहीं, अतः बादशाह रातोंरात भाग कर कहीं शरण लेता है। अब भी यह बादशाह जिन्दा है और हालैण्ड देश में एक मामूली गृहस्थ की तरह रहता है। देखो भाग्य की विचित्र गति और फिर याद करो उस पंक्ति को—

'स्त्रीचरित्रं पुरुषस्य भाग्यं न जानाति देवो कुतो मनुष्यः'।

क़ैसर विलियम जैसा शूरवीर, रणधीर सुना नहीं, अक्ल का पुतला और प्रजा का मानेता और क्या एक क्षण में परिणाम निकला। कहो ग़रीब गृहस्थी एक रस रहने वाला अच्छा या राजा? और देखो प्रजा की सत्ता! राजाओं को कविश्रेष्ठ कालिदास ने कैसा उत्तम उपदेश दिया है कि "राजा प्रकृति रञ्जनात्"।

बर्लिन—स्वच्छन्दता और भयंकर भूखः—वहां से चल कर उसी पार्टी के साथ बाज़ार देखा साथी तो उतरते गये, मैं क्योंकि देखना चाहता था इसलिये बैठा रहा। पैरिस की तरह यह शहर भी एक बड़ी बस्ती है। शाम हुई और रोशनी हुई, बस पैरिस की तरह, जिसका हाल पहिले लिख चुका हूं, रोशनी और रोशनी के ज़रिये नोटिसबाज़ी में करोड़ों रुपया ख़र्च होता है। पैरिस में तो व्यभिचार के लिये कोई सज़ा ही नहीं, लेकिन यह भी व्यभिचार का केन्द्र ही दिखा। लड़ाई के बाद हज़ारों रांडें होगईं, लाखों ने पेशा व्यभिचार से जीवन इख़्तियार किया, लाखों के फिर गैब से लड़के लड़कियाँ हुईं। लड़के कुछ बड़े होने पर फौज़ में भरती कर दिये जाते हैं, लड़कियां १३ वर्ष से व्यभिचार कमाने में लगती हैं। अब इन देशों के शहरों में व्यभिचार इतना बढ़ गया है कि लड़कियां व्यभिचार से पेट भरने के लिये रात भर घूमती रहती हैं। व्यभिचार के नतीजे क्या होते हैं? अनेक व्याधियों से सड़ती हैं। छोटी, शक्तिहीन, हर समय कांच, रंग और कंघा बटुये में लिये हुये नक़ली जवानी बनाये हुये रखती हैं। ज़रा पाउडर का रंग उड़ा कि झट कांच में मुंह देखकर होट लाल, चेहरा गुलाबी, गाल गदरा गुलाबी और भवाँरे पतले काले करके हाव भाव दिखा के चक्कर लगाती रहती हैं। तब भी खाने लायक किसी २ को नहीं मिलता है।

इधर अपने देश स्वामी दयानन्द व महात्मा गांधी से जग गये और होशियार होरहे हैं। इनकी चीज़ों को खरीदते नहीं। यहाँ बड़े २ कारखाने बन्द होरहे हैं, मैंने चाहा कि यहाँ के कारखाने देखूं लेकिन पता चला कि चार दिन बन्द तो दो दिन चालू, एक दिन कभी बन्द, कभी चालू, नहीं देख सकता। अब बुधवार को खुलेंगे, खाने को रोज़ चाहिये कहां से आवे। ग़रीब होकर जिस चीज़ का रुपया बटता था ।।) में ही बेचने लग गये। लेकिन अपन लोग पूर्वीय हिन्दुस्तानी, चीनी, जापानी, अपने आप चीज़ें बनाकर उद्योग स्वावलम्बी होकर रहने का करने लगे हैं। भयङ्कर भूख उन देशों में घुसी हुई है और मेरा अन्दाज़ा है कि थोड़े दिनों में आपस में फूट के कारण कमज़ोर हो जावेंगे और सदाचारी तथा मितव्ययी जनता के देश उन्नत होकर इन देशों में अधिकार जमावेंगे। यह स्थिति अवश्य पचास या सौ वर्ष में हो जावेगी और जहांतक मैंने इतिहास पढ़ा है जैसा जीवन इनका भोगमय है उसका परिणाम यही सब देशों में हुआ और यहां भी हुये बिना नहीं रह सकता है। भारतवासी ज्यादा नहीं गिरे उसका कारण यही है कि ज्यादा बिगड़े नहीं और धर्म पर थोड़ा बहुत विश्वास बना रहा है। दूसरा हाल यहाँ के बिगड़ने का और सुनो कि क़रीब ४० लाख आदमियों की तो बस्ती और इनमें चूल्हा जला रोटी बना कर खाने वाले शायद अपनी तरह चालीस हज़ार भी न निकलें। सब ११ बजे से पहिले तो उठही नहीं सकते और शाम के पांच ५ बजे से सबेरे के ३ बजे तक गार्हस्थ्य धर्म्म के विरुद्ध बाज़ारों में फिरते हैं। हज़ारों होटल, हज़ारों भोजनालय, हज़ारों शराब की दूकानें हैं। यहां के निवासियों के लिये यह भी एक आवश्यकीय अङ्ग होगया है कि शाम को दूकानों पर बैठना, वहां चाह, शराब और भोग विलास की चीज़ों को खाना पीना और कम से कम ३ घण्टे तक

बैठना। मर्द औरतों को और औरतें मर्दों को ताकना, पहिले की इशारेबाज़ी से निश्चित की हुई जगह पर ही पहुँचना। ६० वर्ष का रंडुआ तो १५ वर्ष की रांड तक भी बेमेल जोड़ा हमने देखा।

तीज गनगौर का मेला जैसा गनगोरी बाज़ार जयपुर में होता है वैसी ही भीड़ यहां शाम के पाँच बजे से लगाकर रात्रि के १ बजे तक रहती है। आधी सड़क पर कुर्सियां लगाकर बैठना, मेज़ें सामने रक्खी हुईं और गिलास मुंह पर चढ़ा हुआ, भला कब तक यह देश ठहर सकते हैं। अफ़सोस इतना ही है कि भारतवर्ष से जो लड़के विद्योपार्जन के लिये यहां आते हैं उनमें से कुछ तो यहां इन पिशाचियों के फन्दे में फंसकर बिगड़ जाते हैं और कुछ पास एवं प्रमाणपत्र लेकर चले जाते हैं। सच्ची यथार्थ विद्या, जो इनके पास है और जिसमें यहां के मनुष्य इस समय चढ़े बढ़े हैं, सीखते नहीं वर्ना सीख जावें तो थोड़े वर्षों में स्वराज ही नहीं यह सब देश भी मातहती में आसकते हैं।

ता० १४-८-३२.

चिरंजीविनि ! आनन्द में रहो,

तुम्हारी माताजी को शुभ संवाद।

बर्लिननगर की सैर—आज अभी नौ बजे जाने का था, लेकिन यहां ही रहूंगा। कारण बर्लिन पूरा न देख पाया। आज रविवार है बाज़ार भी सब बन्द, इसलिये खानगी तौर पर तै किया कि किसी के ज़रिये यहां के दो चार विद्वानों से मिललूं। कल हम डटकर दुगना कलेवा करके उसी खरीदे हुये टिकट के

ज़रिये मोटर में बैठे हुये बाज़ारों में घूमे। १॥ बज गया। फिर बाज़ार में लोहियाजी को लेकर गये। पहिले तो राजधानी के राजप्रासाद देखे जो साधारण हैं, विशेष बात न देखी, अपने यहां के चोमू, सामोद, सीकर, खेतड़ी, कुचामन वग़ैरह के महलों से थोड़ी ही विशेषता लिये हुये हैं। फिर यूनीवर्सिटी देखी, १७००० विद्यार्थी पढ़ते हैं, इस समय छुट्टियाँ हैं। संस्कृतज्ञ पंडितों की तलाश में गये, क्योंकि भारतवर्ष में सुना था कि यहाँ संस्कृत के बड़े विद्वान् रहते हैं सो चिरंजीविनि! बिलकुल गप्प है कोई विद्वान् नहीं मिला। दो तीन प्रोफ़ेसर हैं जो संस्कृत जानते हैं, बोलना उनके लिये भी मुश्किल है। वे भी छुट्टियों में बर्लिन से बाहर गये हैं, वहां से एक दुकान में गये तो क्या देखा कि जैसे अपने यहां किसी बड़े नगर में प्रदर्शिनी होती है वैसी २० प्रदर्शिनियां उस दुकान में हो जावें इतनी बड़ी दुकान ८ या १० खण्ड की थी। कपड़ा सस्ता था और सब चीज़ें बम्बई के भाव से मिलती थीं।

सेनेटेरियमः—इसके पश्चात् ब्यालू करके ६ बजे के क़रीब एक स्थान में पहुंचे। जयपुर के ज्योतिषी और ज्योतिष यन्त्रालय बहुत याद आये। टिकट ख़रीद कर अन्दर गये। इधर उधर तस्वीरें देखीं, थोड़ी देर में सब रोशनी बन्द करदी गई, कुर्सी पर बैठाये गये तो देखते क्या हैं कि जिस बन्द कमरे में बैठे थे वह बिलकुल गायब है और ऊपर गगन-मण्डल दृष्टि आ रहा है। पहिले तो सूर्य की गति दिखलाई गई, फिर सब नक्षत्रों की, वर्ष भर में कैसे कहां और किस चक्र में घूमते हैं। आकाश गङ्गा, नवग्रह मात्र तारों की गति स्थिति, सूर्य और पृथ्वी का सम्बन्ध दिखलाया। जर्मनी भाषा में सब बोलते थे। दिखलाने वाला बड़ा

विद्वान् आदमी था, लेकिन जर्मन भाषा का विद्वान् था। व्याख्या पूरी करता था लेकिन क्या कहता था सो राम जाने।

इसके बाद दक्षिणी ध्रुव की यात्रा की तस्वीरें दिखलाई गईं, चिरंजीविनि ! यह लोग कैसे उद्योगी होते हैं। बर्फ़ में जहाज़ गड़ जाते हैं चलते २ आदमी गड़ जाते हैं फिर भी वहां पहुँचे। ज़रासा सूर्य का चिलका मिनट दो मिनट के लिये होता है वरना २४ घण्टे रात रहती है, कुत्तों की गाड़ियों में बर्फ़ के ऊपर चलते हैं समुद्र का पानी जम जाता है ऊपर बर्फ़ नीचे पानी अद्भुत लीला देखी ! इस दक्षिणी ध्रुव की धरती पर एक प्रकार के पक्षी भी दिखाये गये, उन की हरकतें भी दिखलाई गईं, मुंह, चोंच व पीठ काली और छाती बिलकुल रुई के मुवाफिक सफ़ेद। आदमियों की तरह २ टांगों से चलते थे और उनकी छाती के आगे का सफ़ेद पल्लाभार ऐसा मालूम पड़ता था मानो सफ़ेद रुई का गुदगुदा कोट है। एकाध दिन और ठहरने की इच्छा है कि विद्वानों से मिलें और उनके व्याख्यान श्रवण कर लाभ उठावें। दो एक को बुलाया है, मिलने पर कल सब हाल लिखेंगे।

(बर्लिन) १५-८-३२

चिरंजीविनि कमले !

बर्लिन का ज़ूः—मैं आनन्द में हूँ, कल रविवार के कारण नहीं गया, यहां ही रहा। सवेरे तो ज़ू (Zoo) देखने गया। नई बात कुछ नहीं देखी सिवाय इसके कि भारतीय नाहर और

केसरी मृगेन्द्र दोनों का जोड़ा वनाकर एक तीसरा ही जानवर पैदा किया है और इसी तरह घोड़े को जीवरे से मिला कर तथा गदहे को जीवरे से मिला कर नये जानवर पैदा किये हैं। सिंह के वच्चे को गोदी में लेकर मैंने भी तस्वीर उतरवाना चाहा। यहां गर्मी वहुत पड़ती है, कल ६५ डिगरी गर्मी थी इसलिये साथ में जो नया वम्बई का सिलाया हुआ कोट ब्रीचेज़ था, उसको पहिना। ज़िन्दगी में पहिले ही दिन कालर और नेकटाई लगाना चाहा जो जंजाल सा मालूम हुआ और उतार कर फेंक दिया।

ज़ू से आकर स्नान ध्यान करके निपटा कि वेनर्जी साहव Prof. D. N. Banerjie L'itzow Ufer 29 Berlin W. 62 (Fricdrich Wilhelms Universitat Unterden Linden Berlin). जो यहां की यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर हैं, मिलने आ गये। १॥ घण्टे वातें हुईं। शाम का न्योता दिया। अपनी गृहिणी के साथ शाम को आये खूव अपने यहां की मिठाइयां वनवाईं, पकवान खाये, ११॥ वज गये। फिर एक रूस की लेडी से यहां ज्ञान पहचान हो गई उसी ने अपनी लड़की को ज़ू दिखाने को साथ भेजा था और उसके साथ ही दोपहर के वाद दूसरे जर्मन विद्वान् यूनीवर्सिटी के फिलोसोफी के प्रोफ़ेसर मिस्टर गुज़ींद (Mr. E. Guseind) के यहां गये। जर्मनी का खूव हाल जाना। सव जर्मन स्त्री पुरुषों का यह ख़याल है कि कैथेराइन मेयो ने जो पुस्तक लिखी है हिन्दू लोग उसके मुताविक़ हैं जिनकी स्त्रियां क़ैदख़ाने में रहती हैं। सव ख़यालात दूर किये और वहां पर और भी स्त्री पुरुष मिल गये थे। फिर एक जर्मन लेडी के मकान पर गये जो धनाढ्या थी, कैसे ये लोग अपने घरों में रहते हैं सो देखा। जर्मनी वर्लिन में मिसेज़ डी० एस० वरनर (Mrs. D'S. Berner

Düsseldorfer Strasse 14) ने, जो एक रशियन लेडी हैं और लड़ाई के बाद ही सोवेट रसिया के राज से दुखी होकर आ गई थी, रसिया के बहुत हाल कहे। कहती थी कि रसिया में साम्य-वाद के नाम से चन्द छाती चल्लों का राज्य है और नास्तिकता हद के दरजे फैली हुई है। इसी तरह कई महिलाओं से जर्मनी के सामाजिक व्यवहार का हाल ज्ञात हुआ।

देश जेकोस्लोवेकिया

नगर प्राग, स्थान होटल पेरिस

ता० १६-८-३२

चिरंजीविनि कमले !

बर्लिन (जर्मनी) से प्राग (जेकोस्लोवेकिया)— कल सवेरे का समय मित्रों से मिलने व कपड़े बांधने में ही गया। सफ़र का यह भी कठिन काम है और ख़ास कर जब कि गर्मी से सर्दी और सर्दी से गर्मी हो। लंदन से खूब गर्म कपड़ों में रवाना हुये, ब्रुसेल्स में गर्मी से घबरा गये। दो दिन सब मनुष्यों को गर्म कपड़े पहिने देखकर गर्म कोट ही पहना। जब बर्दाश्त न हुआ तब ठंढे कपड़े निकाले; और सोने के दूसरे पाखाने के दूसरे। मेरी आदत और तरह की थी। यहां वालों के मुताबिक़ न रहना, बस पूछो मत, बड़ी दिक़त का सामना करना पड़ता है। प्राग के लिये १-४० पर रवाना हुए। आदमी साथ लेना तो अपने से तिगुना खर्च बांधना है और फिर असेंधा आदमी सब सामान ही लेकर भाग जावे तो क्या किया जावे। बस अकेले सफ़र

करना अच्छा होता है और मुसाफ़िरी में मीठा बोलना, ज़रा खातिर कर देना, यहां के आदमियों में यही अच्छा है। रेल में थोड़ी २ अंग्रेज़ी बोलने वाले मिल जाते हैं, काम चल जाता है। जगह २ भाषा अलग, राज अलग, रुपया सिक्का अलग, राहधारी अलग। भिन्न २ राज होने से चलती रेल में सम्भाला करते हैं। दूसरे राजकी कांकड़ आई कि सिक्का बदलना पड़ता है, ज़रासा भी बचा हुआ सिक्का सिवाय फेंकने के कुछ काम में नहीं आता, रास्ते में जर्मन राज्य की सीमा में चार घंटे तक रहे। अब यह राज्य आगया। बोली यहां की भी जर्मनी है लेकिन सिक्का दूसरा है। जर्मन राज्य के ड्रेस्डेन व लीपज़िग दो बड़े शहर बीच में पड़े। जर्मनी के बाद यह राज्य आते ही रेल एक नदी के किनारे २ चली। नदी के किनारे एक तरफ़ पहाड़ दूसरी तरफ़ रेल और रेल के दूसरे किनारे खेत। यहां भी खेती घोड़ों से होती है। हिन्दुस्तान की तरह गर्मी ज़ियादा होने से खेती करने वाले किसानों को नंगे केवल छोटे काछिये पहने ही देखा। किनारे भर मर्द छोटासा काछिया लगाये, लुगाइयां छोटासा घाघरिया या कमीज पहने, बच्चे बिलकुल नंगे नदी में हज़ारों की तादाद में थे। जर्मनी जितनी ग़रीबी तो नहीं है लेकिन ग़रीबी है ही। अब भी सोडावाटर पीते हैं जिसके एक गिलास के पांच आने छै आने लगते हैं। यहां काग़ज़ ऐसा निकाला है जिसमें दूध, पानी, शराब घण्टों रहता है और काग़ज़ के दूनों में ही चीज़ें रखकर बेचते हैं, ८ बजे यहां पहुंचे। आलू मटर टमेटर का साग और पूड़ी बनवा कर खाई और फिर दूध पीकर सोगये। सूर्य तेज़ है, पांच बजे उग जाता है। सुना है कि इंगलैण्ड में कभी ओले नहीं पड़ते हैं, लेकिन अखबार में पढ़ा कि परसों वहां भी पड़े। आज सलोना अर्थात् रक्षाबन्धन है। भगवान् से प्रार्थना करता हूं अपन सब की रक्षा करें। प्रिय भारत को

बचावें और मेरे प्रिय देश को दुष्टों से बचावें । बच्चों के दावात क़लम के राखी बंधवाई होगी और सबको यथोचित दक्षिणा दी होगी। कल कानपुर की एक चिट्ठी कन्हैयालालजी के लड़के जगतभानु के पास आई जिससे तिथियों का पता चल गया।

चिरंजीविनि ! आनन्द करो।

प्राग (Prague) देश जैकोस्लोवेकिया—९॥ बजे सैर के लिये शराबकां में गये थे, अब एक बजे आये । पहिले तो बाज़ार देखा जिसका नक़शा तुमको दिखलावेंगे । बड़े सुन्दर बाज़ार हैं, इमारतें बड़ी सुन्दर हैं और तरह २ की हैं। लंदन से यहां की इमारतें सुन्दर हैं। यहां गिर्जे भी बहुत ज़ियादा हैं और हरएक इमारत के साथ एक गिर्जा लगा है । जैसे अपने यहां तीन चौपड़ हैं उसी तरह यहां ४२ चौपड़ हैं और रास्ते ज़ियादा चौड़े नहीं हैं। कोई २ जो पुराने हैं उतने ही सकड़े हैं जैसे अपने यहां के बनारस, अजमेर वग़ैरह शहरों में। जयपुर की वजह कतै, काट छांट, सौन्दर्य्य को तो एक नहीं पाता, शायद मातृ-भूमि के प्रेमवश मेरी दृष्टि में फ़र्क़ है, परन्तु इमारतों की खूब-सूरती इस शहर की बढ़कर है।

पहिले ही पहिल एक चौपड़ में गये जो चारों तरफ़ बड़ी इमारतों से घिरी हुई थी, परन्तु चौक बहुत बड़ा था। उस चौक के एक तरफ़ एक विशाल इमारत थी। दक्षिण की तरफ़ अन्दर गये, एक विशाल भवन किसी राजा के वक्त का बना हुआ स्थान है। अब म्यूनीसिपल बोर्ड के काम में आता है और सब कमरों में कुछ न कुछ म्यूनीसिपल का काम होता है फिर एक स्थान

और देखा, फिर नदी मोलडाऊ (R. Moldau) जो यहां भी शहर के बीच में है और बड़ी नदी है उसके पुल को पार किया। यह शहर क्रिश्चियन धर्म का होने से क्रिश्चियन सन्त महन्त की मूर्तियां उस पुल पर थीं, इससे उस पुल की शोभा और भी अधिक थी। इस नगर की जन-संख्या ७ लाख के लगभग है।

राजप्रासादः—फिर एक चौक में पहुंचे, किसी ने आकर फ़ोटो उतारा जिसको इसमें चीड़ते हैं। फिर क़िले में पहुँचे तो इस क़िले में, जो बहुत पुराना है और जो ऊंची पहाड़ी के टीले पर है और जिसके चारों ओर दीवार है, गये। क़िले के बाहर बड़ी विशाल इमारतें हैं। यह सब पहिले बादशाह के भाई बेटों की थीं। अब किसी में लड़ाई का दफ़्तर, किसी में मिनिष्टर तिजारत का दफ़्तर, किसी में हुनर कला का कालेज, किसी में कुछ, किसी में कुछ, पब्लिक संस्था है। घुसने के साथ तो प्रेसीडेन्ट का रिसेप्सन रूम, जो अभी बनाया गया है, कुल सुनहरी काम का और बहुत बड़ा है। पोल बहुत बड़ी और पहरे लगते हैं। पोल के सामने भी बहुत बड़ा चौक था। ऊपर गये, एक लम्बा बरांडा, जैसा पहिले मैंने कभी नहीं देखा और जिसके साथ लगे हुये कमरे थे। इस बरांडे में पांच सात हज़ार आदमी आसकते हैं। फिर महल देखा जहां प्रेसीडेन्ट बातचीत करता है, मुलाक़ात करता है, बड़ा विशाल है। दूसरा महल देखा। इतना बड़ा एकछता बिना थम्बों का यूरुप भर में कोई कमरा नहीं है। कोई पांच हज़ार कुर्सियां आजावें जिसका नाप १८० फीट लंबा व ८० फीट चौड़ा बतलाया गया। सब जगह बीच में और दोनों तरफ़ सोने के काम के झाड़ लगे हैं, पूरा प्रकाश पड़ता है और सुन्दर फर्श है। जर्मनी और इंगलैण्ड के राजाओं के महल
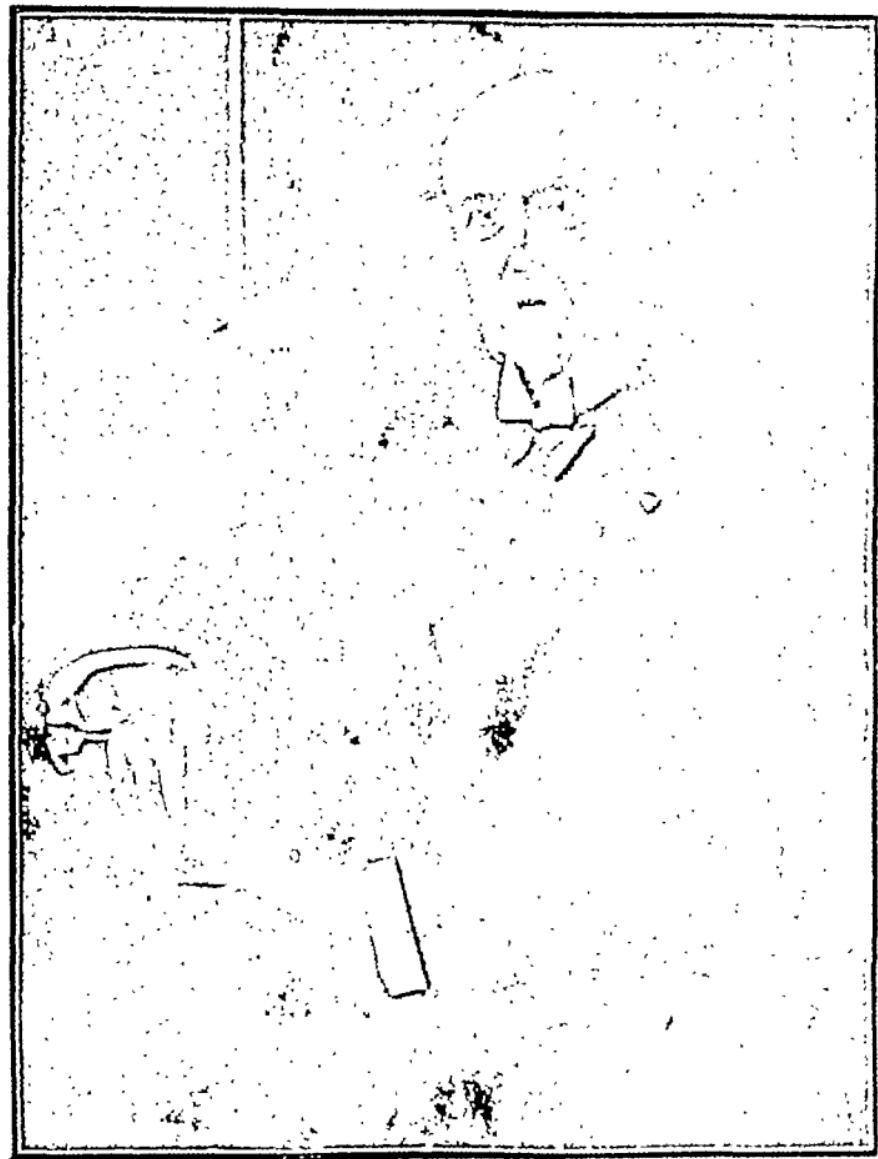
मिस्टर टॉमस गैरिक मैसेरिक, जिसने जरमनी, आस्ट्रिया, रूस आदि साम्राज्यों से ग्रसित विभिन्न प्रान्तों के पृथक् २ जाति के मनुष्यों से एक राष्ट्र जेकोस्लोवेकिया नाम का निर्माण किया

पृष्ठ १५७, १५८, १५६, १८०, १८५

इसकी मुंहदिखाई में जाते हैं, पुराना है, सफेदी प्लास्टर सिर्फ नया है। राजाओं के महल में अब प्रजा का आदमी रहता है। कविवर शेक्सपीयर ने ठीक ही कहा है कि राजा निश्चिंत नहीं रहते।

प्रजा की शक्ति का आभास—फिर भी अपने राजे महाराजे नहीं चेतते। वड़ा विचार आया कि प्रजा में क्या शक्ति होती है। पुराने राजाओं की सव चीज़ें लेली गईं जो सव प्रदर्शिनी में रक्खी गई हैं। एक राजा का भाई वेटा जयपुर भी गया था, वहां से सिलावटों के मोहल्ले की कई मूर्तियां ले आया, वे भी प्रदर्शिनी में थीं। गणेशजी महाराज भी विराजमान थे, जयपुर खूव याद आया, सव साथी यात्रियों की पार्टी से कह दिया कि यह मेरे देश की कारीगरी है और उस भाई वेटे के नहाने के कमरे को देखा तो क्या देखते हैं कि सीमेंट में कुछ ऐसे आगे निकले हुये पत्थर लगाकर वनाया गया है जैसा अवावील के घर या भौंरों के घर अपने मकानों में होते हैं। उनमें से पानी के फंवारे छूटते हैं और अजव तमाशा है। वाहर एक वड़ा ऊंचा वरांडा है, फिर साथ ही में वाहर एक गिर्जा है वड़ा लम्वा चौड़ा रोम का सा तो नहीं, फिर कई इमारतें देखीं। यहां का इतिहास विचित्र है।

जैकोस्लोवेकिया—यूरुप के सव राष्ट्रों में इस राष्ट्र और इस देश जैकोस्लोवेकिया की तरफ़ मेरा ध्यान वहुत खिंचा है। सच पूछा जाय तो यह देश और राष्ट्र केवल १४ या १५ वर्षों का ही निर्माण है। जैक्स और स्लोवेक्स ये भी दो भिन्न २ जातियां थीं जिनमें वड़ा अन्तर था, न रीति रस्म ही एक थी और न धर्म ही एक था। प्रथम तो इन दो भिन्न जातियों का संगठन किया गया। इनके संगठन से भारतवर्ष को नसीहत लेनी चाहिये और जव ये दो भिन्न जातियां एक होगईं तो हिन्दू-मुसलमान एक

होकर स्वतन्त्रता क्यों नहीं पावेंगे। फिर इस देश के चार टुकड़े भिन्न २ राज्यों के नीचे थे जिसमें बोहीमियां, मोरेविया, सिलेसिया तो आष्ट्रिया के नीचे थे और हूलूसिन (Hlucin) जर्मनी का था। स्लोवेकिया (Slovakia) और सब-कारपेथियन रसिया (Carpethian-Russia) हंगरी राज्य का था। धन्य हैं वे मनुष्य जिन्होंने भिन्न जातियों और भिन्न राज्यों के नीचे के देशों से एक राष्ट्र बना लिया जो अब लीग आफ नेशन्स में न केवल शामिल ही हैं किन्तु लीग आफ़ नेशन्स की कमेटी में जो १६ राष्ट्र हैं उनमें प्रधानरूप से एक है।

टोमस गैरिक मैसेरिक फर्स्ट प्रेसीडेन्ट जैकोस्लोवेकिया—इसका श्रेय एक महा-पुरुष को है जिसका नाम मिस्टर टोमस गैरिक मैसेरिक (Mr. Thomas G. Masaryk) है। इस महापुरुष का जन्म स्लोवेक के होडोनिन ग्राम में एक बग्घीवान के घर सन् १८५० ई० में हुआ, पहिले ही पहल लोहार के काम को सीखा, फिर विद्याभ्यास इतना किया और ऐसी पुस्तकें लिखीं कि वयाना नगर को यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ेसर हो गया। 'सत्य का अनुसंधान करके उस पर मरणान्त तक दृढ़ रहना' यही विशेष गुण इस महापुरुष में था।

इस व्रत के लिये इस महापुरुष को कई देशनिकाले सहने पड़े, लेकिन ज्यों २ कठिनाइयां आईं इस महापुरुष ने सब को सहन किया और न्यायपरायणता और सत्यानुरोध में दृढ़ विश्वास करते हुए इसने कई पुस्तकें लिखीं। वृहत् लड़ाई के समय में इसने अपनी जन्मभूमि में जाकर अपने देशवासियों को उकसाया कि दूसरों के लिये अपने प्राण क्यों गंवाते हो और उनको वृथा मरने से रोका। उसने समझाया कि जर्मनी की जय होने से तुम्हारे देश का कल्याण नहीं। जर्मनी की कीर्ति है और

जर्मनी के ह्रास में तुम्हारा ह्रास अवश्य है। इसलिये तटस्थ रहो और फिर एक जातीयता स्थापन करके लड़ाई के अन्त में जो जर्मनी और आस्ट्रिया पर लड़ाई का भार डाला गया उससे अपने देश को मुक्त रहने के लिये घोषणा की। लीग आफ नेशन्स ने उस पर ध्यान दिया और बराबर का नेशन मान कर अपने में शामिल किया। उपरोक्त मिश्रित जातियां तथा मिश्रित देश अपना नाम जेकोस्लोवेकिया (Czechoslovakia) रखकर रिपब्लिक स्थापन करके अपने प्रेसीडेन्ट इस महापुरुप को एक मत से पिता का सम्बोधन करते हैं। डाक्टर एडवर्ड बेंस (Dr. Edward Benes), जो इलाक़े ग़ैर के मिनिष्टर हैं, इनके साथी रिपब्लिक के आरम्भ से हैं। मैंने यहां का हाल भी खूब देखा। यहां आने से मुझको विश्वास हो गया कि अगर आदमी सच्चे दिल से देश के उद्धार में लग जावे तो अवश्य उसके द्वारा उद्धार होता है। कितने कठिन उद्योग, साहस एवं धैर्य्य की बात है कि मिस्टर मैंसेरिक ने यह सोच लिया कि चार भिन्न देशों और टुकड़ों का एक देश बना लूंगा, एक भाषा कर दूंगा, एक सिक्का कर दूंगा और एक राज्य क़ायम कर दूंगा। स्वप्न में भी जो सम्भव न था इस महापुरुप ने कर दिखाया। हमने सब संसार का भूगोल स्कूल में पढ़ा था, परन्तु इस देश का नाम न पढ़ा था और न सुना था और परसों तक नहीं जानते थे सो आज अनुभव किया कि पूर्ण स्वतन्त्र देश, प्रेसीडेन्ट ८२ वर्ष का बूढ़ा और साधु आदमी है। खूनख़राबी नहीं होने दी। यूरुप के सब राज्यों से समझौता करके राज्य क़ायम कर लिया जो अब लीग आफ नेशन्स में बराबरी के पद पर है और अन्तरंग के १६ मेम्बरों में से एक है। बड़ी ही विचित्र बात है, मनुष्य क्या नहीं कर सकता !

नगर वियाना (देश आस्ट्रिया)

Hotel Pension Cosmopolit १०-८-३२

श्रीमतीजी ! आनन्द में रहो,

प्राग Prague (जेकोस्लोवेकिया) की आर्थिक दशाः—मैं यहां आज सवेरे पहुंचा, कलेवा कर चुका हूं। तीसरा दर्जा था, आदमी भले थे, सोने के लिये जगह थी, परन्तु रेल में जैसा सोना होता है वैसा ही सोया। कल तीसरे पहर को वह रेल और मोटर बनाने वाली कम्पनी (Ringhoffer Works Lt.) रिंगाफर वर्क्स का मैनेजर आया, इस महाशय का नाम ऐल श्वार्ज़ (Mr. Leon Sehwarz) है, अपनी मोटर लेकर आया। ठीक समय में कारखाने व दफ़्तर में गये। कहीं कुछ बिक्री नहीं, इस कारखाने में हज़ारों आदमी काम करते थे अब सब हाथ पर हाथ दिये बैठे हैं। मद्रास अहाते में रेलें यहां से ही बन कर गई हैं। उस विचारे ने इतनी खातिरी की कि रात के ८ बजे तक मेरे साथ घूमता रहा।

प्राग का प्राकृतिक दृश्य व बाग़ की सैरः—शाम को उसी बड़े आदमी मिल मैनेजर मिस्टर ऐल श्वार्ज के साथ हवाखोरी में गये। नदी के किनारे २ बहुत ऊंचे टीले आ गये हैं और वे टीले इतने चौड़े हैं कि कोसों तक उन पर सुन्दर बाग़ हैं। सड़कें खूब अच्छी, बड़े वृक्ष और सुन्दर फलों के पेड़ हैं। जैसे गलते से सब शहर जयपुर दीखता है वैसे इस बग़ीचे से खूब नदी और नदी-पार सब नगर की सैर हो जाती है। ऊंचाई पर चढ़ने में सुगमता रहे इसलिये चलने वाली सीढ़ियां लगा रक्खी

हैं। दो मिनट में चढ़े और अपने पगों से आये थे इसलिये १० मिनट में उतरे, ऊपर खोमचे वाले, होटल और कई प्रकार के आराम के सामान हैं। सैर से आकर भोजन किया, स्टेशन पर आकर खूब पूछ ताछ करके वापिस होटल में जाकर सामान लेकर आगये। यहां नगर प्राग (Prague) में होटल पैरिस वाले ने खूब आराम दिया।

वियाना (आस्ट्रिया)—प्रातः यहां पहुँचे, एक महिला साथ होगई और उसने यहां ठहरा दिया। स्टेशन से बहुत दूर है, लेकिन सब स्वच्छता है और मालकिन भी भली आदमिन है। इस वक्त पता चला कि यहां ही इस कमरे में महात्मा हँस-राजजी जब आँखों का इलाज कराने आये थे तब ठहरे थे। रेल की साथिन एक महिला यहां उतार गई थी। आठ बजे कलेवा करके नौ बजे सैर के लिये रवाना हुआ। टामस कुक के दफ़्तर को संभाला और सैर कराने वाली मोटर का टिकट लिया। दिन भर दोनों वक्त सैर की, लेकिन दोनों समय निद्रादेवी सवार होगई। इमारतें बहुत बड़ी और देश बहुत प्राचीन बादशाहत का है। यह नगर वियाना क़रीब २० लाख आदमियों की बस्ती का है और यूरोप की सब से बड़ी नदी डैन्यूब के किनारे पर है। जगह २ बाग़, जगह २ चौपड़ें, अपने तर्ज़ का एक ही शहर है। नदी ने शोभा दुगुनी करदी है। क़रीब २ चारों तरफ़ पहाड़ व टीले आगये हैं। अस्प-ताल, यूनीवर्सिटियां, म्यूज़ियम इतने ज़ियादा हैं कि उनका देखना महीनों में भी ख़तम नहीं होसक्ता। एक अस्पताल को जाकर देखा। सिर्फ उसके चारों तरफ़ वार्ड्स को देखने में ३ घण्टे लग गये। बड़े किफ़ायतसारी और सादगी से लेकिन पूरे आराम से मरीज़ रक्खे जाते हैं। यहां कोई काम ९ बजे पहिले शुरू नहीं होता इसलिये अंग्रेज़ी बोली बोलने वाला, जो समझा कर सब

यातों को दिखाता, नहीं मिला। गिर्जाघर जगह २ पर हैं। एक गिर्जाघर में वृन्दावन के शाहजी के मन्दिर के से खम्भे लगे हैं जो सुन्दरता में उनसे अधिक हैं। यह एक बहुत पुरानी बादशाहत है जिसमें सब ढंग अपने रजवाड़ों के से थे। यहां का बग्घीखाना देखा जो नुमायशी बग्घियां जयपुर में हैं, यहां की नक़ल मालूम पड़ती हैं। बग्गीखाने के बाहर एक लम्बा चौक पड़ता है वहां मैं मेरे एक साथी की इन्तज़ारी कर रहा था कि इतने में एक अमेरिकन सज्जन(Jos. Prochaska, 717 N Cheoter St. U.S.A.) आये और मुझसे बड़े नम्रता से प्रणाम करके बोले कि आप कृपा कर मेरी स्त्री को एक मिनट के लिये अपनी बगल में खड़ी रहने दीजिये वह आपके साथ तस्वीर खिंचवाना चाहती है। मैं उसको कुछ जवाब देने न पाया था कि उसने फोटो उतार लिया और अमेरिका यूनाइटेड स्टेट्स से मेरे पास भेज दिया। यह पश्चिमी सभ्यता है।

पुराने राजाओं के महल—देखे महल के बाहर का चौक इतना बड़ा था कि एक क़स्बा बस जावे। बाग़ अभी तक ऐसा पहिले कहीं नहीं देखा। पेड़ों को चार खण्ड की ऊंचाई तक ऐसा बनाया है कि मानो हरा मोटा परकोटा उतनी की ऊंचाई का हो। महल के सामने कोई आध मील या पौन मील पर जाकर ढलाऊ इतनी ही लम्बाई का हरी घास का तख़ता लगाया है और वहां से पानी की चद्दर बहने का प्रबन्ध किया है। वहां ऊंचाई पर दो मञ्ज़िली इमारत है। महल भी बहुत बड़े और सुन्दर हैं। बादशाह ८० वर्ष का होकर मर गया, उसके पोते ज़िन्दा हैं। सबको प्रजा ने निकाल आप मालिक बन बैठी। देखो कितनी पुरानी बादशाहत को, जिसका सम्बन्ध चारों तरफ़ बादशाहों से

था, उड़ादी और बादशाहज़ादे रोटी २ करते फिरते हैं। राज्य में जितनी चीज़ें व सामिग्री होती हैं उन सब से सम्पन्न और बड़ा विशाल सार्वभौमिक राज्य था। अपने राजा लोग अब भी नहीं समझते। अब रात को सैर करने जाऊँ तो रांडों की सैर है जो यहां मुंह मांडे खड़ी हैं और टके २ में आव भाव श्रृङ्गार करके धन हरण करना चाहती हैं इसलिये किवाड़ जुड़ कर सोना ही अच्छा है।

आस्ट्रिया और जर्मनी में लड़ाई का असर—नींद आने के पहिले जिस स्थान में मैं ठहर रहा हूं उसकी मालकिन को बुलाया और उससे लड़ाई के समय का हाल पूछा तो उसने कहा कि लड़ाई के दिनों में योद्धाओं को सामान भेजने के लिये जर्मनी और आस्ट्रिया की प्रजा ने ऐसे भी दुःख पाये हैं कि भोजन के लिये किसी २ दिन तो उनको पाव भर आलू भी नसीब न हुये कारण खाने पीने पहिनने आदि की प्रत्येक वस्तु पर गवर्नमेंट का कन्ट्रोल याने अधिकार हो गया था। सेना के खर्च से जो कुछ बचता वह सब हिस्से रसदी सिविल प्रजा में बांटा जाता था और उस समय की ग़रीबी का असर अब तक बना हुआ है। यह भी कहा कि संग्राम का इतना बुरा असर हुआ है कि हमारे देश के मनुष्य आधे से अधिक मर गये और स्त्रियां, बच्चे और वृद्ध रह गये। अब भी लड़कियां ही अधिक होती हैं जो साधारणतः बड़े कष्ट में हैं। यह बातें करते २ उसके अश्रुपात होने लग गये। लड़ाई की हार देश की मौत है जिसके पश्चात् उत्थान का होना केवल स्वप्नवत् है। हम हिन्दू भी तो महाभारत के पश्चात् ये सब विपत्तियें अब तक भोग रहे हैं।

वेनिस (इटैली)
ता० १८-८-३२

चिरंजीविनि कमले ! आशीः ।

आपकी माता को सादर सप्रेम सुख कामनाएं !

आस्ट्रिया के कारखाने—कल फिर एक गाइड आया और यहां के सब से बड़े कारखाने वाले ओस्टेन सीमेन से मिलाया। मैं उनके कारखाने को देखने गया। बिजली के इंजिन व पुर्जे सब बनते हैं लेकिन बिक्री न होने से १०० में से २ आदमी काम पर लगा रक्खे हैं कि लोगों को यह दीखे कि कारखाना जारी है, लेकिन भूखे मर रहे हैं। यहां इस प्रकार गाइडों को अलग अपने लिये करना और अलग ही मोटर में जाना बड़े खर्चे का काम है। ये लोग मीठे ठग होते हैं। पहिले कहते नहीं और फिर इस तरह चिपटते हैं कि एक रुपया का काम किया होवे तो चार लिये बिना पिंड नहीं छोड़ते।

वहां से सीधा स्टेशन आया। टामस कुक के आदमी ने ६-५५ का टाइम गलत बतला दिया। रेल में से सामान उतार के वापिस क्लोकरूम में रक्खा और वापिस शहर को गया जहां का पता था कि भारतवासी डाक्टर मिलेंगे, चुनांचे तीन डाक्टर मिले। तीनों भारतवासी अपने २ काम में लगे थे। उनमें से एक भारतवासी सर प्रभाशङ्करजी पट्टनी साहब भावनगर वालों के खर्चे से आया हुआ था। कहने लगा म्यूज़ियम तक तो मैं आपको छोड़ आऊंगा, चलिये और हम म्यूज़ियम देखने चल पड़े।

आस्ट्रिया का पार्लियामेंट—बीच में पार्लियामेंट हाउस

पड़ा। बाहर फौज़ी अफ़सरों से कहा ज़रा दिखा दो। इतने में एक बड़े अफ़सर ने कहा मेरे साथ आओ, उसने एक अफ़सर को साथ किया और फिर दिखाने के बजाय जहां पार्लियामेंट जुट रहा था, बहस होरही थी, वहां जाकर बैठा दिया। अहोभाग्य, परमात्मा की कृपा, प्रेसीडेन्ट ने देखते ही बुलाकर सलाम किया, बहस सुनो। जो भावनगर का हिन्दुस्तानी डाक्टर साथ था वह तो यह कहकर चला गया कि मुझे इस वक्त काम है। मैं अकेला रह गया। किसी से कुछ कहूं तो समझे नहीं। गूंगे बहरे की तरह दो तीन मिनट देखा, फिर एक मेम्बर मेरी तरफ़ आया और बिचारे ने अंग्रेज़ी बोलने की कोशिश की, खूब तलाश किया कि अंग्रेज़ी बोलने वाला मिले तथा कइयों को पकड़ कर लाया पर सब जर्मनी बोलते थे। लाचार इशारे से मैंने ही उसको समझाया और ज़रा अंग्रेज़ी समझ भी लेता था। सब पार्लियामेंट दिखलाया। बड़ा विशाल-भवन, इंगलैण्ड के पार्लियामेंट से किसी अंश में बड़ा ही है, छोटा नहीं। मैंने उस महाशय का चाय पानी का निमन्त्रण तो समयाभाव से अस्वीकार किया।

आस्ट्रिया का म्यूज़ियम—वहां से लपक कर ढूंढते खोजते म्यूज़ियम में आया। पर्दों और गलीचों में चित्रकारी का काम और जगह से बढ़कर है। दो बज गये। दौड़ा, पता लगाकर ट्राम में बैठ गया और रेल के पास आ उतरा। मालन से फल फूल लिये। यहां सब्ज़ मेवे की कुछ महंगाई है लेकिन स्वादु और बड़े अच्छे मिलते हैं। आजकल ज्यादातर फलाहार ही पर निर्भर रहना पड़ता है। स्टेशन पर आये तो क्लर्क गाड़ी में न बैठने दे कहा आप वक्त पर आइये। फिर कहने लगा बिराजिये। मुझको भी गुस्से से इन्कार करना पड़ा। इतने में कुछ जल पान

किया। भाग्य से वहां जल पान घर के चार्ज पर दो अंग्रेज़ ही थे, फिर स्टेशन पर आये, गाड़ी में बैठे। यहां पर यह अवश्य कहना पड़ेगा कि यहां के आदमी ऐसे सभ्य नहीं पाये जैसे और जगह के। रूखे भी हैं और कुछ बोली में भी नहीं समझते जैसा अनुमान था अंग्रेज़ी बोलने वाले बहुत कम निकले । साथ में सिर्फ़ एक स्त्री ४० वर्ष की और दूसरी एक युवती थी। दोनों अंग्रेज़ी बोलते थे चुनांचे रस्ता खूब कटा। रात भर कोई नहीं आया, एक बेंच पर लेटे चले आये। सवेरे ७ बजे यहां वेनिस में उतरे। उपरोक्त स्थान पर ठहरे, सवेरे का चक्कर लगा चुके, अब शाम का चक्कर लगेगा । देर होती है, यहां का हाल कल ही लिखेंगे, आनन्द है।

वेनिस (इटैली)
ता० २०-८-३२

चिरंजीविनि कमले !

वियाना से वेनिसः—मैं जिनोवा जाने को तैयार हूँ पर दूध की बाट देख रहा हूं। ८ बजे पहिले किसी काम से नहीं निपटते। ख़ैर, बड़ी गर्मी पड़ती है, खूब पसीने आ रहे हैं, ७ बजे का समय है अजब शहर है। परसों रास्ता अच्छा गुज़रा। बहुत सुन्दर दृश्य था। खेत से खेत और बंगले से बंगला लगा हुआ था। वृक्षों और पर्वतों की छटा निराली थी। नदी साथ २ चलती थी। कहीं नाले और जयपुर के घाट का सा दृश्य हज़ारों बार आया, पर्वतों के लहरिये खूब पड़े हुए थे। वृक्षों की कांट छांट कुदरती निराली थी।

वृक्षों की कोमलता:—आष्ट्रिया के बादशाह के महल व बाग का वर्णन करते वक्त मैं लिख चुका हूं कि परमात्मा ने वृक्षों की लकड़ी ऐसी की है और पत्ते ऐसी कोमलता रखते हैं और माली ऐसे कारीगर हैं कि वृक्षों की टहनियां काट कर वृक्षों को अनेक रूप में कर देते हैं। महलों के आगे परकोटे को जो बनाया है वह मीलों तक वृक्षों को ८० फीट की ऊंचाई तक काट कर बनाया है। दूर से बिलकुल दीवार हरे रंग की प्लास्टर की हुई मालूम पड़ती है।

वेनिस शहर:—यह वेनिस शहर भी अपनी वजह का एक ही है। संसार में दूसरा शहर नहीं है। सड़कों के बजाय समुद्र की नहरें हैं और हमेशा जाना आना किश्तियों से होता है। किश्तियों का किराया शायद लाखों रुपये रोज़ हो जाता है। गलियां भी नहरों की ही और बड़ी सड़क भी नहरों की ही। जहाज़ सैकड़ों खड़े हैं। मल्लाह छोटी किश्तियां, बड़ी किश्तियां तथा छोटे जहाज़ चलाते हैं। बाहर से मकान कुछ २ जयपुर के ढङ्ग के हैं, फलों की बाहुल्यता है, १००० वर्ष पहिले का शहर है।

यह वेनिस नगर १०८ छोटे २ द्वीपों का बना हुआ है और ज़मीन से, रेल्वे के लोहे के पुल से, जिसके २२२ खम्बे हैं और कोई पांच छः हज़ार फीट की लम्बाई है, मिला हुआ है। शहर का एक हिस्सा दूसरे हिस्से से पुलों के ज़रिये से मिला हुआ है जो क़रीब ३०० के हैं और उनमें सब से बड़ा रिआल्टो ब्रिज (Rialto Bridge) है; जो पुल कि ग्रैंड कैनेल (Grand Canal) के ऊपर बने हैं, इतने बड़े हैं कि उनके नीचे काफी बड़ी स्टीम बोट

और छोटे जहाज़ अच्छी तरह आ जा सकते हैं। वेनिस नगर में सन्तमार्क्स स्कायर सब से अधिक नामी स्थान है, इसमें ही सब से बड़ा बाज़ार, सन्तमार्क का बड़ा सुन्दर गिर्जा, प्राचीन ड्यूक लोगों का महल, क्लोकटावर, लाइन स्कायर, सन्तमार्क के स्तम्भ, पुराना पुस्तकालय, टकसाल और म्यूज़ियम आदि बड़े सुन्दर स्थान हैं। हरएक स्थान, प्रत्येक महल और प्रत्येक गिर्जा कारीगरी से भरा हुआ है जिनमें लुभाने वाले रंग के काम, आरायश और फ़र्श अपने २ ढङ्ग के निराले ही हैं और जो भी काम है मज़बूत और पूरी सुन्दरता को लिये हुए है। ड्यूक लोगों का महल (Ducal Palace) एक बहुत ही बड़ा और प्राचीन राजभवन है जिसके देखने से ५०० वर्ष से पूर्व के यूरोप की कारीगरी का पूरा अन्दाज़ा हो जाता है। यहां के भवनों से बढ़ कर उस समय यूरोप में और कोई राजप्रासाद विशालता, चित्रकारी, पत्थर की कुराई, रंगत और सजावट में न था। वास्तविक में इस स्कायर की इमारतें यही प्रगट करती हैं कि उस समय के कारीगर इस समय के कारीगरों से कुछ बढ़े चढ़े थे।

यहां ही दो तीन बड़े २ कांच के कारख़ाने भी हैं जिनमें हर प्रकार की वस्तुएं बनती हैं। एक कांच के कारख़ाने वाले (Pauley & Co.) के मालिक से बातें हुईं। उसने कहा कि मैं प्रतिवर्ष भारत में जाता हूं और लाखों का माल बेच आता हूं, आपके दरबार में भी हमारा माल बिकवाइये। यद्यपि माल बहुत सुन्दर और चमक भड़क में बहुत ही बढ़ कर था लेकिन वैसा ही माल भारतवर्ष में भी बन सकता है। हमारे राजा महाराजा, जिनमें यूरोप के फैशन की बू समा गई है, लाखों रुपये विदेशियों को तो ऐसे माल के ख़रीदने में, जिसकी उम्र दो साल से अधिक

नहीं होती, दे देते हैं, परन्तु अपने यहां सब सामान होते हुए भी न कारीगरों का और न व्यापारियों का उत्साह बढ़ाते हैं ।

मेरे स्वर्गीय धर्मभाई सेठ धनरूपमलजी गोलछे ने जयपुर की सीमा पर कैसी अच्छी फैक्टरी खोली थी, परन्तु प्रोत्साहन न मिलने से बन्द करना पड़ा । सन्तमार्क्स स्कायर वेनिस में ऐसी जगह है जहां से सब जगह जा सकते हैं और क़रीब २ सब वेनिस को देख सकते हैं । ग्रेंड कैनाल के दुतरफ़ा बड़ी २ इमारतें हैं और इनमें पब्लिक इमारतें भी हैं जैसे कस्टम हाउस और कई चर्च वगैरह ।

किश्ती में बैठ कर लीडो (Lido) नामक स्थान को शाम के घक गये । यह समुद्र के किनारे एक आराम करने का स्थान है जहां लोग हवाखोरी करने और मौज उड़ाने बहुत आते हैं । दिन भर अय्याशी, समुद्र में नहाना, शराब पीना और नंगे पड़े रहने के सिवाय और कुछ काम नहीं करते । नहाने के बाद मेमें इज़ार पहनती हैं । बालू रेत में नंगे भी हज़ारों आदमियों को सोते हुए देखा और बहुत ही बेशर्मी है । हज़ारों कुर्सियों पर बैठकर चबूतरों पर आम रास्ते पर शराब, चाय, काफी पिया करते हैं । कपड़े सुन्दर पहिनते हैं और होते भी हैं सुन्दर । अय्याशी बहुत है, परन्तु कारीगरों की ऐसी गिरी दशा है कि बिचारे भूखे मर रहे हैं । चित्रकार अव्वल नम्बर के हैं । मैं कल यहां लीडो नगर में समुद्र के किनारे एक बेंच पर बैठा हुआ एक मामूली पेन्सिल से जयपुर के जैसे रफ कागज़ पर जैसी मेरी सूरत, चहरा व भाव थे उनकी एक चित्रकार ने १५ मिनट में तस्वीर खेंचली । इस चित्र को मैंने उससे लेना चाहा । क़ीमतन नहीं दिया और कहा मैं यहां के अखबारों में निकालूंगा जिससे कि यहां के आदमियों

को पता लगेगा कि हिन्दुस्तानी कैसे होते हैं। अब भोजन का समय नहीं है दूध पीकर ही जिनीवा के लिये रवाना होता हूं और इस पत्र को एयरमेल से ही भेजने की चेष्टा करता हूं।

जिनीवा (स्वीज़रलैंड) होटल स्विस
२१-८-३२

चिरंजीविनि कमले ! आशीः ।

वेनिस से जिनीवाः—कल सवेरे वेनिस से हवामार्ग से पत्र भेजा था उसमें ता० १९-८-३२ और २०-८-३२ के सवेरे के ७ बजे तक के हाल लिखे थे। आज उसके बाद से लिखता हूं। मैं नहीं कह सकता कल का पत्र तुमको कब मिलेगा, क्योंकि हवाई जहाज़ का इन्तज़ाम लन्दन होकर तो ठीक है बाक़ी सब गड़बड़ है। लेकिन डाक में डालने के सिवाय और रास्ता ही क्या है, कभी न कभी पहुंचे ही गा। कल प्रातः उठ कर स्टेशन पर १ घण्टे पहिले आ गया कि अच्छी जगह मिल जावे ताकि आराम से सफर हो। बड़ी भीड़ और बड़ी गर्मी थी, जयपुर से कम नहीं थी। १४ घण्टे का सफर किया। आधे से ज्यादा आदमी खड़े चलते थे, लेकिन हिन्दुस्तान के आदमियों की तरह लड़ते नहीं हैं। पहिले पूछते हैं कि क्या मैं बैठ सकता हूं अगर कोई हां करता है और जगह होती है तो बैठते हैं वरना खड़े २ दर्जों के बाहर चलते हैं। यूरोप की यात्रा में जगह २ पर भाषा का बदलना बड़ी दिक़्क़त की बात है, फिर सिक्का भी हर वक़्त बदलना चाहिये, क्योंकि एक राज्य का सिक्का दूसरी जगह नहीं

चलता। तीसरे राहदारी के लोग खूब संभाल लेते हैं। मेरी संभाल तो किसी ने भी अब तक नहीं ली है, सिर्फ़ पासपोर्ट देखकर विश्वास कर लिया है और यह कह कर छोड़ देते हैं कि आप गांधी इण्डिया के हैं। याने यूरोप भर में महात्मा गांधी का प्रताप इतना फैला हुआ है कि भारतवासियों को यूरोप के और खास कर मध्य यूरोप के आदमी और राज के कर्मचारी ईमानदार समझते हैं।

मक्का के खेत इटली में खूब देखे, जिनका सिट्टा भी बहुत बड़ा था और इटली भर में प्राकृतिक दृश्य बहुत सुन्दर है। कल सब रास्ता पहाड़ों के बीच में था, एवं एक नदी रेल के साथ २ चलती थी। दिन भर फलाहार से ही काम चला। आड़ू बहुत बड़े, सेव भी अच्छी, केले की बड़ी क़ीमत, एक केला ।=) में। फिर ।=) आने में काग़ज़ के दोनों में २ आड़ू, एक सेव, १ संवर और एक दो और फल बिकते हैं। यहां हर स्टेशन पर स्वादु, ठण्ढा और मीठा जल मिलता है, लेकिन यहां के आदमी बीयर शराब के आदी हैं और वो ही बहुत ज़्यादा बिकती है। गर्मी बहुत अधिक थी यह ठण्ढा जल ही मुझ भारतवासी के प्राण थे। आदमी हंसमुख, मेरे दर्जे में कोई न कोई अंग्रेज़ी बोलने वाला आ ही जाता था। युवतियां मर्दों से ज़्यादा शिक्षिता होती हैं और अंग्रेज़ी ज़्यादा जानती हैं। वृद्धा स्त्रियों के अक्सर १०० में से ५ के ४० वर्ष की उमर के बाद दाढ़ी मूंछ निकल जाती है एवं चहरा मर्द का, भेष लुगाई का सा; वृद्ध पुरुषों का चेहरा लुगाई का सा, क्योंकि दाढ़ी मूंछ मुड़ाये रखते हैं। यहां काग़ज़ को इतना कमाया है कि दूने, कटोरियां और ग्लास कागज़ के खूब बनाये जाते हैं। यहां चश्मों में एक प्रकार का पानी आता है जिसको स्टेशन पर ।=) छै आने की एक बोतल के हिसाब बेचते हैं, जो लोग शराब नहीं पीते हैं वे यह पीते हैं।

मध्य यूरोप में कई जगह जैसे प्राग से कुछ दूरी पर और इटैली में तो बहुतसी जगह खास चश्मों से पानी निकलता है, इसको यहां खोमचे वाले अका मिनेरेल बड़े लहजे से कह कर बोलते और बेचते हैं और यह पानी ऐसे स्रोतों से निकलता है जहां आस-पास में गन्धक की खान होवे। हाज़मे के लिहाज़ से तो अच्छा है लेकिन अपने यहां के खारे कुवें के पानी की तरह बेस्वादु होता है। खोमचे वाले मलाई की बरफ़ भी बेचते हैं और हर चीज़ को उम्दा लिफाफ़े में लपेटे रखते हैं किसी को पता नहीं चलता कि इस में क्या है। अपने अखाद्य पदार्थ की हलकी क़ीमत की रोटियां भी बेची जाती हैं जो तीसरे दर्जे के आदमी बहुधा खरीद कर खाते हैं और प्रसन्नचित्त रहते हैं। पैसा खर्च करने में मर्द हैं। यद्यपि ग़रीबी आरही है तब भी दिन भर में २) या ४) रु० का पानी या शराब अवश्य पीवेंगे। गाने बजाने के भी बड़े शौकीन हैं। इटैली की समाप्ति पर एक बड़ी भारी झील पड़ी। बीच २ में मकराने की खानें भी पड़ीं। झील का दृश्य बड़ा सुन्दर था, मार्ग में कृषकों की आबादी थी।

मध्य यूरुप में सामाजिक व्यवहार—कपड़े पहिरने के नखरे तो इंगलैण्ड में ही हैं। खास तरह से कमीज़ पहनो, खास तरह से थूंको, खास तरह से छींको वग़ैरह। यहां कोई बात नहीं। कोई पतलून, कोई कुरता ही पहनता है तो कोई नंगे सिर चलता है। मर्दों से औरतें ज़ियादा हैं। जर्मनी और फ्रांस से ज़ियादा लज्जावती भी हैं। लेकिन व्यभिचार कमाना और पैंतीस ३५ तथा ४० चालीस वर्ष तक एक पति न रखकर व्यभिचार में लिप्त रहना पाप नहीं समझा जाता। पढ़ी लिखी ज़ियादा शर्म वाली होती हैं। अदब से व्यभिचार कमाती हैं। जो गृहस्था हैं

वे बच्चों के पालन में चतुर और सब घर का काम करने वाली होती हैं। बड़ी उम्र में विवाह होने से जो हानियां और सामाजिक विगाड़ होते हैं यहां सब प्रत्यक्ष देखने में आये। विवाह न कर, एक पति के आश्रित न रहकर अनेक के साथ सहवास करती हैं और फिर भी सब कुमारियां समझी जाती हैं। भारतवर्ष अच्छे सुधार पर चल रहा है और माननीय दीवानबहादुर हरविलासजी शारदा के ऐक्ट के मुताबिक जो उम्र की सीमा रक्खी गई है बहुत ठीक है, इससे अधिक यदि उम्र की सीमा रक्खी जावेगी तो समाज का गिराव, जो यहां है वह भारतवर्ष में भी हो जायगा।

जिनीवा (स्वीज़रलैण्ड)—रात को दस बजे पहुँचे। अगर्चे पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ़ था लेकिन गर्मी कम न थी। इस स्वीस होटल में स्नान करने के बाद कुछ शांति हुई। क्योंकि देर होगई थी, विचारे होटल वाले ने बाहर से दूध मंगा दिया जिससे काम चलाया। आज सवेरे सूण की पोलियां सिकी हुई सूखी गेहूँ की जो बन्द कागज़ के डिब्बे में बिकती हैं और गर्म दूध में डालते ही दलिये के मुताबिक हो जाता है उसको शहद के साथ खाकर काम चलाया। यहां शहद कलेवे के वक्त अक्सर खाते हैं। यहां का दूध और भी स्वादिष्ट होता है। अपने यहां एक घण्टा आंच पर रखने से भी वैसा नहीं होता। स्वीज़रलैण्ड जैसा आबू पहाड़ है वैसा ही है। आदमी की कारीगरी ने इसको और भी सुन्दर बना दिया है। झीलें ज़रा बड़ी और जगह २ नदियां हैं। मेवाड़ उदयपुर का सा नज़ारा है लेकिन जिसके पास फालतू रुपया होवे, वह यहां आवे। अभी तक यूरोप को विचार नहीं हुआ है कि यूरुप वाले रसातल को जारहे हैं

तथा जल्दी ही डूबने वाले हैं। मस्ती में लगे अनाप शनाप खर्च रोज़ाना का रखते हैं। एक दिन का यहां सैर आने वाले का खर्च और विचारे भारत के कृषक का १ वर्ष का खर्च बराबर है। राम ही निभाने वाला है।

जिनीवा (स्वीज़रलैण्ड)—यह स्थान अन्तर्राष्ट्रीय हो गया है। सुन्दरता तो अनुपम है ही लेकिन केन्द्र होने से यहां आना आवश्यकीय समझा। दो चार चिट्ठियां भी लाया था, मिला, बहुतसी बातें मालूम हुईं। बहुत अनुभव बढ़ेगा। आज रविवार था इसलिये घर पर ही जाकर एक सज्जन से मिल पाया। कल दफ़्तर में मिलूंगा। भारतवर्ष से ६०,००० पाउण्ड यहां भेजे जाते हैं, उसका हिस्सा कुछ अंशों में कदाचित जयपुर को भी देना पड़ता होगा, जाल गुथा हुआ है। ईश्वर रक्षक है।

(स्विटज़रलैंड) जिनीवा
ता० २२-८-३२

चिरंजीविनि कमले !

आज मैं यहां ही हूं। कल प्रातः जाऊंगा, कल ता० २३ है। ता० २५ को विक्टोरिया जहाज़ से भारतवर्ष के लिये रवाना होऊंगा। कल रात्रि के समय खूब घूमा, भोजन का यहां भी सुप्रबन्ध है। एक ढाबा ऐसा है जहां सब शाकाहारी ही हज़ारों की तादाद में जीमा करते हैं। दाम भी जैसे शाकाहारियों के होने चाहियें १॥) रु० से ज्यादा एक वक्त का नहीं होता। मलाई दूध, दही भी पुष्कल व अच्छा मिलता है।

देश स्वीज़रलैंड का नगर जिनीवा और उसकी अतीव सुन्दर झील, मय पुल और किनारा

पृष्ठ १७५
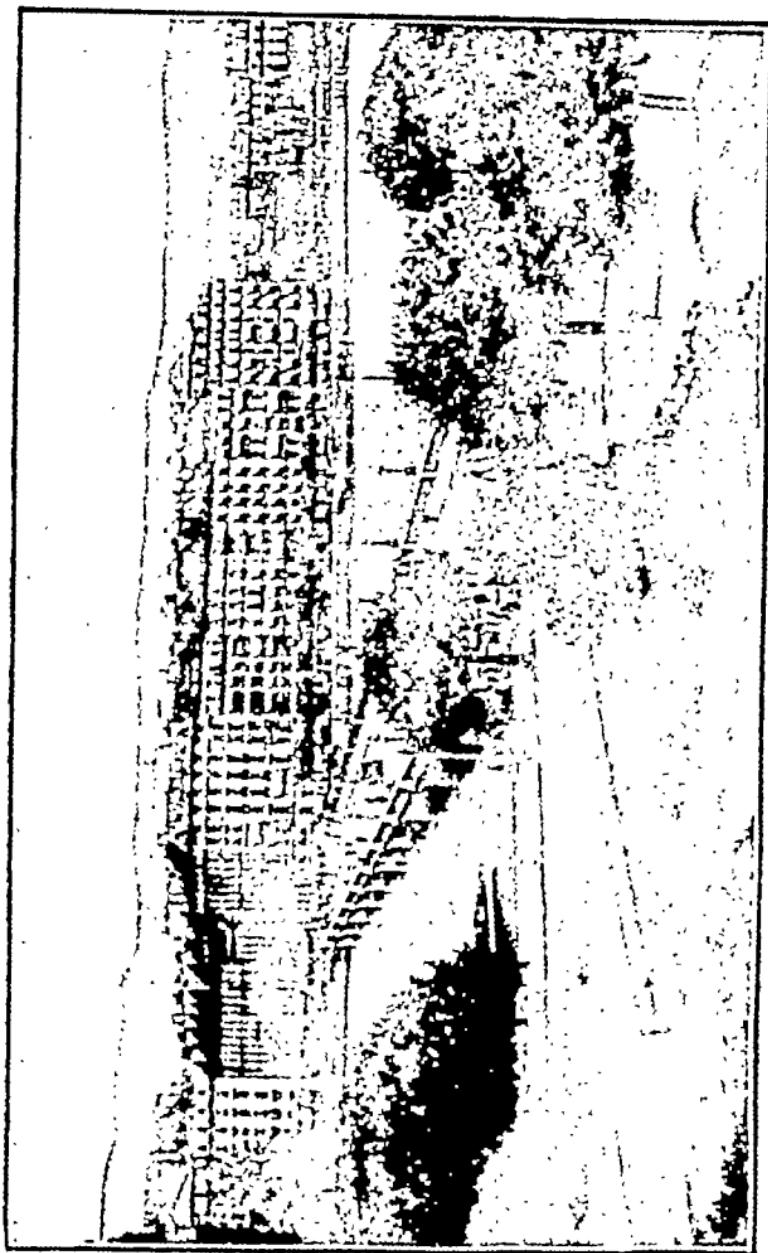
जिनीवा की झील:—यहां एक अति रमणीय और सुन्दर झील है और वह यहां आकर नदी की सूरत में हो जाती है। साफ नीला पानी है। दूसरी नदी बड़ी कीचड़ वाली है जो इस नीली नदी के बराबर बहती है, दोनों आकर यहां मिलती हैं। थोड़ी दूर तक दोनों की धारा दीखती है फिर प्रयाग की तरह एक ही धारा हो जाती है। ऊंचाई पर चढ़ कर देखा, शहर भी काफी बड़ा है तथा बिजली की छटा तो खूब ही है। रात्रि के समय झील के किनारे स्त्री पुरुषों की भीड़ बहुत भारी होती है। संख्या में स्त्रियां पुरुषों से दुगनी। चार बजे से स्त्रियां घूमना शुरू करती हैं। कोई उस वक्त से ही लेकर चाय, काफी, खाना पीना शुरू करती हैं और १० बजे चला जाती हैं। कोई बिचारी ११ बजे तक घूमती रहती है और भटक कर भूखी प्यासी चली जाती है बड़ा ही निर्लज्ज और व्यभिचार का देश है। प्रभु ही बचाता है।

जिनीवा और घड़ियां:—यहां घड़ियां बनती हैं और दुनियां भर में अधिकतर यहां ही से जाती हैं। १०००) एक हज़ार रुपये से लेकर १) रु० तक की घड़ी है। अगर यहां एक हज़ार रुपये की खरीदी जावे तो भारत में दो हज़ार रुपये की अवश्य हो जावेगी। कारखाना देखने से पाया गया कि सब घाटे से काम कर रहे हैं। धेलचे के बराबर भी घड़ियां बनी हैं तथा अनेक रूप और अनेक तर्ज़ की बनी हैं। कारखाने में एक ७० वर्ष की बुढ़िया को भी बहुत बारीक काम करते देखा। हरएक पुरजा मशीन से बनता है लेकिन हरएक पुरजे के जोड़ने में बड़े दिमाग़ की ज़रूरत है। देखकर आंखें दङ्ग रह गईं और इनका धैर्य भी देख कर अचम्भित हुआ कि घाटा होने पर भी बनाते

हैं। हां, जहां १०० आदमी काम करते थे वहां ३० आदमी भी नहीं हैं।

लीग आफ़ नेशन्स (League of Nations)—यह स्थान अन्तर्राष्ट्रीय समाज का केन्द्र है और इस समय लीग आफ़ नेशन्स की संस्था में ७० राज्य हैं। आज यहां के अफ़सर लोगों से बात-चीत हुई कोई भी हिन्दुस्तान का तो भीड़ नहीं, पृथक् रूप से हिन्दु-स्थान को इसमें भरती नहीं । लीग आफ़ नेशन्स के विषय में एक अलग पुस्तक लिखूंगा, जिसमें सविस्तार हाल लिखूंगा। यहां इससे अधिक लिखने के लिये स्थान नहीं है । अभी १०० वर्ष तक तो इनका राज्य यों ही रहेगा। अपनी तीसरी पीढ़ी के बाद क्या हो सो ईश्वर जाने. नीतिविशारद हैं, लेकिन ऐसी कुटिल नीति अधिक चल नहीं सकती। समाज तो अन्तर्राष्ट्रीय है लेकिन कोई किसी की बात मानता नहीं और न मनाने के लिये इस संस्था के पास कोई साधन ही है। सब देश खुफियातौर से अपनी २ तैयारी में लगे हुए हैं। अपने वालों की दशा नाजुक है कारण खर्च ज्यादा आमद कम, जनता सन्तुष्ट नहीं। कहांतक कर बढ़ा कर काम चलावेंगे। खैर आनन्द में हूं, तुम आनन्द में रहना।

जिनीवा (इटैली)
ता० २४-८-३२

चिरंजीविनि कमले ! आशीः,

फ्रेंच भाषा न जानने से अड़चनः—यह मेरा पत्र तुमको ता० ६ सितम्बर सोमवार को मिलेगा। पीछे के पत्र मिले कि

नहीं, कह नहीं सकता। वेनिस से जो पत्र डाला वह भी सोमवार ता० ६ सितम्बर तक ही मिलेगा। मैं जहाज़ में कल ३ बजे पहिले बैठने के लिये आज सवेरे ही आ पहुंचा, आनन्द में हूं। तुम्हारी लिखी हुई पत्रियां लन्दन से वापिस आकर यहां मिलीं, जवाब नीचे लिखा है—ज्यों २ वापिस आने के लिये जहाज़ में बैठने के लिये दिन निकट आते हैं उद्वेग बढ़ता है और नींद कम आने लगी, रात को देर से सोया और सवेरे देर से ५ बजे उठा। अब ६-१० हो गये नीचे होटल वाले को चुकाया सिर्फ़ ५ मिनट रेलगाड़ी के रवाने होने में रह गये हैं। स्टेशन प्लेटफार्म पर आया गाड़ी रवाना हो गई। किसी तरह गाड़ी में घुस पड़ा सामान भी कंडक्टर ने गाड़ी में पटक दिया और उसको तोलना चाहा, बीच में गाड़ी एक जगह बदली, केवल कुली को चुकाने लायक उस देश का पैसा पास में था। गाड़ी मामूली टाइम से ५ मिनट पीछे रवाना हुई, सन्देह हुआ तो टाइम-टेबुल से स्टेशनों का मिलान किया तो पांचवां स्टेशन कुछ और सा नज़र आया कोई बोली में समझे नहीं। सैकड़ों आदमियों ने इशारे में कुछ कहा, स्टेशन वालों से पूछा, एक महिला जो पास ही में बैठी थी उसने इतना सा कहा कि ग़लत लाइन पर हो। गूंगे बहरों की तरह सामान उतारा, जहां से आया था उधर को ही एक गाड़ी जाती थी उसमें सामान वापिस कुली ने पटक दिया। एक अंग्रेज़ी जानने वाला साहब बैठा था उससे घड़न्त करते २ तै किया कि 'ऐक्सलेबां' (Aix Les Bans), जो रास्ते में पड़ता है वहां उतरें और अवश्य देखें। दूसरी ट्रेन में बैठें और रात को टूरिन नगर में सोवें, चुनाचे ऐसा ही किया।

ऐक्सलेबाँ (Aix Les Bans)—यह क़सबा ११ बजे आया, पाउंड भुनाया, ८६ (नवासी) फ्रेंक बटे, साथी दूसरी जगह जाता था

उसको उसके दाम ३ फ्रेंक दे दिये। एक कम्पनी में जाकर पता चलाया तो सैर की मोटर, जिससे मुझको जाना चाहिये था, रवाने होने वाली ही थी। मैं भी रवाना हुआ। २॥ या ३ मील तक सड़क के दोनों तरफ़ के पेड़ों को ऐसा काट छांट कर बना दिया कि टहनियों से महरावदार छाया हो गई और वृक्षों के धड़ खम्भे से नज़र आते थे, शोभा निराली ही थी। उदयपुर मेवाड़ राजपूताना में आध मील तक एक स्थान ऐसा है, परन्तु ऐसी शोभा नहीं। सड़क खतम हुई, वृक्षों के बीच में लालटेनें ऐसी लगी हुई थीं मानो हरी छत में फ़ानूस लटक रहे हों और बरांडे के सफ़ेद खम्भे हों। सड़क खतम होने पर एक मैदान पड़ा फिर एक लम्बी चौड़ी झील आई। मैदान के चारों तरफ़ रेस्टोरेंट ढाबे, चाय, व शराब पीने के लिए कुर्सियां काफी दूर तक और झील में छोटे २ जहाज़ व सैर के ले जाने के लिये छोटी २ किश्तियां भी थीं। हम भी मोटर से उतरे, एक रेस्टोरेंट में जाकर दूध फल वग़ैरह मंगवाये, तमाशा देखा। वही अलमस्ती, मेमें और साहब धूप में, कोई वृक्ष के नीचे, कोई तालाब में, झील में किलोलें कर रहे हैं। झील के चारों तरफ़ पहाड़ थे। वापिस क़सबे में आये और चारों तरफ़ घूम कर मालिनों की दूकानों पर गये, सचमुच ही बड़े सुन्दर फूल मालिनें बेच रही थीं। बगीचे की काट छांट देखी यहां के माली होशियार हैं। पंडे टामस कुक की दुकान पर गये तो कहा कि कुली का नम्बर बताओ तो आपके लिये हरजाने का बन्दोबस्त करें। मैंने उत्तर दिया कुली का नम्बर व स्टेशन का नाम भी क्यों याद रखने लगा था ३ मिनट में बेचारे ने मुझको व सामान को ला पटका सो क्या कम था।

ऐक्सलेबाँ से जिनोवा (Aix Les Bans to Geneva)—यह स्वीज़रलैण्ड और फ्रांस की सीमा है, खैर वहां की तोल

तस्वीरें ले क्लोकरूम से अपने सामान को लेकर रेल में बैठकर रवाना हुए तो ठेठ रास्ते तक पहाड़ों का दृश्य ऐसा सुन्दर और मनोहर था कि मेरी क़लम में शक्ति नहीं है कि उनका वर्णन करूं। मानो ईश्वर ने सब सुन्दर रचना यहां ही की है। आठ २ नौ २ पहाड़ों के पुड़त दोतरफ़ा दीखते थे। शिखर पर कहीं २ बर्फ और कहीं २ पानी के झरने ऐसे वेग से वह रहे थे कि बड़ा ही शब्द होता था, कहीं इन झरनों को मनुष्य की विद्या ने ऐसा उपयोगी बना लिया कि बिजली पैदा कर डाली और उसकी शक्ति से अनेक काम हो रहे हैं। कहीं रेल के साथ एक तरफ़ सड़क और एक तरफ़ नदी थी। बस देखते २ जी नहीं थका और रात हो गई। दिन में गर्मी इतनी ज़ोर की थी कि सब कपड़े बुरे लगे। अब ठण्ढ मालूम पड़ी कपड़े पहिने, दरवाज़े बन्द किये। यह फ्रांस देश का इटैली से लगा हुआ भाग है। एक तरफ़ स्वीज़रलैण्ड देश भी जा लगा है। ईश्वर की महिमा अपार थी। टूरिन पहुँचा सामान को क्लोकरूम में रख दिया और फर्स्ट क्लास वेटिंगरूम में इरैंडी चद्दर ओढ़कर सोगया। एक बम्बई के पारसी महाशय जो उस गाड़ी में सफर कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आपको गांधी इंडिया का बड़ा आदमी समझकर यहां के कई भले आदमी आपसे मिलने और फोटो लेने आये थे, लेकिन मैंने आपको नहीं जगाने दिया।

जिनोवा (इटैली)

ता० २४-८-३२

चिरंजीविनि कमले! आशीः,

जयपुर राज्य से छुट्टी न मिलने से यात्रा में भागदौड़—तुमको पत्र दिया था उसमें लिख दिया था कि आज २॥ बजे की

डाक में कोई पत्र नहीं मिला परन्तु टामस कुक के यहां पत्र नहीं आये जहाज़ के कम्पनी के यहां आये उसमें दो लन्दन के और एक तुम्हारा निकला, इससे यह पत्र दुवारा लिखना पड़ता है कि तुमको चिन्ता न हो, अब मेरा पत्र तुमको जहाज़ सें मिले तो मिले। अजमेर पूजनीया जीजी बाई को लिख देना कि पत्र आपका मिला आपको मेरा पत्र विलम्ब से मिला आपका उपालम्भ ठीक है, लेकिन मैं आपको आकाश-मार्ग से चिट्ठी भेजता तो जल्दी मिलती, भूल हुई क्षमा करें। मैंने रूस, टर्की छोड़कर और सब यूरुप देखा, १ दिन की जगह १ घंटा ठहरा, समय की संकीर्णता भाग्य में लिखी है। छुट्टी के अन्दर २ पहुंचना चाहता हूं कि अपने सिर पर उपालम्भ न रह जावे।

यूरुप के तीन राष्ट्र निर्माण करने वाले महापुरुष।

यूरुप भ्रमण में मुझको तीन राष्ट्र निर्माण करने वालों की जानकारी हुई:—

(१) मिस्टर टॉमस गैरिक मैसेरिक—प्रेसीडेन्ट जेकोस्लोवेकिया।

(२) सिगनीयर मसोलिनी—डिक्टेटर इटैली।

(३) मिस्टर डी० वैलेरा—प्रेसीडेण्ट आयर्लैंण्ड फ्री स्टेट।

मि० टॉमस गैरिक के बारे में हम ऊपर लिख चुके हैं।

सिग० मसोलिनी का भी काफी हाल लिख चुके हैं। लेकिन जो फैसिस्ट सेना के १० वें वार्षिकोत्सव पर १० आज्ञायें निकालीं उनका हाल नीचे अङ्कित करना आवश्यकीय समझते हैं और वे ये हैं:—

1. You must know that the Fascist and particularly the militiaman, must not believe in perpetual peace.
2. Days of imprisonment are always deserved.
3. One serves the Fatherland also mounting guard over a tin of petrol.
4. A comrade must be a brother, first, because he lives with you and secondly because he thinks as you do.
5. The rifle and the ammunition holder, &c. were entrusted to you, not to spoil them in times of idleness, but in order to preserve them for war.
6. Never say "Never mind, the Government pays," because it is you who pay and the Government is the one you have chosen and for which you wear uniform
7. Discipline is the sun of the armies. Without it there are no soldiers, but only confusion and defeat.
8. Mussolini is always right.
9. The volunteer has no excuse, when he disobeys.
10. One thing must be dear to you above all the life of the Duce.

१—तुमको यह जान लेना चाहिये कि फैसिस्ट विशेषकर सैनिक इस बात का विश्वास रक्खें कि निरन्तर शान्ति नहीं रह सकती।

२—वन्दीगृह के दिन ठीक नियत किये गये हैं।

३—छोटीसी चीज़ की रक्षा करना भी देश के प्रति सेवा है।

४—साथी ही भाई है, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और तुम्हारे जैसे विचार करता है।

५—जा वन्दूक गोली वारूद तुमको दी गई है उसको निठलाई में व्यर्थ गमाने को नहीं है किन्तु लड़ाई के दिनों में सञ्चय करने के लिये है।

६—कभी यह मत कहो कि "कुछ परवाह नहीं गवर्नमेंट वेतन देती है" कारण तुम्हीं अपना वेतन देने वाले हो। गवर्नमेंट को तो तुमने पसन्द किया है और तुम उसकी वर्दी पहिनते हो।

७—आज्ञापालन ही सेनाओं का सूर्य है। उसके विना योद्धा नहीं हो सकते, उसके विना केवल अन्धकार और पराजय है।

८—मसोलिनी हमेशे सतपथ पर है।

९—स्वयंसेवक यदि अनाज्ञाकारी है तो वह कुछ नहीं के वरावर है।

१०—एक वस्तु तुमको सब से अधिक प्रिय होनी चाहिये याने डयूक के प्राण।

मिस्टर डी० वेलेरा के विषय में भी हम यथास्थान लिख चुके हैं, लेकिन तारीख १८-७-३३ की वहस जिसको हमने ६॥ घण्टे खास सिनेट-हाउस में ही बैठ कर सुनी उसका कुछ वर्णन किये विना नहीं रह सकते। वहस का विषय था कि आयर-

लैएड इङ्गलैएड को कुछ वार्षिक कर दिया करता था आयलैंएड के प्रेसीडेन्ट मि० डी वैलेरा ने इस वार्षिक कर के देने को खरखसे में डाल दिया जिस पर इङ्गलैएड का पार्लियामेंट नाराज़ हुआ और आय लैंएड से विक्रयार्थ आने वाली वस्तुओं पर कर लगा दिया। आयलैंएड ने भी मि० डी वैलेरा की अध्यक्षता में प्रतिकार यही सोचा कि जो इङ्गलैएड से विक्रयार्थ वस्तुवें आवें उन पर कर लगा दिया जावे। इस पर वहस करते हुए कई सिनेटर (मिलरोय Milroy, डोगलास Douglas, कोनीहन Counihan इत्यादिक) ने प्रेसीडेन्ट डी वैलेरा का कटु शब्दों से तिरस्कार किया और फटकारें लगाईं। एकने तो यह कहा कि जब तक यह प्रेसीडेन्ट रहेगा तब तक हमारे देश का उद्धार नहीं होगा। दूसरे ने कहा यह प्रेसीडेन्ट देश का सर्वनाश करने को हुआ है। मिस ब्राऊन महिला सिनेटर ने कहा कि गवर्नमेंट हमको धोखे में फंसा रही है। लेकिन मिस्टर डी वैलेरा ने शांति-पूर्वक सब सुना और यथोचित उत्तर एक ओजस्विनी भाषा में दिया जो दुनियां के ता० १६ जुलाई के सब ही समाचारपत्रों में निकल चुका है। उसने पूर्ण रूप से श्रोताओं पर अङ्कित कर दिया कि कर का बढ़ाना और प्रेसीडेन्ट पर विश्वास करके कर बढ़ाने की विधि और शक्ति से उसको सुसज्जित करना ही देश को बचाने का एकमात्र विधान है। एक दो वाक्य जो डी वैलेरा महाशय ने उत्तर देते हुए कहे उनका हम उल्लेख करते हैं कि जिससे उनकी दूरदर्शिता और देश की हित-कामना पूर्णरूप से प्रगट होती है।

"One thing that was not going to happen as a result of this," said Mr. De Valera, "Was that more people would be hungry. There would be more

food in the country, and it would be the business of the Executive Council to see that mouths, that had been hungry would be fed, that children who had to do without milk, would get milk, and that people, who had not been able to get butter would get butter with their bread."

A senator interjected with the remark, "and those who own it will get nothing."

Mr. De Valera—"Those who own it will get more than they have been getting for some time past, when they have been selling under the cost of production. We will be inclined to keep imports down as low as possible."

व्याख्यान देते हुए मिस्टर डी वैलेरा ने कहा—ऐसी योजना करने से एक बात तो निश्चित है कि देश के आदमी अब भूखे नहीं मरेंगे बाहिर न जाकर खाद्य पदार्थ यहां अधिक रहेंगे और एग्जीक्यूटिव कौन्सिल का कर्तव्य होगा कि यह देखे कि जो भूखे रहते थे उनको भोजन धपाऊ मिले, बच्चे जिनको दूध नहीं मिलता था दूध मिले और देश के उन आदमियों को जिनको रोटी के साथ मक्खन नहीं मिलता था मक्खन मिले। इतने में एक सिनेटर बीच में बोल पड़ा और पूछा कि जिनकी ये वस्तुएं हैं उनको क्या मिलेगा तो डी वैलेरा महाशय ने झट उत्तर दिया कि इंगलैण्ड से जो (फालतू) चीज़ें आती हैं बहुत कम दरामद होंगी और खाद्य पदार्थ के स्वामियों को इनके उत्पन्न करने में कम लागत लगेगी इस हेतु लाभ ही होवेगा।

पस उपरोक्त वृत्तान्त से पाया जावेगा कि अपने २ देश के ये तीनों ही सच्चे पुत्र हैं कि जिन्होंने अंधकार में से अपने २ अलग राष्ट्र निर्माण किये। तीनों ही की उत्पत्ति एक साधारण घराने से हुई। तीनों ही ने असह्य कष्ट सहे। तीनों ही को विकराल आपत्तियों एवं कारागार, देश निकाले आदि का सामना करना पड़ा है। तीनों ही में आत्मविश्वास परि-पूर्ण से भरा हुआ है। तीनों ही त्याग की मूर्ति हैं।

मुझ जैसे अल्पज्ञ को तो मसोलिनी महाशय की उपरोक्त दश आज्ञाएं समझ ही में नहीं आसकतीं और आज्ञा नं० ८ तो पढ़-कर मैं चकित होरहा हूँ कि हरेक सैनिक के भाव यह कैसे हो सकते हैं कि मसोलिनी महाशय ईश्वर समान है और जो कुछ वे करें या कहें सर्वदा सब सत्य है। इसही प्रकार डी वैलेरा महाशय की सहिष्णुता एवं साहस अलौकिक है। जब मैं भारत-वर्ष की नेशनल कांग्रेस की तुलना करता हूं तो मुझे स्मरण होता है कि सूरत के अधिवेशन में कांग्रेस नेता कुर्सियों से लड़े थे और उसके पश्चात् सब दलों का सम्मिलित अधिवेशन अब तक नहीं हुआ।

मिस्टर टॉमस गैरिक मैसेरिक महाशय की सफलता तो यहां तक है कि अनमेल और बेमेल जातियों में ऐक्यभाव उत्पन्न कर सिंहराष्ट्रों के दंष्ट्रों में से परगनों को निकाल कर एक वृहत् राज्य अलग ही स्थापन कर दिया और अब वे वहां सर्वत्र पिता के संबोधन से पुकारे जा रहे हैं।

मैं मेरे देशवासियों का ध्यान आकर्षित करता हूं कि यदि देश को स्वतन्त्र बनाना है तो इन तीनों ही राष्ट्रनिर्माण करने वालों के चरित्र को बारम्बार पढ़ें और शिक्षा लें।

यात्रा के अनुभव से मेरे विचारों पर असर—ये देश बड़े खर्चीले हैं, जितनी भाग दौड़ की जाती है करता हूं। खूब यात्रा की है, खूब अनुभव हुआ है, ईश्वर की लीला भी खूब देखी। मनुष्य के चरित्र भी खूब देखे। बड़े और छोटे आदमियों से भी खूब मिला। अपने भरोसे पर भी खूब रहा। कष्ट भी पाए और फलाहार, दूध आहार से भी दिन निकाले तथापि प्रतिदिन बड़ा आनन्द रहा। सब हाल पत्रियों में तारीखवार है आपको पढ़ने से बड़े लाभ होंगे। अधिकतर राष्ट्रीय विचार और राजप्रबन्ध पर मैंने बहुत दृष्टि डाली है। यह अनुभव इन देशों में आये बिना और कठिन परिश्रम व भाग दौड़ किये बिना कभी नहीं हो सकता था। शक्ति भी खूब बढ़ी है। इस समय संसार में जो अग्रगण्य वीर नेता समझे जाते हैं उनमें से जिन से मिला ऊपर लिख चुका हूं। इन देशों की सामाजिक और धार्मिक स्थिति पर विचार करते हुए यह सार निकालता हूं कि (१) यह देश [illegible]गरे बिना नहीं रह सकता। (२) ईश्वर और धर्म में जितना आस्तिकता रहेगी देश उतना ही उन्नत होगा। आर्य्यसमाज आदि को विद्या-बल बढ़ाना चाहिये। दूसरों की निन्दा एक दम छोड़ देनी चाहिये। मूर्तिपूजक अब भी आर्य्य-समाजियों व ब्रह्मसमाजियों से अधिक धार्मिक हैं और अच्छे हैं, मन्दिर के पुजारियों को नहीं कहता वे तो जनता के मज़दूर हैं और एक तरह का पेशा करते हैं। दूसरे की निन्दा करने का जो माद्दा आर्य्य-समाज में घुसा है वह निन्दनीय है। अपने सुचरित्रों से दूसरों पर असर डालना चाहिये। जब तक हिन्दू-मात्र में ऐक्यभाव नहीं आवेगा भारत में विदेशियों को दमन करने की शक्ति नहीं आवेगी। आर्यसमाज का प्रायश्चित्त और शुद्धि का प्रचार बहुत प्रशंसनीय है। (३) भारत के देशी राज्य यदि शासनविधान में प्रजा को उत्तरदायित्व

नहीं रक्खेंगे तो उनकी प्रजा में हलचल मच जावेगी जो सबके लिये हानिकारक होगा। ईश्वर सबको सुमति देवे कि जिसमें सर्वत्र सुख व शांति बनी रहे।

अष्टम अध्याय

वापसी

जहाज़ विक्टोरिया
ता० २६-८-३२ ई०

चि० कमले ! आशीः,

नगर जिनोवा (इटैली) और जहाज़ में वापसी—मैंने कल दो पत्र तुमको दिये, पहुँचे होंगे। अब यह पत्र लिखता तो हूं लेकिन मैं ठीक नहीं कह सकता कि क्या मेरे पहिले पहुँचेगा। मैं कुशल-पूर्वक कल १२ बजे जहाज़ में आगया और आनन्द से सवार हुआ। पोर्ट जिनोवा भी बहुत सुन्दर है और जहाज़ की सवारियों के ठहरने, बैठने, उठने और सवार होने के सब ही सुभीते हैं। होटल वाले ऐसे चूसने वाले होते हैं कि कल दावात फूट गई आते समय स्याही ढुल गई ३) रुपया रूमाल, दावात और स्याही के हरजाने के देने पड़े। परसों रात तक का हाल तो आपको लिखा था। कल सवेरे एक गाइड को साथ लेकर शहर में गये, पहिले मालिनों में पहुँचे कहां हिन्दुस्तान की मालिनें और कहां यहां की। कांटे पीतल के, बांट पीतल के। यहां आड़ू आध सेर तक का एक होता है ४ सेर के क़रीब जयपुर लाने के लिये हैं देखो तुम्हारे पास पहुँचते हैं कि क्या, मिर्च भी ली हैं, एक मिर्च डेढ़ पाव से भी ज्यादा की है। देखो वहां तक पहुँचती हैं कि नहीं। शहर देखा सब एक तरह के शहर होते हैं। यहां की गलियां बहुत तंग और ढलाऊ पुराने फैशन की हैं। यहां पर ही गाइड ने चलते २ एक मकान को बतला कर

कहा कि यह कोलम्बस का मकान है। इसी क्रिस्टोफ़र कोलम्बस ने यूरूप वालों के लिये सब से प्रथम सन् १४६२ ई० में अमेरिका तलाश किया था। एक गिर्जा भी देखा काम सोने व रंगत का बहुत सुन्दर था, बादशाह का महल भी देखा जो मामूली था।

मेरा कमरा अकेले के लिये जहाज़ में है और रात को मैं आनन्द से सोया। खाने पीने का बन्दोबस्त अच्छा है। जहाज़ के आदमी सब भले और नेक हैं। स्वर्गीय श्री नौरंगरायजी खेतान के सुपुत्र मिस्टर कालीप्रसादजी खेतान व सर शादीलालजी व कई राजा महाराजा जो साथी यात्री हैं उनकी फरद भेजता हूं। लेकिन परदेश में अपने आपका विश्वास करना चाहिये और किसी के भरोसे पर न रहना चाहिये। आज सवेरे जब नैपिल्स पोर्ट पर पहुँचे तो साथियों से निश्चित किया कि पानी के चश्मे देखने चलेंगे लेकिन सब साथ बिखर गया।

Salphatara सलफाटारा एवं गंधरक का उबलता कुण्ड—अकेला ही गंधरक के चश्में, जिसका नाम साल्फाटारा है, ३० मील दूरी पर देखने गया। एक अंग्रेज़ी बोलने वाले लड़के को साथ लिया, भाग दौड़ कर कहीं रेल, कहीं मोटर, कहीं पाताल रेल, कहीं घोड़ागाड़ी, कहीं पैदल चलकर देखा। ईश्वर की लीला अपार है। पत्थर, कीचड़, पानी, गंधक कुल मिला हुआ ऊपर को फेंका जारहा था। हिम्मत करके पास जाकर एक क्षण के लिये देखा। जिस खेत में चल रहा था हर समय फूटने का डर था। आग तो सब जगह ज़रा खोदने से निकलती थी। २ घण्टे में वापिस आगया और जहाज़ में आकर सबके शामिल हुआ।

स्थान जहाज़ विक्टोरिया
२७ अगस्त से १ सितम्बर तक

चि० कमले ! आशी:,

पोर्ट नैपिल्स और जहाज़—ता० २५ को जहाज़ में बैठने और नैपिल्स में आने तक का हाल सब लिख चुके हैं। नैपिल्स से बजाय २॥ बजे के ६। बजे रवाना हुये। देरी का कारण यह हुआ कि जहाज़ अपना किराया पूरा करने के लिये व्यापारियों का माल, आलू वग़ैरह हज़ारों बक्स लादता रहा, यह भी एक बात देखने की है और यदि तुम बम्बई आई तो दिखाऊंगा कि दो, तीन खण्ड जहाज़ के हमेशा पानी में डूबे रहते हैं और सातवें खण्ड में ऊपर पाँच गज़ लम्बा चौड़ा एक खुला हुआ ढकनदार दरवाज़ा सा रखते हैं किश्तियें माल को भरकर जहाज़ के लग जाती हैं और ऊपर से रस्सों व जंजीरों के ज़रिये कुप्पी के द्वारा माल खींचा जाकर फिर नीचे डाला जाता है। एक बार में ५०ऽ मन के क़रीब खींचा जाता है और ऐसे खींचने के यन्त्र चार पांच ऊपर लगे होते हैं। जिस जहाज़ में मैं चल रहा हूँ माल समेत २०००० बीस हज़ार टन वज़न का जहाज़ है।

नेपिल्स से आगे का कोस्ट याने ज़मीन का किनारा—जहाज़ नेपिल्स से चलकर पोर्ट सय्यद के रास्ते में आया, देखते क्या हैं कि कोसों तक बस्ती चली जारही है, पहाड़ का किनारा था रात होगई। इस जहाज़ विक्टोरिया, जो लायडट्रीस्टीनो इटैली की कम्पनी का है, के द्वारा यात्रा करने से इटैली देश के किनारे २ बहुत चले, सब किनारे पर बहुत ही सघनी बस्ती पाई। दूसरे या तीसरे दिन सवेरे पोर्ट सय्यद पहुँचे।

पोर्ट सय्यद—एक इजिप्ट का शहर तथा वन्दरगाह है, जिसमें नये फैशन की दूकानें हैं, छोटी किश्तियों में सौदागर लोग गलीचे, आसन, जूते, सिगरेट लेकर पहुंचे और वेचने लगे। हम लोग ऊपर, यह लोग समुद्र में, मैंने भड़क को देखकर तीन आसन खरीद लिये। सराफ लोग भी घूम रहे थे जो दो चार हज़ार रुपये की रेज़गी लिये घूमते थे। पोर्ट सय्यद से भी खजूर वग़ैरह वहुतसा माल लदा।

स्वेज कैनाल—पोर्ट सय्यद के आगे वढ़े, जहाज़ जूं की तरह रेंगने लगा कारण यह कि इस जगह से स्वेज तक अफ़रीका और एशिया ये दोनों महाद्वीप मिले हुये हैं। जहाज़ों का आना जाना अफ्रीका के दक्षिण होकर होता था। महीनों यूरुप पहुँचने में लग जाते थे। उस समय के समुद्र के एकमात्र राजा अंग्रेज़ों ने इतने हिस्से ज़मीन को काट कर ८० मील लम्बी ८० गज़ चौड़ी ८० फीट गहरी एक नहर निकाली जिसको स्वेज कैनाल कहते हैं। इसमें वड़ी लागत लगी लेकिन दूसरे राज्य जो इधर जहाज़ लाते हैं उनसे कर लेकर सवके साथ इक़रारनामें करके सब को रास्ता खोल दिया। क्योंकि पानी की गहराई सिर्फ ८० फीट ही है नमालूम कोई चट्टान ऊपर उठ गई हो अथवा और कोई वात पैदा हो जावे इसलिये जहाज़ को १० मील फ़ी घण्टे की रफ्तार से अधिक चलने की इजाज़त नहीं। इतना रूखा देश है कि नंगे पहाड़ी टीले या वालूरेत के टीवे के सिवाय और कुछ नज़र न आया। न कहीं वृक्ष थे न वस्ती, यूरोप के किनारों से विलकुल.उल्टा हिसाव था, स्वेज़ पर आये। स्वेज़ से पोर्ट सय्यद तक नहर की पाल वंधी है जिस पर लहरें टकराती हुई वड़ी सुहावनी मालूम पड़ीं।

लालसागर की गर्मी (Red Sea)—स्वेज़ से निकलते ही लाल सागर (Red Sea) शुरू होता है। पोर्ट सय्यद से पहिले मध्यसागर में मौसम बहुत अच्छा रहा। लालसागर में आते ही छक्के छूट गये और गर्मी के मारे जी घबराने लगा और सब को बड़ी बेचैनी रही, मेरे तो पसीने के कारण से ऐसी हालत हुई कि ५ मिनट में रूमाल तर हो जाया करता था। आज तीसरा दिन है, कमरे में तो गर्मी के डर के मारे घुसने को जी नहीं चाहता इसलिये ऊपर डेक पर ही कुर्सी लगा कर सोता हूं तकिया लगा लेता हूं। अभी एक घण्टे तक फवारे से स्नान किया और फिर भी यही इच्छा रही कि स्नानागार को छोड़ूं ही नहीं। ६ बजे से ७ बजे तक स्नान करता रहा कमरे में घुसते ही फिर वही हालत। लाचार लिखने के कमरे में, जिसमें हवा का अच्छा साधन है, आया और लिख रहा हूं। ज़मीन नज़र आई जो बेरी नामक अरब का शहर था।

ये दिन जहाज़ की यात्रा के लिये, जैसे पहिले लिख चुके हैं, बहुत अच्छे होते हैं क्योंकि खाने, पीने, आराम करने, खेल तमाशा देखने, रात्रि को विशेष कर नाच देखने और नाचने के होते हैं। हर तरह के खेल मौजूद हैं क्योंकि सिवाय शतरंज के मैं और कोई खेल जानता नहीं इसलिये मैं भी एक दो बार शतरंज खेला, यद्यपि १० वर्ष पश्चात् खेला होऊंगा तब भी ध्यान लगा कर खेलने से साथियों को मात दे सका। क्योंकि जहाज़ को कुछ देर नैपिल्स में हो गई थी इसलिये जहाज़ ने रफ़्तार तेज़ की।

आज १ बजे के क़रीब "अदन" पहुंचेंगे यहां से आपकी चिन्ता दूर करने के लिये तार देता हूं कि बम्बई सोमवार को

सवेरे पहुँचेंगे। यह मेरी पत्री शायद आपको मेरे पहुँचने के दिन एक दो घंटा पहिले मिले। चिरंजीविनि ! तुम तो बम्बई आओ ही गी। जहाज़ में सब चीज़ें दिखलाऊंगा, जयनारायण को भी यदि लाओ तो लेती आना। जुगलजी आवे हीं गे। रामगढ़ के सेठ ताराचन्द घनश्यामदास के यहां ठहरने का बन्दोबस्त कराना और सब आनन्द में हैं, बम्बई एक दिन ठहर कर मङ्गलवार की शाम को रवाना होने का विचार है।

डेक पर हौद:—ऐसी गर्मी में ऊपर बने हुए हौदों में बड़ा आराम मिलता है। मैं तो तैरा नहीं कारण मेरे पास तैरने के कपड़े नहीं। तैरने के कपड़ों में मर्द हो अथवा स्त्री एक काछिया और काछिया से मिली हुई पेट छाती तक ढक जावे ऐसी जाकेट होती है। मर्द लुगाई सब एक साथ स्नान करते हैं। हौद क़रीब ८×१२ वर्ग फुट का और गहराई ५ फुट की होती है। १५ या २० आदमी तक घुस जाते हैं गदहामस्ती पानी के साथ होती रहती है। अक्सर जवान होते हैं दो दो चार चार घण्टे तक स्नान होता रहता है। मर्द का ज़रासा भी हिस्सा सिवाय चेहरे और हाथ के नङ्गा नहीं दीखना चाहिये वर्ना सभ्यता के विरुद्ध है लेकिन स्नान के समय यह सब सभ्यता हौद में घुस जाती है और वैसे भी स्त्रियां चाहे जैसे कपड़े पहिनें, कोई आपत्ति नहीं।

यात्रियों में सरकस की स्त्रियां:—न मालूम कौन स्त्रियां, जो युवा हैं और सुन्दर हैं, जांघिया पहिने, जहां मैं कुर्सियां लगा कर सोया था, रात को १० बजे आई और क़रीब २ घण्टे तक कसरत करती रहीं, मैं उनकी कसरत देख कर हैरान

था न जाने किस अभ्यास से शरीर को ऐसा कर लिया कि जैसे चून के लोथड़े को चाहे जैसे मोड़ लेते हैं वैसे अपने शरीर के प्रत्येक अङ्ग को जैसे एक पैर ऊंचा एक पैर नीचा चहरा वीच में, क़रीव ८ फुट की लम्बाई करली, कंधों से अपने हाथ को चाहे जिस तरफ़ घुमा लिया, विना कौड़ी पैसे के मैं भी देखता रहा ।

यूरोप की यात्रा में विशेष कर जहाज़ में दूध फल वग़ैरह के आधार पर रहने से शरीर कुछ कमज़ोर तो हो गया है लेकिन निरोगी रहा है और आनन्द में भी रहा है । मेरे पास पंचांग नहीं लेकिन अजमेर गया तो शायद रक्षा पञ्चमी से दो तीन दिन या चार दिन पीछे पहुँचूंगा, क्या किया जाय मेरे हाथ की वात नहीं, लेकिन कमला को वम्वई आते समय वाईजी से राखी वंधवाने का मौका मिल जावेगा ।

अदन, ता० २-६-३२ ई०

श्रीमती देवीजी ! आनन्दमस्तु ।

कल अदन १॥ वजे पहुँचे । २॥ वजे वाद किश्ती लेकर किनारे पर गये । वहीं जाकर तार दिया, एक आपको एक वम्वई के फर्म ताराचन्द घनश्यामदास को । आप इस समय तार पढ़ रही होंगी और वाई ने वम्वई आने के लिये तूफ़ान मचा रक्खा होगा और खुशी के मारे न समा रही होंगी । परमात्मा ऐसी खुशी हमेशा वनाई रक्खे । लालसागर निकल जाने से गर्मी तो कम हुई किन्तु समुद्र में जहाज़ वहुत डिगमिगाता है । इससे जी मिचलाता है और शुद्ध लिखा भी नहीं जाता । कुछ खाया भी नहीं, पानी भी गिरा, तीन दिन हैं, देखो कैसे निकलते हैं । परमात्मा सव आनन्द करेगा ।

ता० ४-६-३२ ई०

इस समय चार बजे हैं और मैं अपनी केविन में बैठा हूं। आपको ऊपर का पत्र लिखने के बाद जहाज़ डिगमिगाने से तवियत बहुत घबराई। क़ै हुई और दिन भर लेटा रहा तथा कुछ नहीं खाया। कल ता० ३ को थोड़ा सा खाया। सवेरे न खाने पर भी दस्त हुआ। दिन भर लेटा ही रहा और रात को भी ८ बजे ही लेट गया, अब लिख रहा हूं।

अदन—एक मोटर करके देखने गये छोटा इलाका है। पहिले, बम्बई प्रेसीडेंसी की अध्यक्षता में था और अब भारत सरकार के नीचे है। यह जहाज़ का बन्दरगाह है। समुद्र के किनारे पर जहाज़ आकर ठहरते हैं। अरब का हिस्सा है। बुद्धिमान् अंग्रेज़ों ने यहां नमक बनाना शुरू किया जिससे भारत के और ख़ास करके सांभर के नमक के व्यापार को धक्का पहुँचा है। सांभर का नमक यहां के नमक से कई गुणा अच्छा होता है, लेकिन इसमें कुछ रहस्य है जिसके विषय में और कहीं लिखा जायेगा। पानी ३०० फुट से १३०० फुट की गहराई तक के नीचे है। छोटे २ चार क़स्बे हैं। एक कन्टोनमेंट, दूसरा शहर, तीसरा माल उतरने चढ़ने का क़स्बा और चौथा एक अरब का गांव, चारों देखे। १००० एक हज़ार गुजराती हिन्दू और ३० मारवाड़ी व्यापारी व्यापार करते हैं। एक जयपुर का सरावगी भी हलवाईगीरी करता है जो जमनालाल काला जोबनेर के पास ग्राम आष्टी का रहने वाला है। अरबी और सोमाली लोग रहते हैं। अरबी औरतें घाघरा लूगड़ा पहिनती हैं और लूगड़ी के अन्दर जाली का घूंघट रखती हैं। निर्जल और निर्वृक्ष देश है, लेकिन अंग्रेज़ बहादुर ने एक यहां बाग़ लगा दिया है। वृक्ष ऊंचे नहीं हो सकते हैं। माली मऊ के

पास का मुसलमान था। व्यापार में भारत से गल्ला, कपड़ा आता है और अरब से चमड़ा लोबान वगैरह भेजते हैं। अदन से नमक हिन्दुस्तान कलकत्ते को आता है।

एक पहाड़ के नीचे कई कुण्ड भी बुरे हुये निकले। यहां हमने एक वट वृक्ष भी देखा। एक कुँआ भी देखा जिसमें पानी नज़र नहीं आता था कैसे खोदा समझ में नहीं आता। एक छोटे से चरस को चार आदमी खैंच रहे थे। यह भी मालूम हुआ कि अंग्रेज़ बहादुर ने इंजन से समुद्र के खारे पानी को मीठा पानी कर दिया है। समुद्र के पानी को ही अदन में लेगये हैं। कल बम्बई सवेरे ६॥ बजे पहुँचेंगे। आज १ दिन और जहाज़ में है। २४ घण्टे बाद भारतमाता के दर्शन होंगे। ८ बजे जहाज़ से उतरेंगे। चि० कमला मिले ही गी।

स्थान विक्टोरिया जहाज़

ता० ४-६-३२ ई० रात के ८ बजे

सूर्य ६ बजे ही अस्त होने लगा, थोड़ी देर में ५ घण्टे बाद दूर से बम्बई की रोशनी दिखने लगेगी और सवेरे ६ बजे किनारे पर पहुँच जावेंगे। लेकिन ८ बजे से पहिले नहीं उतर सकेंगे। आज का दिन ठीक निकला। यात्रियों में अतिया बेगम नाम की एक स्त्री है। लन्दन के पत्र में जो मैंने लिखा था कि कुछ ज्यादा बोलने वाली भी और गहना पहनने वाली भी स्त्रियां हैं सो इस पर ही लक्ष्य था। बड़ी अमीरनी स्त्री है। लन्दन में ही पैदा हुई और वहां ही उसका पालन पोषण हुआ। न मालूम धन कहां का है। बम्बई में जयपुर से ५०

कारीगरों को बुलाकर मकान की आरायश कराई। जहाज़ भर में सब से अधिक चपला महिला है। उससे एक घण्टा भर बात चीत होती रही। बाद में उसने बहावलपुर रियासत के वज़ीर से मिलाया उससे पता लगा कि सिज सतलज कैनाल में बीकानेर का हिस्सा नहर में १०० हिस्सों में ११ हिस्से हैं। बहावलपुर के ६६ और गवर्नमेंट के २२ लेकिन अभी तो सब निराशा सी हो है और १५ या २० करोड़ का खर्च हो गया, यह बीकानेर की आग्रहपूर्वक चेष्टा का फल है।

जहाज़ में सभाः—फिर पता चला कि आज एक सभा होने वाली है अतिया बेग्रम ने कहा कि आपको भी बोलने का मौक़ा मिलेगा, फिर हमारे साथियों में से एक डाक्टर डी० एन० मैत्रा, जो बड़े अच्छे वक्ता हैं उन्होंने हम दोनों का फोटो लिया। वहां से आ कर भोजन किया इतने में सभा का समय हुआ, सब बड़े आदमी थे यह सभा लार्ड सिंहा (Lord Sinha) की अध्यक्षता में हुई। राजा महाराजा भी थे, कई आदमी बोलने वाले थे, उनमें चौथा मैं भी था, विषय—भारत में सेवा करने की सम्भावना (Possibilities of Services to India) था; सब से जान पहिचान हुई। बस बहुत कुछ सफलता हुई। फिर आकर रुपया परसर के पास से अपना वापिस लिया। मिस्टर कालीप्रसादजी खेतान के लड़के ने मेरी और सर शादीलालजी की शामिल में फोटो उतारी। संसार में इसी तरह मेल जोल से काम चलता है। सवेरे जग कर सामान बांधेंगे।

मैं जहाज़ से उतर गया, ताराचन्द घनश्यामदास के मुनीम जहाज़ पर आये और माला पहिनाई चिरंजीविनी कमला और जुगल-किशोरजी जहाज़ के नीचे मिले। चि० कमला को जहाज़ दिखाया,

आने की गाड़ी का तार फिर दूंगा। लेकिन सुना है कि बड़े साहब नहीं हैं अजमेर ठहरना व्यर्थ समझता हूँ, फिर आ जाऊंगा।

वम्बई से जयपुर को रवानगी:—मनुष्य जितना अधिक अपने घर से दूर होता है उतना ही अधिक प्रेम के बन्धन से कसकर बंध जाता है ठीक वही दशा मेरी थी। यात्रा में जितना दूर मैं होता गया गृहप्रेम उतना ही प्रबल होता गया और वापसी पर घर पहुँचने की आतुरता उतनी ही बढ़ती गई। मित्रों, स्नेहियों और स्वजाति बान्धवों ने वम्बई में बहुत चाहा कि एक वृहत् सभा में मेरा स्वागत हो और मैं अपनी यात्रा का वृत्तान्त सूक्ष्म रूप से सब को प्रकट करूं, परन्तु घर वापिस पहुंचने की उत्कण्ठा इतनी अधिक थी कि मैंने अपने मित्रों को निराश किया और पूर्वपरिचित सर शादीलालजी, जिन्होंने कुल यात्रा में भ्रातृवत वर्ताव किया था और जिनके सौम्य स्वभाव और सज्जनता का मैं कहां तक वर्णन करूं, के साथ ही फ्रान्टियर मेल से ता० ६ सितम्बर को रवाने हो गया। चूंकि हम दोनों ही रामगढ़ शेखावाटी के प्रमुख सज्जनों के ठहरे थे। स्टेशन पर पहुँचाने तो ये सेठ लोग आये ही थे लेकिन उस दिन उनका चित्त रामगढ़ में मुसलमानों के उपद्रव के कारण बहुत ही खिन्न था। वे कहते थे कि जनता में अत्यन्त कम मुसलमानों की संख्या होने पर भी हम लोग बहुत दुखी हैं। अधिकतर अपने देश में रहने से निराश थे। मुझको विशेष रूप से कहा कि जयपुर पहुँच कर श्री दरबार व उनके मन्त्रिमण्डल से उनके कष्टमोचन करने के लिये प्रार्थना करूं।

सर शादीलालजी से विदायगी:—रेल रवाने हुई, चूंकि वर्षा अत्यधिक थी मार्ग में कई जगह रुकना पड़ा और कई

सर शादीलालजी और ग्रंथकार मिस्टर जी. एन. सोमानी, विक्टोरिया जहाज की डेक पर सायंकाल को बातें करते हुए

पृष्ठ ५, १६८

स्थानों में धीरे २ चलना पड़ा। यूरोप के दृश्य तो देखे ही थे, परन्तु मध्यभारत और राजपूताना सीमाप्रान्त के कई स्थल भी अनुपम ही थे। मेघ इतने ज़ोर से वरस रहा था कि घनस्थल सब जल के प्रवाह से आच्छादित था और छोटी पहाड़ियों, टीलों तथा वड़े वृक्षों से जल के टकराने का शब्द अनोखा था जिसका अनुभव यूरोप में कभी नहीं हुआ था। रेल सवाई-माधोपुर में क़रीव २ वजे आ पहुँची और यहां पर सज्जन सर शादीलालजी से जुदाई हुई। उनकी कृपा का मैं वड़ा ही आभारी हूं और कह सकता हूं कि कई अंशों में उनके कारण से मैं अपनी यात्रा को सफल कर सका।

जयपुर में स्वागतः—यहां सवाई माधोपुर में ही हमारे माननीय चीफ़जज्ज रायवहादुर पंडित शीतलाप्रसादजी वाजपेयी के कनिष्ठ पुत्र मि० एस० एस० वाजपेयी से, जो उस ही विक्टोरिया जहाज़ के सहयात्री थे, भेट हुई और यहां ही मिस्टर दामोदरजी कागज़ी, जो कुछ वर्ष पूर्व जवाहरात के कार्य को लेकर यूरोप पधारे थे, मिल गये। यूरोप यात्रा पर अपना २ विचार प्रकट करते रहे और वहुत ही शीघ्र जयपुर स्टेशन पर आ पहुँचे। रेलगाड़ी के स्टेशन पर आते ही मित्रमण्डल, स्वजाति वान्धव, स्नेही, आर्यसमाज के पदाधिकारी, सनातनधर्म सभा के पदाधिकारी व सर्वसाधारण के जन-समूह ने मुझको ऐसे प्रेमपाश में घेर लिया कि मैं मूर्तिवत मुग्ध हो गया और सिवाय अश्रुपात करने के उनकी कृतज्ञता के प्रति एक शब्द भी न कह सका। मुझको मालाओं से आच्छादित कर दिया, केवल थोड़ासा चहरा और पग दिखते थे। २० मिनट के क़रीव प्लेटफार्म पर लग गये। मित्रमण्डल के साथ घर पर पहुँचा, वहां भी स्नेहियों की

भीड़ हो रही थी, चूंकि गाड़ी का ठीक समय ज्ञात नहीं था कई सज्जनों ने तो अनुमान कर लिया कि अजमेर होकर आऊंगा सो अजमेर की तरफ़ से आने वाली गाड़ियों पर पहुँचे और फिर रात्रि के १०॥ वजे तक स्टेशन से वापिस आकर मेरे घर पर पधारने की कृपा करते रहे। रात्रि का अधिक भाग आगत स्वागत में ही गया।

स्वजाति बान्धवों ने दो दिन पश्चात् ही परतानियों के मन्दिर में मेरा स्वागत करने का विज्ञापन दिया। पूज्यवर मुंशी रामप्रतापजी खूटेटा भूत-पूर्व मेम्बर कौन्सिल की अध्यक्षता में वृहत् सभा हुई और स्वागत के पश्चात् वहां पर मुझ से अपनी यात्रा का संक्षिप्त हाल कहने के लिये कहा गया और मुझको अभिनन्दन-पत्र दिया (देखो अपें० नं० २) दो घण्टे तक कुछ हाल कहा जिसको वड़े विश्रान्तचित्त और जिज्ञासुभाव से उपस्थित सज्जनों ने सुना। रात्रि अधिक होगई थी, इसलिये सभा को विसर्जन करना पड़ा।

थोड़े दिन पश्चात् ही मेरी ज्येष्ठा भगिनी ने अजमेर में स्वागत करने का विज्ञापन निकाला, एक वृहत् यज्ञ किया। उपस्थिति पांच सौ सज्जनों की थी। अपने अनुज के सकुशल वापिस आने पर सबको मिठाई बांटी तथा यात्रा का वृत्तान्त सुना और यही मौक़ा ब्यावर के महेश्वरी वन्धुओं ने भी लिया।

जिस प्रकार मेरे देश ने मुझ को अपनाया और मेरे सकुशल यात्रा से वापिस आने पर हर्ष प्रकट किया उसकी कृतज्ञता को शब्दों में प्रकट करने के लिये मैं विलकुल असमर्थ हूं और उस ही दिन अपने जीवन को सफल समझूंगा जिस दिन देश-सेवा का कोई कार्य्य विशेष कर सकूंगा। ईश्वर वल और धैर्य दे।

इत्योम्।

ॐ

अपेण्डिक्स नं० १

मैंने जिस समय यात्रा की उस समय भिन्न २ राज्यों में वहां के सिक्कों का भारतवर्ष के रुपये में इस प्रकार भाव थाः—

नाम राज्य	नाम सिक्का	रुपया	आ०	पा०
इंगलैण्ड	१ पाउंड £	१३	७	०
इजिप्ट	१ प्यार Pyre	०	२	६
इटैली	१ लीरा Lire	०	३	२
जर्मनी	१ मार्क Mark	०	१४	१॥
फ्रांस	१ फ्रैंक Franc	०	२	३
जैकोस्लोवेकिया	१ क्राउन Crown	०	५	३
अमेरिका	१ डालर Dollar	३	१४	०

अपैण्डिक्स नं० २

श्री० मान्यवर महोदय सेठ श्री गणेशनारायणजी सोमानी की सेवा में

अभिनन्दन-पत्र

हम माहेश्वरी समाज की ओर से सब बाल, वृद्ध अथवा नवयुवक आज आपका ऊर्ध्वबाहु व प्रेमपूर्वक उच्च स्वर से स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं। आपने बड़े उत्साह, साहस अथवा परिश्रम से अनेक पश्चिमी देशों का बहुतसे कष्ट और कठिनाइयों को सहन करते हुए भ्रमण करके यहां पदार्पण किया है। इसको प्रकट करने में हमको किंचित् भी संकोच नहीं है कि आपका अनुभव वैसे तो पहिले ही से उच्चकोटि का था, इसके अतिरिक्त इस यात्रा से हमको पूर्ण विश्वास है कि वह शतशः बढ़ गया होगा। आप हमारी जाति में न केवल प्रमुख और अग्रगण्य विद्वान् ही हैं किन्तु हमारी जाति में सब से अधिक जातिप्रेमी, विद्याप्रेमी और देशप्रेमी भी हैं। आप में सुचरित्रादि के सद्गुण इतने अधिक विद्यमान हैं कि उनका वर्णन करना हमारी शक्ति से बाहर है। आपकी समाज-सुधार और देश की सेवा की लग्न तो बहुत समय से प्रसिद्ध है ही और हमारी मातृभूमि जयपुर की हित-कामना तो आपके हृदय में इतनी गहन और गुथी हुई है कि आप उसके सम्पादन करने में अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु का भी त्याग करने में तनिक भी संकोच नहीं करते, क्योंकि आप माहेश्वरी जाति के गौरवास्पद हैं और आपकी यात्रा एक अपने ढंग की निराली ही है इसलिये हम सब लोग मिलकर आप से प्रार्थना करते हैं कि आप अपनी यात्रा का पूर्ण वृत्तान्त हमको कथन करने की कृपा करें जिसमें हम भी आपके इस अनुभव का लाभ उठा सकें।

आपका प्रेमी— **श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर**

शुद्धा-शुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	१	म	मैं
६	५	पोल एम०	पोल, एम०
६	६	ज़ारदार	ज़ोरदार
६	२४	जा	जो
१०	२	थाड़ी	थोड़ी
१०	३	दोनां	दोनों
११	७	ज़ार	ज़ोर
१२	२	विक्टारिया	विक्टोरिया
१५	१२	भा	भी
१६	२	स्टुअड	स्टुअर्ड
२६	१५	(एक लाख) लगे	(एक लाख) पत्थर लगे
३०	१३	खच	खर्च
३५.	४	अपोला	अपोलो
३५	६	मूतियें	मूर्तियें
३६	१४	रक्खा	रक्खी
४३	१	कंसे	कैसे
४४	४	राए	राष्ट्र
४५	१०	आइं	आड़्
४५	१८	होता	होती
५४	१०	छाना, वड़ा	छाना वड़ा,

शुद्धा-शुद्ध पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६०	९	सिफारिशा	सिफारिशी
६३	४	(Major Milnar)	(Major Milner)
६४	१३	इश्तिहारवाज़ा	इश्तिहारवाज़ी
६८	४	जा	जो
६८	१७	हाती	होती
७१	३	दक्षिण का	दक्षिण की
७२	२३	हम तीनां	हम तीनों
७७	१०	सहपाठा	सहपाठी
८०	१२	मुक्के का	मुक्के की
८२	१	जा	जो
८२	१२	लाहे	लोहे
९९	२१	पडनवरा	पडिनवरा
१०६	२५	सूतियां	मूर्तियां
१११	३	गवर्नमेंट ड़ी	गवर्नमेंट वड़ी
१३३	२३	fonds	fond
१७६	१८	जिनीवा	जिनोवा